सत्यमेव जयते

ज्ञानवार्ता

तृतीय संस्करण | अंक : 3 | वर्ष : 2012

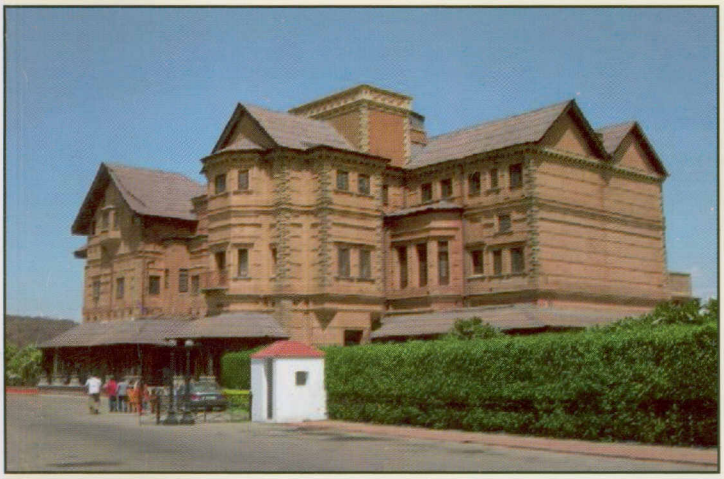

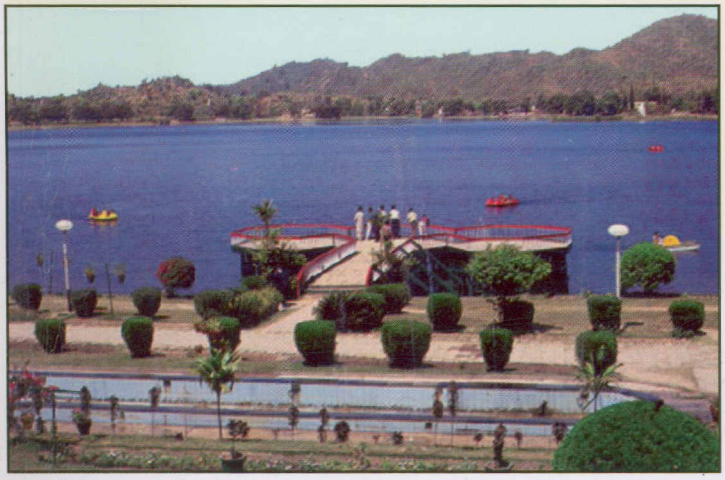

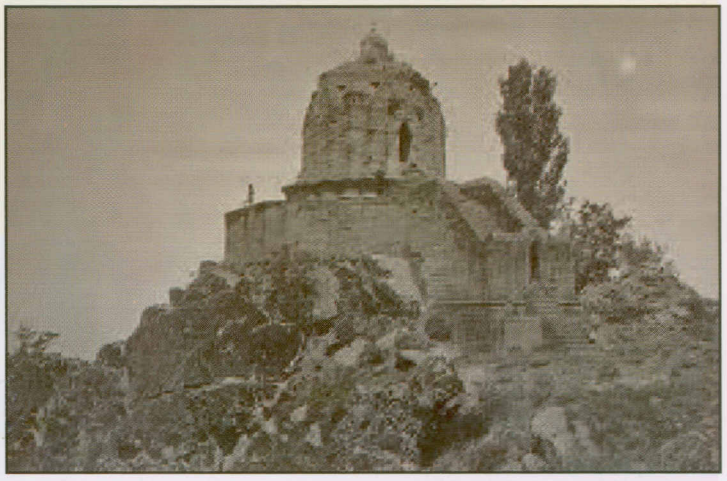

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

जम्मू व कश्मीर एवं अन्य राज्यों के किसानों के लिए आइ.आइ.आइ.एम., जम्मू में औषधि एवं सुगन्धित पौधा की खेत पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में भारत के स्वास्थ्य मंत्री जनाब गुलाम नवी आज़ाद का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. राम विश्वकर्मा।

संधीय स्वास्थ्य मंत्री जनाब गुलाम नवी आज़ाद के साथ विचार-विमर्श करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. राम विश्वकर्मा।

संस्थान में वर्ष 2010-2011 के राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए पुरस्कार एवं शील्ड प्राप्त करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. राम विश्वकर्मा।

भारतीय राजभाषा विकास संस्थान, देहरादून द्वारा 'राजभाषा शिल्पी सम्मान हिन्दी सप्ताह, 2012 के दौरान मुख्य अतिथि प्रो. नीलम सराफ, डी अकादमिक एवं शैक्षणिक कार्य जम्मूविश्वविद्यालय, जम्मू से प्राप्त करते हु संस्थान के वरि. हिन्दी अधिकारी, डॉ. अमर सिंह।

हिन्दी सप्ताह, 2012 के पुरस्कार वितरण समरोह के अवसर पर मुख्य अतिथि से स्मृति-चिन्ह प्राप्त करती हुई श्रीमती रजनी कुमारी ।

संस्थान में हिन्दी सप्ताह, 2012 के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. नी सराफ, डीन, अकादमिक एवं शैक्षणिक कार्य जम्मूविश्वविद्यालय, ज राजभाषा पुरस्कार एवं शील्ड का प्रदर्शन करते हुए संस्थान के वरि वैज्ञानिक, डॉ. आर.के.रैणा एवं डॉ. अमर सिंह, सदस्य-सचिव।

अध्यक्ष की कलम से .....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की गृह पत्रिका ज्ञानवार्ता के तृतीय अंक के प्रकाशन पर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। ज्ञानवार्ता के प्रकाशन में सभी सदस्य कार्यालयों का जो महत्वपूर्ण सहयोग मिला उसके लिए आप सबका आभार सहित धन्यवाद। नराकास के सदस्य कार्यालय जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में प्रशासनिक योगदान किया वे सहयोग के लिए विशेष रूप से प्रशंसा के पात्र हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए आप सबका हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। आपको विदित ही है कि हिन्दी देश की सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है हिन्दी का शासकीय नीतियों के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान है। चाहे भारतीय लोकतंत्र के चुनाव या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिन्ट-मीडिया, मनोरंजन जगत, सूचना प्रौद्योगिकी तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार और लोकप्रियता बढ़ी है। हम सबको यह ज्ञात है कि द्विभाषी अथवा बहुभाषी होने से जहां एक ओर अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है और व्यक्तित्व में निखार आता है। वहीं व्यावसायिक प्रगति और पदोन्नति का रास्ता भी प्रशस्त होता है। अपने देश में जो भाषायी और सांस्कृतिक विविधता मिलती है। इससे सौहार्द पूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को बल मिलता है। हमने अपनी नगर समिति में पत्राचार से जोड़ने के लिए नराकास, जम्मू की आई.डी. ई-मेल तैयार की है, ताकि सामूहिक रूप से पत्राचार की समस्या का समाधान हो। गत मार्च, 2012 में प्रमुख सदस्य कार्यालयों के सौजन्य से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तथा यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये हैं। संसदीय समिति एवं भारत सरकार के इस दिशा में आदेश हैं कि ऐसे कार्यक्रम हर वर्ष समिति के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से आयोजित हों। इसी श्रृंखला में हमने ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रस्ताव दिये है जिसमें नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों में कंप्यूटर के माध्यम से हिन्दी का प्रचार-प्रसार बेहतर ढंग से हो सके। यदि आप सबका सहयोग मिलता रहा तो समिति ऐसे कार्यक्रम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुझे ज्ञात है कि इस वर्ष सभी सदस्य कार्यालयों में हिन्दी दिवस के रूप में हिन्दी प्रयोग एवं विकास के लिए उत्कृष्ट कार्यक्रम आयोजित किये हैं। कई कार्यालयों में संसदीय समिति द्वारा निरीक्षण कार्यक्रम बेहतर ढंग से सम्पन्न हुए है। जम्मू 'ग' क्षेत्र में होते हुए राजभाषा की प्रगति में अच्छे कार्य कर रही है। यदि आप सबका सहयोग रहा तो आशा के अनुकूल और प्रगति संभव होगी। ज्ञानवार्ता के निर्माण में डॉ. अमर सिंह मुख्य, संपादक व श्री राजेश कुमार, हिन्दी टंकक ने श्रमपूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाहन किया है। ये सभी साधुवाद के पात्र हैं। संपादक मंडल के सभी सहयोगी बंधुओं, लेखकों, रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

ज्ञानवार्ता के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

राम विश्वकर्मा

(डॉ. राम विश्वकर्मा)
निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
एवं अध्यक्ष, नराकास, जम्मू

संपादकीय...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की 'ज्ञानवार्ता' का तृतीय-अंक प्रबुद्ध पाठकों के कर-कमलों में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। द्वितीय अंक की अपेक्षा ज्ञानवार्ता के इस अंक में आपको परिवर्तन मिलेगा क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है इस आशय के साथ कि आगामी अंक और अच्छा बनाने के प्रयास किए जायेंगे। भाषा चिन्तन की पौरस्त्य एवं पाश्चात्य चिन्तन धारा में मूल उत्स की चर्चा है। यह मूल उत्स क्या है ?यह आज की प्रवाह शीलता विकासमान भाषायी चिन्तन को आगे ले जाने में सहायता प्रदान करता है। ऋग्वेद में वाक् शब्द का प्रयोग विविध सन्दर्भों में हुआ है। भाषा के क्षेत्र में विश्व में सर्वप्रथम कार्य करने वाले वैदिक ऋषि ही थे। यहाँ वाणी (वाक्-भाषी) परम्परानुमोदित दो भेद किए गये हैं। (1) देवी (2) मांनुषी । देवी- वाणी मूलतः छन्दम् की भाषा है और मानुषी वाणी संस्कृत भाषा। ''तस्माद् ब्राह्मण उभे वाचो वदति दैवीं च मानुषी च।'' (इस कारण वंश ब्राह्मण दोनों प्रकार की वाणियों का प्रयोग करता है दैवी तथा मानुषी का यज्ञ में स्वर सहित वेद मंत्रों का उच्चारण करते समय देवी वाणी का तथा यंज्ञ से इतर लौकिक व्यवहार में मानुषी वाणी का) इन दोनों के संबंध में इस देश में प्रारम्भ से ही जितनी गहनता एवं सूक्ष्मता के साथ चिन्तन किया गया है उसका अभी तक यथेष्ट मूल्याकंन नहीं हो पाया है। भाषा-चिन्तन की उत्कृष्टता का प्रमाण इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ? आर्यो के इस देश में अशुभ कर्म ही नहीं, अपितु अशुद्ध भाषा का प्रयोग एवं चिन्तन अशुभ माना जाता था। यदि वाणी नहीं होती तो धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य तथा साधु-असाधु का ज्ञान नहीं होता। अतएव वाणी की ही उपासना करनी चाहिए। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार प्राचीन प्राकृति से संस्कृति की उत्पत्ति मानते हैं, अर्थात् प्राकृत भाषा के संस्कार के कारण ही यह भाषा संस्कृत कहलायी और हिन्दी एवं देश में अन्य प्रान्तीय भाषाओं का उद्भव यहीं से हुआ।

मुझे गर्व है कि समिति के कार्य-कलापों में समय-समय पर जो दिशा-निर्देश एवं मार्गदर्शन संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, जम्मू परम श्रद्धेय डॉ. राम विश्वकर्मा जी ने दिया उनके प्रति विनम्र भाव से आभार सहित कृतज्ञता व्यक्त करना चाहूँगा। जिनके अथक प्रयास से ज्ञानवार्ता तथा मार्च, 2012 में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी प्रेरणा स्वरूप सम्पन्न किये। उन्होंने मुझे निरन्तर प्रकाशन कार्य एवं समिति से संबंधित अन्य कार्यक्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त नराकास, जम्मू के उन सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया। मै संपादक मंडल में शामिल सभी सहयोगी मित्रों, प्रबुद्ध लेखकों, रचनाकारों का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से ज्ञानवार्ता के इस अंक में अपना सहयोग प्रदान किया। इसके अलावा मेरे विशिष्ट सहयोगी श्री राजेश कुमार जी का भी बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम एवं निष्ठा से ज्ञानवार्ता के तृतीय अंक और समिति के समस्त कार्य-कलापों को कंप्यूटर के माध्यम से टंकण कार्य में मुझे पूर्ण सहयोग किया और पूरी जिम्मेवारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वाहन किया। मै समिति के सभी सदस्य कार्यालय प्रमुखों का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होनें समिति में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंद्ध अपेक्षाओं के अनुरूप समिति को सहयोग प्रदान करते रहें!

प्रस्तुत अंक में लेखकों की उनकी कल्पना शक्ति में उत्साह एवं इच्छाशक्ति में निरन्तर वृद्धि अवश्य हुई होगी। हमारे बहुत से नये लेखक निकट भविष्य में अच्छे लेखक और रचनाकार होंगे। हमें आशा है कि वे अगले अंक के लिए अपने लेख ज्ञानवार्ता में भेजते रहेंगे।

ज्ञानवार्ता के अपेक्षित सहयोग के लिए आभार सहित!

(डॉ. अमर सिंह)
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं
सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू

वर्ष 2010-2011 राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू कार्यालय को देहरादून में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में अध्यक्ष की ओर से प्रो. सुधा पांडेय कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्रथम पुरस्कार शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए डॉ. अमर सिंह, वरि. हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव।

वर्ष 2010-2011 राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू को देहरादून में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में अध्यक्ष की ओर से प्रो. सुधा पांडेय कुलपति, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से प्रथम पुरस्कार शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए डॉ. अमर सिंह, वरि. हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव

यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू व श्रीनगर के आयुक्त, श्री परमिन्दर सिंह सोडी का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा ।

यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए आयकर आयुक्त, जम्मू व श्रीनगर, श्री रवि सारंगल ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
छमाही बैठक में उपस्थित कार्यालय प्रमुख गण।

वर्ष 2010-2011 के लिए राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए अध्यक्ष, डॉ. राम विश्वकर्मा से शील्ड एवं प्रामण-पत्र प्राप्त करते हुए एन.एच.पी.सी. क्षेत्र-I कार्यालय, जम्मू के श्री संजय सरभई, (प्रमुख मानव संसाधन) ।

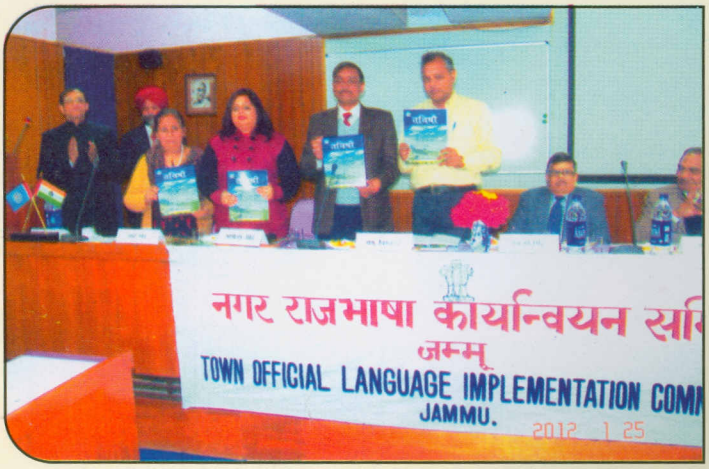

रेडियो कश्मीर जम्मू की राजभाषा गृह पत्रिका 'तविषी' का प्रदर्शन करते हुए नराकास अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा एवं रेडियो कश्मीर के निदेशक, श्री वी.पी. यादव व अन्य।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा तथा सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू व श्रीनगर के आयुक्त, श्री परमिन्दर सिंह सोडी ।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के शुभारम्भ में माँ सरस्वती पर माल्यार्पण करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा ।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा का शॉल से सम्मान करते हुए पावर ग्रिड कारपोरेशन, जम्मू के मुख्य प्रबंधक, श्री आर. के.बंसल ।

यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा ।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा को स्मृति-चिन्ह भेंट करते हुए राष्ट्रीय संत कवि डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी।

वर्ष : 3 अंक : तृतीय छमाही गृह पत्रिका

संरक्षक

डॉ. राम विश्वकर्मा

निदेशक आइ. आइ. आइ. एम. व अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

प्रधान संपादक

डॉ. अमर सिंह

वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

संपादक मंडल

डॉ. आर.के.रैणा श्री अब्दुल रहीम

श्री रवीन्द्र नाज़ श्री जॉनसन गिल

श्री सुभाष चन्द शर्मा श्री बीरेन्द्र सिंह

सहयोग

श्री राजेश कुमार (कंप्यूटर हिन्दी टंकक)

नोट:

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के है। नराकास जम्मू व संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संयोजक संपर्कसूत्र : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

भारतीय समवेत औषध संस्थान,

(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)

नहर मार्ग, जम्मू तवी-180 001 (भारत)

दूरभाष : 0191-2569000-10 फैक्स : 0191-2569333

E-mail : amarsingh@iiim.ac.in

अनुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
हिन्दी की विकास यात्रा और उसका वर्तमान स्वरूप - श्री कृष्ण निर्मल	2	आधुनिक शिक्षा पद्धति में सुधारों की आवश्यकता - श्री राकेश सिंह बिसेन	24
मेरे दोस्त की शादी - रविकुमार शर्मा	4	गीत - सुमन सोलंकी	25
यादें - त्रिलोक चन्द शर्मा	6	मानक हिन्दी ग़जल - वाहिद अली वाहिद	25
संपर्क भाषा हिंदी का देश में स्थान - कैलाश चन्द्र मठपाल	7	हिन्दी की सार्थकता एवं संभावनाएँ - डॉ. राकेश सक्सेना	26
जिरेनियम - एक सौन्दर्यवर्धक पौधे की सफल कृषिकरण - डॉ. कान्ति रेखा	11	छोटी-छोटी बातें भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है?- अशोक कुमार दीक्षित	27
हिन्दी भाषा - अनूप कुमार मौर्य	14	चिंतन - सुभाष चन्द शर्मा	28
अर्थ-अनर्थ लगा मत लेना! - डॉ. मधु चतुर्वेदी	14	भारतीय संस्कृति - उमेश गुप्ता	29
हिन्दी के महान साहित्यकार-उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द - शिवकरण दूबे वेदराही	15	मानवमात्र के प्रति देशभक्ति, भ्रातृभाव से श्रेयस्कर है - कु0 दिव्या	31
उतनी दूर मत ब्याहना बाबा - सुन्दर सहनी	16	भाषा का भौतिक विज्ञान और शैली - डॉ. अमर सिंह	33
गीत - श्रीमती दिव्या सिंह	17	राजभाषा सम्मेलन/यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम	34
मै नदी हूँ, नदी - डॉ. रचना तिवारी	17	कभी गर्मी कभी सर्दी - अभिनव सिंह	35
राजभाषा हिन्दी की स्थिति - श्री सुरेन्द्र पाल सिंह	18	अखिल भारतीय कवि सम्मेलन	36
भाषायी सोच - शकुन्तला रानी	19	कन्या भ्रूण हत्या - श्री कृष्ण निर्मल	37
कल्पवृक्ष - डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी	20	विश्व-शान्ति - डॉ. राजबहादर सिंह	39
हिन्दी ही कंठहार बने - शिवकरण दूबे वेदराही	21	आपके पत्र	40
यूनीकोड का विस्तृत परिचय - राजेन्द्र प्रसाद वर्मा	22	जांच बिन्दु के संबंध में जानकारी	41
भाषाओं में न्यारी - राजेन्द्र कुमार च्रोंगू	23		

धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजात

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजात द्विभाषी (हिन्दी एवं अंग्रेजी) रूप में जारी होने चाहिए। इसमें निम्नलिखित कागजात सम्मिलित है :

सामान्य आदेश*, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां/टिप्पणियां, संविदाएं, करार, लाइसेंस, परमिट, टेंडर के फार्म और नोटिस, संकल्प, नियम, प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें, सरकारी कागजात आदि

General Orders*, Notifications, Press Communiques, Contracts, Agreements, Licenses, Permits, Forms of Tender Notices, Resolutions, Rules, Administrative & Other Repors, Administrative and other report and and Official papers to be laid before a house or houses of Parliament

*राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है:-

*As per Section 3(3) of the Official Languages Act, 1963 the following are convered in general orders:-

(क) ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थायी प्रकार के हों
All orders, decisions or instructions intended for departmental use and which are of standing nature.

(ख) ऐसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के सम्बन्ध में हों या उनके लिए हों ।
All such orders, instructions, letters, Memoranda, Notices, etc. related to or intended for group or groups of Government employees.

(ग) ऐसे सभी परिपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों ।
All circulars whether intended for departmental use or for Government employees.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की गतिविधियाँ

बैठकों का आयोजन नियमित रूप से (जुलाई-दिसम्बर)

- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन सभी सदस्य कार्यालयों में बेहतर ढंग से हो रहा है। पत्राचार की वृद्धि सुनिश्चित की गई है, जबकि हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में देने का क्रम जारी है।
- भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जम्मू में हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। जम्मू स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों/निगमों के कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, विभिन्न कार्यालयों में लगभग 95 प्रतिशत कर्मचारी प्रशिक्षित हो चुके हैं और जो कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए शेष हैं उन्हें बारी-बारी से प्रशिक्षण के लिए उनके कार्यालयों द्वारा नामित किया जा रहा है।
- राजभाषा विभाग द्वारा जारी नियम/अधिनियम/सूचनाएं सभी सदस्य कार्यालयों को समिति कार्यालय द्वारा समय से प्रेषित किए जाते हैं।
- नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों में कम्प्यूटरों के माध्यम से हिन्दी में कार्य सम्पन्न किए जा रहे हैं। यह राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सदस्य कार्यालयों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- नराकास कार्यालय द्वारा प्रतिवर्ष अन्तर्विभागीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है साथ ही अन्य प्रतियोगिता एवं संयुक्त रूप से भी कार्यक्रमों में सभी कार्यालयों को आमंत्रित किया जाता है।
- सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है और विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से सम्पन्न हो रही है और उनके कार्यवृत्त व तिमाही प्रगति रिपोर्ट नियमानुसार समय से प्राप्त हो रही है।
- समिति के सभी सदस्य कार्यालयों में 2012 के दौरान हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/मास का आयोजन विशेष हर्षोल्लास के साथ किया गया और उनकी रिपोर्ट नियमानुसार समिति कार्यालय को प्राप्त हुई। हिन्दी के प्रगति एवं विकास में बढ़ोत्तरी हुई है।
- यदि सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी समस्याएँ है तो अध्यक्ष महोदय द्वारा उन्हें दूर करने के लिए सभी संभव प्रयास किये जाते है।
- अध्यक्ष नराकास द्वारा सदस्य कार्यालयों को अच्छा कार्य करने पर पुरस्कृत किया जा रहा है साथ ही संबंधित कार्यालय के हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों/हिन्दी सेवियों को अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रशस्ति पत्र (Merit Certificate) प्रदान किए जा रहे है।
- नराकास, जम्मू के सभी कार्यालयों में हिन्दी पुस्तकों के साहित्य की उपलब्धता है, अर्थात् सभी सदस्य कार्यालयों में पुस्तकालयों की विधिवत व्यवस्था की गई।
- संसदीय समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं अन्य सदस्य कार्यालयों में बेहतर ढंग से निरीक्षण कार्य सम्पन्न हो रहे है। वर्ष 2011-2012 में कई सदस्य कार्यालयों के राजभाषा निरीक्षण किये गये है।
- नगर समिति कार्यालय द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की समेकित प्रशासन-शब्दावली सभी सदस्य कार्यालयो को उपलबध करवाई गई है।
- वर्ष 2010-2011 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जम्मू को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से प्रथम पुस्कार प्राप्त हुआ।
- 29-30 मार्च, 2012 को यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम/अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन कुछ सदस्य कार्यालयों के सौजन्य से नराकास, जम्मू के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।
- नराकास, जम्मू की आई.डी. ई-मेल तैयार की गयी और इसके माध्यम से पत्राचार किया जा रहा है।

हिन्दी की विकास यात्रा और उसका वर्तमान स्वरूप

हिन्दी की जननी संस्कृत भाषा है, जिसका काल 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना जाता है। इस युग में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी, क्योंकि इसमें भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप संस्कृत वाडंमय में प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत भाषा के दो रूप मिलते हैं - एक भाषा वैदिक संस्कृत है, जिसके अंतर्गत वेदों की रचना हुई और दूसरी लैकिक (क्लासिकल) संस्कृत है, जिसके अंतर्गत वाल्मीकि, व्यास, अश्वघोष, कालिदास आदि की रचनाएं हैं। इस संस्कृत काल के अंत तक मानक परिनिष्ठता भाषा तो एक थी, किन्तु क्षेत्रीय तीन बोलियां विकसित हो चली थी जिन्हें पश्चिमोत्तरी, मध्यदेशी तथा पूर्वी नाम से अभिहित किया जा सकता है।

संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते-होते 500 ई.पू. के बाद प्रवृत्ति: काफी बदल गयी जिसे 'पालि' की संज्ञा दी गयी है। इसका काल 500 ई.पू. से पहली ईसवीं तक है। बौद्ध ग्रन्थों में 'पालि' का जो रूप मिलता है। वह इस बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप था। इस काल में क्षेत्रीय बोलियों की संख्या चार हो गई थी - पश्चिमोत्तरी, मध्यदेशी पूर्वी और दक्षिणी ।

पहली ईसवीं तक आते-आते यह बोचचाल की भाषा और परिवर्तित हुई तथा पहली ईसवी से 500 ई. तक का इसका रूप 'प्राकृत' नाम से अभिहित किया गया। इस काल में क्षेत्रीय बोलियां कई थी, जिनमें मुख्य शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड, महाराष्ट्री, मागधी और अर्धमागधी थी।

प्राकृतों से ही विभिन्न क्षेत्रीय अपभ्रंशों का विकास हुआ। अपभ्रंश भाषा का काल मोटे तौर पर 500 ई. से 1000 ई. तक है। आज के प्राप्त अपभ्रंश साहित्य में मुख्यत: पश्चिमी और पूर्वी दो ही भाषा रूप मिलते हैं, किन्तु प्राकृत के मुख्यत: पाँच क्षेत्रीय रूपों तथा विभिन्न आर्यभाषाओं के बीच की अपभ्रंश रूप में प्राप्त कड़ी के क्षेत्रीय रूपों की संख्या छ: है। ये है - शौरसेनी, पैशची, ब्रायड, महाराष्ट्री, मागधी और अर्धमागधी। इन्हीं क्षेत्रीय रूपों से विविध आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ। हालांकि अपभ्रंश भाषा का (भाषाओं का) समय 500 ई. से 1000 ई. तक माना जाता है लेकिन 15 वी शताब्दी तक इसमें साहित्य रचना होती रही।

हिन्दी भाषा का साहित्य बहुत प्राचीन है। 1000 ई. के आस-पास से ही हिन्दी भाषा में साहित्य रचा जाने लगा था। यह वह युग था जब अपभ्रंश भाषा का प्रचलन कम होता जा रहा था और उसके स्थान पर हिन्दी क्षेत्र में बोलियों के साहित्य का उदय होने लगा था। हिन्दी साहित्य का प्रारंम्भिक काल आदिकाल है। इस काल में राजस्थान की पुरानी राजस्थानी में वीर गाथाएं लिखी गई, इस बोली को डिंगल कहा जाता है। मध्यवर्ती क्षेत्र में साहित्य रचना के लिए पुरानी वृजभाषा का प्रयोग हो रहा था, जिसे पिंगल कहा जाता है। पूर्व में मिथिला प्रदेश के कवि विद्यापति ने मैथिली भाषा में उच्च स्तरीय काव्य रचना की। इस युग में 'अमीर खुसरो' ने खड़ी बोली में साहित्य रचा ।

आदि काल के बाद भक्तिकाल का युग आता है, जिसे हिन्दी साहित्य के इतिहास का ''स्वर्णयुग'' कहा जाता है। भक्तिकाल भाव एवं भाषा दोनों ही दृष्टिकोणों से विविधतापूर्ण एवं रोचक हैं। भक्तिकाल की दो प्रमुख धारा है - निर्गुण भक्ति धारा एवं सगुण भक्तिधारा । निर्गुण भक्ति धारा को दो भागों ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी और सगुण भक्ति धारा को भी दो भागों में रामभक्ति धारा एवं कृष्ण भक्ति धारा में विभक्त किया गया है।

ज्ञानश्रयी शाखा के कवि अशिक्षित थे। वे जीविकोपार्जन के लिए अन्य प्रकार के कार्य करते थे, जैसे कबीर जुलाहा थे, वे कपड़े बुनते थे, इसलिए इन कवियों में राजस्थानी, ब्रज, खड़ी बोली आदि बोलियों का मिश्रित रूप दिखाई देता है। जिसे सधुक्कड़ी भाषा कहा जाता है। प्रेमाश्रयी शाखा और रामभक्ति शाखा की कई कृतियों में अवधी का प्रयोग मिलता है। तुलसी दास की भाषा के संदर्भ में विद्वानों का मत है कि अवधी को जनभाषा के धरातल से उठाकर उन्होंने ही साहित्यिक रूप प्रदान किया।

अधिकतर कृष्ण भक्ति काव्य ब्रज भाषा में ही लिखा गया है। राजस्थान की प्रमुख कृष्ण भक्त कवयित्री मीरा ने अपने पद मारवाड़ी (राजस्थानी) में लिखे। इस प्रकार भक्ति युग एक व्यापक जन आंदोलन था और इस क्षेत्र के कवियों ने अपनी-अपनी बोली या भाषा में काव्य की स्थापना की।

रीतिकाल काव्य, काव्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण काल है। जहाँ भक्तिकाल में कवियों के उद्‌गार प्रमुख थे, वहीं रीतिकाल में कविता करने की कला को प्रमुखता मिली। विभिन्न छंदों और अलंकारों के प्रयोग से कवियों ने भाषा में अभिव्यक्ति की। रीतिकाल तक आते-आते कवियों ने ब्रजभाषा को काव्य कला के लिए अधिक उपयुक्त समझा और सभी ने उसे परिमार्जित करने में योगदान दिया। (रीतिकाल में कविता करने की कला को प्रमुखता मिली)।

आधुनिक काल में, साहित्य में ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा। 19वीं सदी के आरम्भ में हिन्दी काव्य की भाषा तो ब्रजभाषा बनी रही, लेकिन, गद्‌य साहित्य का लेखन खड़ी बोली में होने लगा। 1920-25 के आस-पास पहुँचकर धीरे-धीरे

हिन्दी कविता खड़ी बोली में रची जाने लगी। खड़ी बोली का विकास ही सही अर्थों में हिन्दी का विकास है।

भारतीय संदर्भ में हिन्दी शब्द का प्रयोग फारस और अरब में प्रारंभ होता है। छठी शताब्दी के कुछ पूर्व से ही ईरान में 'जूबान ए हिन्दी' का प्रयोग भारत की भाषाओं के लिए होता रहा। ईरान के प्रसिद्ध बादशाह नैशेखाँ (531-579 ई.) ने अपने दरबार के प्रमुख विद्वान 'हकीम बजरोया' को पंचतंत्र का अनुवाद कर लाने के लिए भारत भेजा था। भारतवर्ष में भी भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द के प्रयोग का प्रारंभ मुसलमानों द्वारा ही किया गया।

हिन्दी भाषा के विकास की दूसरी धारा बोलचाल और संपर्क भाषा के रूप में उसके विकास को स्पष्ट करती है। मुगलों के प्रारम्भिक समय में फारसी राजभाषा थी। उसी समय खड़ी बोली जनसम्पर्क की भाषा थी, लेकिन इसके अरबी, फारसी से भी शब्द ग्रहण किए। अरबी-फारसी युक्त जनसाधारण की बोली को उर्दू नाम दिया गया। मुगलों के समय से उर्दू भाषा प्रशासनिक प्रयोजनों के अलावा साहित्यिक क्षेत्र में भी गति पाने लगी। इसमें मीर, गालिब, इकबाल आदि श्रेष्ठ शायर (कवि) हुए हैं। रचना की दृष्टि से हिन्दी और उर्दू समान हैं। इस समानता के कारण उर्दू भाषा ने प्रशासनिक भाषा और साहित्यिक भाषा के रूप में जो विकास किया था उस विकास का लाभ सहज ही हिन्दी भाषा को प्राप्त हुआ।

ईस्ट इंडिया कम्पनी का जिन सामतों से पहले सम्पर्क हुआ उनके दरबारों में खड़ी बोली का ही प्रचलन था। अंग्रेज सरकार ने अपनी सुविधाओं के लिए मुद्रण यंत्र स्थापित किए, इससे खड़ी बोली और प्रेस का सम्बन्ध स्थापित हो गया। 19वीं शताब्दी के आरम्भ में खड़ी बोली में अंग्रेजी से अनुदित सामग्री प्रकाश में आने लगी। खड़ी बोली का व्यवस्थित ढंग से विकास कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद आरम्भ हुआ।

सन् 1802 ई. में इस कालेज में भाषा विशेषज्ञ पद पर लल्लू जी लाल और सदल मिश्र की नियुक्ति की गई। इस कालेज के मंच से अनेक पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की गई जिनमें सिंहासन, बत्तीसी, बेताल पचीसी शकुन्तला नाटक आदि उल्लेखनीय है। उसी समय फोर्ट विलियम कॉलेज के बाहर रहकर स्वतंत्र लेखन करने वालों में दो विद्वानों के कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है, उनके नाम है - सदासुख लाल नियाज और इंशा अल्ला खां। इंशा अल्ला खाँ की प्रसिद्ध रचना ''रानी केतकी की कहानी'' की हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रथम कहानी होने का गौरव प्राप्त है।

खड़ी बोली गद्य के विकास में ईसाई पादरियों का योगदान:-

ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य तो अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करना था, इसके लिए उन्होंने अपनी धार्मिक पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी में करवाया।

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में हिन्दी पत्रकारिता के अस्तित्व में आने पर हिन्दी और भी तीव्र गति से विकसित हुई। कलकत्ता निवासी पं. युगल किशोर को हिन्दी पत्रकारिता का जन्मदाता माना गया है। उन्होंने 30 मई, 1826 को ''उदन्त मार्तण्ड'' नामक पत्र प्रकाशित किया। 9 मई, 1829 को ''बंगदूत'', 1844 में शिव प्रसाद सितारे हिन्द का बनारस अखबार 1854 में समाचार सुधावर्षण नामक पत्र प्रकाशित हुआ था। समाचार सुधावर्षण की कुछ पंक्तियाँ उस समय की भाषा को समझने में उपयोगी सिद्ध होंगी।

''यही सत्य हम लोग अपनी आँखों से प्रत्यक्ष महाजनों की कोठियों में देखते है कि उनकी लिखी हुई चिट्ठी दूसरा बाँच सकता नही।''

हिन्दी का जितना व्यवस्थित ढंग से प्रयोग भारतेन्दु युग में हुआ, ऐसा कभी नहीं हुआ। न तो वह भाषा में संस्कृत के तत्सम् शब्दों को समास ठूसँने के पक्ष में थे और न ही अबी-फारसी-अंग्रेजी भाषा के प्रचलित सरल विदेशी शब्दों का हिन्दी में प्रयोग करने में संकोच करते थे। भारतेन्दु जी की टकसाली हिन्दी का नमूना हम निम्नलिखित पंक्तियों में देख सकते है-

''प्यारे रात छोटी है और स्वांग बहुत है। जीना थोड़ा और उत्साह बड़ा। हाय मुहासी मोह में डूबी का कोई ठिकाना नहीं। रात-दिन रोते ही बीतते हैं। कोई बात पूछने वाला नहीं, क्योंकि संसार में जो कोई नहीं देखता सब ऊपर ही की बात देखते है। हाय मै तो अपने - पराये सबसे बुरी बनकर हो गई ''।

बीसवीं शताब्दी में ''सरस्वती'' पत्रिका के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। सरस्वती पत्रिका में छपने के लिए आने वाले लेखों में भाषा, व्याकरण तथा वर्तनी आदि की अनेक अशुद्धियाँ होती थी, द्विवेदी जी इन अशुद्धियों की भाषा को सुधार कर लोगों को सही भाषा लिखने के लिए प्रेरित करते थे। द्विवेदी युग के अंत तक खड़ी बोली में एक स्थिरता आ गयी थी और उसका व्याकरणिक स्वरूप तैयार हो गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमें हिन्दी के तीन रूप मिलते है - संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा और प्रयोजनमूलक (प्रशासनिक) भाषा । स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने तय कर लिया था कि खड़ी बोली हिन्दी स्वतंत्र भारत की राजभाषा होगी। सम्पर्क भाषा और साहित्यिक भाषा के दायित्व का निर्वाह तो हिन्दी भाषा पहले से करती आ रही थी।, लेकिन प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी का नियोजित विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुआ ।

श्री कृष्ण निर्मल
दिल्ली

मेरे दोस्त की शादी

एक मई 1984 की बात है जब मैं अपने एक अन्य मित्र के साथ अपने दोस्त श्याम की शादी में शामिल होने के लिए श्रीनगर से माण्डली पहुँचा और यहां से हमें दोस्त के गांव 'काऊग' पहँचा था जोकि वहां से करीब 6 किलोमीटर की दूरी पहाड़ी पर स्थित था। यह गाँव जम्मू व कश्मीर की तहसील विलावर और जिला कठुआ में पड़ता है। मेरा अन्य मित्र जो इस शादी में शामिल होने के लिए मेरे साथ आया था। नाम था सिन्हा। वैसे तो उसका पूरा नाम प्रदीप कुमार सिन्हा था लेकिन हम उसे सिन्हा के नाम से ही पुकारते थे तथा वह कोलकत्ता का रहने वाला था।

हम सभी श्रीनगर स्थित एक ही कार्यालय में कार्यरत थे। भले ही अलग-अलग जगहों पर रहते थे लेकिन आपस में काफी घनिष्ठता थी और छुट्टियों में रोज घूमने मौज-मस्ती करते थे और अक्सर निनिआलबाद, कशमेशाही, शालीमार एवं हारवल जो की श्रीनगर में प्रमुख नाम है की सैर के लिए निकल जाया करते थे। कभी-कभी गुलमर्ग या पहलगांव घूमने चले जाते थे। इस प्रकार सब के साथ अच्छी दोस्ती बन गई थी। इसी बीच एक दिन आपस में उन्होंने शादी की बात हमें बताई तो हमारी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा। उसकी शादी 2 मई 1984 को तय हुई थी तथा उसने हमें शादी के लिए आमंत्रित किया और जरूर आने के लिए कहा ।

क्योंकि पहले हम कभी भी उसके पास नहीं गये थे। इसलिए पूरी तरह से अन्जान होने के कारण हमने उसके गाँव पहुँचने के लिए उसे थोड़ी बहुत जानकारी देने को कहा! और उसके द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार हमें श्रीनगर से उधमपुर पहुँचना था। वहाँ से फिर बटक अन्य बस से बटल मोड उतरना था तथा बटल से मॉड़ली के लिए रवाना होना था। उसने बताया कि जब हम मॉडली पहुँचोगे तो वहां पर कुछ दुकाने उनके रिश्तेदारों की है तथा उनके साथ ही हम लोग दोस्त थे घर में पहुँच सकते हैं।

इतनी जानकारी हम लोगों के लिए काफी थी तथा मैं और मेरा दोस्त सिन्हा पक्का इरादा कर चुके थे और उसके साथ-साथ वादा भी कर चुके थे कि हम उसकी शादी पर अवश्य पहुँचेंगे। किसी भी कीमत पर हम उस अवसर को हाथ से खोना नहीं चाहते थे।

शाम करीब 10 दिन पहले ही लेकर अपने गांव चला गया था उसकी शादी 2 मई, 1995 को थी तथा हमें 1 मई को ही उसके गांव पहुंचना था, हमने भी वहां जाने की थोड़ी बहुत तैयारी कर ली थी। आखिरकार वह दिन आ ही गया जब 1 मई को हम दोनों श्रीनगर से उधमपुर तथा उधमपुर से बटला मोड़ पहुंचे। वहां हमें करीब सायं 4.00 बजे पहुंचना था लेकिन वहां पहुंचते करीब सायं 4.30 का वक्त होना था इस प्रकार 4.00 बजे मांडली के लिए निकलने वाली बस का इन्तजार करना था। दूसरी बस वहां करीब 5.30 बजे पहुंची तथा उसमें माण्डली जाने के लिए चढ़ गये। वहां से माण्डली का रास्ता करीब दो घण्टे का था और करीब 7.30 बजे शाम को हम दोनों माण्डली पहुंच गये।

जब हम मांडली पहुंचे तो देखा कि मौसम कुछ खराब सा होने लगा था तथा आकाश में बादल से होने शुरू हो गये थे। थोड़ा-थोड़ा पानी आना शुरू होने लगा था। हमारे पास कोई ज्यादा भारी समान नहीं था बल्कि दोनों के पास एक-एक बैग था जिसमें हमारे कपड़े आदि थे अन्य कुछ चीजें थीं। बादलों के आने से करीब अंधेरा सा लगने लगा था। जैसा कि दोस्त ने बताया था कि आप वहां किसी भी दुकानदार से पुछ लेना तो आप को हमारे गांव के बारे में बता देंगे तथा आप उनके साथ भी आ सकते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि जैसे ही हम बस से उतरे तो देखा कि सभी दुकानें बन्द है। वहां दरअसल केवल तीन-चार ही दुकाने थीं और अन्य कोई व्यक्ति भी नजर नहीं आ रहा था।

हम दोनों दुविधा में पड़ गए कि अब क्या करें। उस टाईम ना तो मोबाइल की सुविधा भी नहीं थी जिससे हम अपने दोस्त से सम्पर्क कर पाते और सड़क के किनारे हम दोनों बेचैन खड़े थे कि अब करें तो क्या करें। किसको सम्पर्क करें उस अन्जान जगह पर। हम अभी सोच ही रहे थे कि मेरे दोस्त की नजर एक साइकिल सवार आदमी पर पड़ी। तो उसने मुझे बोला कि शायद उससे कुछ मालूम हो सके। जब वो साईकिल पर सवार आदमी हमारे पास पहुँचा और हमने उसे अपने दोस्त के गांव को जाने का रास्ता पूछा तो उसने बताया कि शायद वो भी वहां का रहने वाला नहीं है। कुछ ही दिन पहले अपने किसी जाने पहचाने वाले से मिलने वहां आया हुआ है। उसकी बात सुनकर हम दोनों की आशा फिर निराशा में बदल गई और सोचने लगे कि अब करे तो क्या करें ? क्योंकि हमारा भी वहां कोई जानकार नहीं था। ऐसे खड़े-खड़े करीब 10-15 मिनट बीत गये। थोड़ी-थोड़ी बूदा-वादी तो चल ही रही थी। इतने में किसी और को पैदल ही सड़क पर आते देखा। क्योंकि थोड़ा अंधेरा सा पड़ने लगा था। जैसे ही वो आदमी पास आया तो हमने उत्सुकता से उससे पूछा भईया क्या आप यहीं के रहने वाले है ? और क्या आप हमें श्याम के गांव का रास्ता बता सकते हैं? जिसके एक भाई का नाम कुलदीप है। क्योंकि यहां तो सभी दुकानदार अपनी दुकाने बन्द करके वापिस लौट चुके हैं। क्योंकि माण्डली का ही रहने वाला था उसने हमें उस सड़क की तरफ इशारा किया जो उसके गांव को जाती थी। उसने कहा कि आप इसी सड़क के रास्ते चले जाओ। हमने उसका धन्यवाद किया और उस सड़क की तरफ चलने लगे। क्योंकि उसका घर वहां से करीब 6 किलोमीटर दूर था तो हमें तो सफ़र तय करने में काफी समय लगना था।

मैं और मेरा दोस्त अभी थोड़ी ही थोड़ी दूर गये होंगे कि बारिश तेज होनी शुरू हो गई। क्योंकि अब अंधेरा पड़ चुका था और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। हम दोनों ने अपने-अपने बैग से टॉर्च और छाते निकाले और छाते को खोल अपने आप को बारिश से

बचाने की कोशिश की तथा छाते के साथ में टॉर्च भी जलाकर रखें ताकि हमें रास्ते का पता चल सके। दोनों घबराये हुए थे क्योंकि सड़क पर पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था और हम दोनों के अलावा कोई भी तीसरा व्यक्ति.नजर नहीं आ रहा था। बारिश चल रही थी पूरी तरह अंधेरा था। सड़क के दोनों तरफ जंगल ही जंगल थे। वहां से रात के वक्त जंगली जानवरों की कभी-कभी आवाजें सुनाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि कभी गीदड़ या ऊगलों की आवाजें सुनाई दे रही हैं और कभी-कभी कुत्तों के भौकने की आवाजें भी आ रही थी। वहां सब सुनकर मेरा दोस्त और मै दोनों ही भयभीत थे लेकिन करें तो क्या करें ? हमें तो अपनी मंजिल तक पहुँचना था। हमारे पास पीछे लौटने का कोई अवसर नही था । इस डरावनी रात में दोनों एक दूसरे को सहारा देते हुए अंधेरी रात में अकेले ही उस सड़क पर एक-एक कदम आगे बढ़ाते जा रहे थे। इन जश्नों में शायद हमें अपना मुख्य उद्देश्य दोस्त की शादी तो लगभग भूल ही गये थे और बस एक ही खयाल मन में था कि किसी न किसी तरह हमें अपनी मंजिल मिले और हम भी अटकी हुई सांसें वापिस और डराये हुए भयभीत दोनों एक दूसरे का हाथ थामे एक-एक कदम आगे बढ़ रहे थे। अभी तक करीब तीन किलोमीटर का रास्ता तय करने पर भी रास्ते में एक भी घर दिखाई नहीं दिया। चलना थोड़ा-थोड़ा मुश्किल होता जा रहा था क्योंकि बारिश लगातार जारी थी छाते भी अब हमें बचाने में नाकाम सिद्ध हो रहे थे। इतना भगवान का शुक्र है कि अभी हमारी टॉर्च भी काम नहीं कर रही थी, क्योंकि सड़क भी कच्ची थी और कहीं-कहीं उस पर कंकर भी डाले हुए थे। चलने में काफी कठिनाई आ रही थी। हमारे पैरों में काफी भारीपन महसूस होने लगा था, चलना मुश्किल हो रहा था।

इसी बीच हमें एक घर से जलती ही मंजर आई तो मैंने अपने दोस्त से कहा चलो वहां से पूछते है कि अभी हमें और कितनी दूर जाना है। शायद कुछ अन्दाज लग पाये। ज्यू ही हम उस घर की तरफ चले तो वहां से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज ने फिर से हमें वहाँ पहुंचने पर सड़क से ही हमने आवाज देकर पूछा, हमने कुलदीप, के घर जाना है, जो कि हमारे दोस्त श्याम का छोटा भाई है। तो अन्दर से आवाज आई। कि अभी दो किलोमीटर और चलना पड़ेगा। इसी रास्ते से आगे चलते जाओ।

बारिश लगातार तेज होती जा रही थी। हमारे कपड़े लगभग बूरी तरह से भींग चुके थे। छांते साथ होने के बावजूद। सड़क के दोनों तरफ पड़ने वाले जंगल से लगातार आने वाली जंगली जानवरों की आवाजें हम दोनों को परेशान कर रही थी हम दोनों मन ही मन भगवान को याद कर प्रार्थना कर रहे थे कि भगवान यह कैसी परीक्षा ? हम तो दोस्त की शादी देखने आये है और हमें कैसी-कैसी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। हमने तो कभी ऐसा सोचा भी नहीं था। बस यही भगवान से प्रार्थना करते हुए ऊपर एक दूसरे को तसल्ली देते हुए हम दोनों सहमें-सहमें अपनी मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे थे। चलना मुश्किल होता जा रहा जूतों के नीचे तीन-तीन चार-चार इंच मिट्टी लग गई थी कि रूकने का नाम नहीं ले रही थी। पानी अंधेरी रात और ऊपर से मूसलाधार वर्षा अकेलापन, अपनापन भीतर ही भीतर हम दोनों के खाऐ जा रही थी। लेकिन भयभीत हाते हुए भी एक दूसरे को हौसला देते जा रहे थे कि फिकर मत करो हम जरूर अपनी मंजिल तक पहुंचेंगे।

उतने में रास्ते में एक और घर आया मिट्टी के बने उस मकान में लाईट जलती ही नजर आई। हम फिर सड़क पर रूके और जोर से आवाज लगाई कोई है। वहां भी कुत्तों के भौंकने की आवाज जिसने एक बार फिर भयभीत कर दिया। इसके साथ ही अन्दर से आवाज आई कहाँ जाना है ? मैंने कहा, गाँव जाना है कुलदीप के घर! उनके बड़े भाई श्याम की शादी है। यह सुनकर उसने कहा, हां-हां ! बस आप नजदीक पहुंच गये है। उनका गांव बस यहां से लगभग एक किलोमीटर रह गया है। भले ही हम अभी अपनी मंजिल से अभी दूर ही थे। लेकिन फिर भी लगा कि अब जल्दी ही शाम के घर पहुंच जायेंगे। रात के करीब 11.00 बज चुके थे। मैंने अपने दोस्त सिन्हा को हौसला देते हुए कहा, ''कि अब चिन्ता की कोई बात नहीं। हम शीघ्र ही श्याम के गांव पहुंच जायेंगे तथा हमने उनका शुक्रिया किया कहने लगे और करीब आधा घंटा और चलें तो हमें लाईट सी नजर आई तो, मैंने दोस्त को कहा शायद लगता है अब उसका गांव आने ही वाला है। जब नजदीक पहुंचे तो देखा कि वहां से दो रास्ते निकलते थे। एक बायी ओर और दूसरा दायी ओर थोड़ी देर अस्मंजस हुआ और नजर पड़ी उस के बायी ओर जाने वाले रास्ते की तरह कुछ मकान आदि नजर आने लगे और कुछ-कुछ घरों में लाईट सी जल रही थी। तो मैंने सिन्हा को बोला जंगल आ गया है। चलो बायीं ओर चलते है। अभी तक हमें उस सड़क पर कोई दूसरा नहीं मिला था और जब हम घरों के पास पहुंचे तो लगभग सभी के घरों में दरवाजें बंद थे क्योंकि 12.00 बजे का समय हो चुका था। किसी के घर का दरवाजा खटखटाने की हिम्मत भी नहीं पड़ रही थी और धीरे-धीरे जब हम थोड़े से घर छोड़ कर आगे बड़े तो देखा एक घर में थोड़ी लाईट जल रही है और थोड़ी चहल-पहल भी नजर आ रही है। तो, मैंने सिन्हा को बोला लगता है यही श्याम का घर है। तो जैस ही हम वहां पहुंचे और उनके घर के सामने दो तीन लोगों से पूछा तथा श्याम का घर यहीं है तो उन्होंने कहा हां, यही है। हम दोनों को देखते ही वो समझ गये कि यह दोनों श्याम के दोस्त है तथा उसके साथ ही काम करते हैं। उन्होंने उसी समय श्याम को बुलाया और हम घर के अन्दर आने के लिए आने को कहा। घर के सभी लोग श्याम के भाई-वहनें गले मिले तथा हमें इतनी रात वहां पहुंचने पर हैरान हो गये। इतने में भी श्याम भी दूसरे कमरे से निकल कर आया और इतनी रात और ऐसी हालत में देख कर हैरान हो गया हमारे बूट आदि मिट्टी से भरे पड़े थे। कपड़े भी पूरी तरह भींग चुके थे। हमें देखते ही श्याम और घर के सभी सदस्य हैरान और दंग रह गये। उसी समय श्याम ने हमें एक कमरे में ठहरने की व्यवस्था और अपने भाई को बोला इनके लिए जल्दी चाय लाओ और फिर खाना भी लाओ।

हमने अपने कपड़े आदि बदले। फिर खाना खाया और फिर उन्होंने हमारे विस्तर लगा दिये और सोने को कहा। श्याम ने कहा, अभी आप काफी थक चुके हैं। आराम करो। बाकी बाते सुबह करेंगे। क्योंकि कल शादी है तथा उधमपुर जाना है। विस्तर पर लेटते ही हम दोनों को कोई पता ही नहीं चला कि कब हमारी आँख लग गई। हम गहरी नींद में सो गये। क्योंकि बारात शाम को निकलनी थी। तो हम सब आराम से उठेंगे। करीब 8.00 बजे। सुबह उठे। हमें बाल्टी मिल गई और फिर हम नहाने के लिए बौली पर चले गये। उसका पानी कोसा-कोसा था। पहाड़ों के बीचों बीच। एक अद्‌भुत ही दृश्य देखने को मिला और कुदरत के जैसे अपने करीब पाया। नहा-धोकर वापिस लौटे। फिर सभी शादी की तैयारी में जुट गये और श्याम को हमने कहा कि अब अपनी-अपनी तैयारी आदि करो।

शाम के करीब तीन बजे बारात दो बसों में भर कर उधमपुर के लिए रवाना हुई। मुझे तो नाचना आदि आता नहीं लेकिन मेरे दोस्त सिन्हा ने बैंड बाजे के साथ खूब ठुमके लगाये। करीब शाम 7.00 बजे बारात ऊधमपुर पहुंची। जाते ही पहले चाय-पानी पिया और फिर डिनर आदि किया। खूब खाया-पिया और शादी का भरपूर आनन्द लिया। बारात खाना खाने के बाद वापिस गांव लौट गई लेकिन मेरा और सिन्हा का वहां से पंजाब निकलने का प्रोग्राम था। हम दोनों रात को श्याम के साथ ही रहे। और शादी की सारी रस्में आदि देखी और सुबह होते ही दोस्त की शादी की बहुत-बहुत मुबारक देकर मैंने और सिन्हा ने पंजाब के लिए बस पकड़ ली और इस तरफ दोस्त की शादी में सम्मिलित होना हम दोनों के लिए एक यादगार बन गया। क्योंकि ना चाहते हुए भी माण्डली से लेकर दोस्त के गांव तक पहुंचने का सफर है हम दोनों के लिए हैरानगी भरा और चुनौती पूर्ण बन गया। है ना ..... ।

''यह कहानी कोई काल्पनिक कहानी नहीं है बल्कि सच व यथार्थ पर आधारित वास्तविक है''

रविकुमार शर्मा
स. लेखा अधिकारी
महालेखाकार कार्यालय, जम्मू

यादें

(भाग-।।)

कभी हंसाती, कभी रूलाती, मन का भ्रम मिटाती यादें।
कभी रूकी सी, कभी दौड़ती सी समय को पीछे छोड़ती यादें।
कुछ अपनी सी, कुछ अजनबी सी, प्यारी-प्यारी यादें।
कभी मचलती, कभी संभलती, भागती-गिरती यादें।

कभी अड़यल, कभी तृष्णा भरी, कभी तृप्त होती यादें।
कभी सेज फूलों की, तो कभी कांटो भरी लगती यादें ।
कभी पुकारती, कभी खोजती, भूली-बिसरी यादें ।
कभी ऐसे ही, कभी वैसे ही अचानक चुभती यादें ।

कभी स्वप्न, कभी वास्तविकता से जुड़ी नज़र आती यादें।
कही दुस्साहस, कही बेबसी का प्रतिबिम्ब दिखाती यादें ।
कही अनकही बातें, कहीं हर बात को उजागर करती यादें ।
कभी आखों में, कभी होठों पर अनायास ही मुस्कुराती यादें ।

हर कदम पर बरबस ही जीवन को महका कर जाती यादें ।
वर्तमान की छाया में भूतकाल का आईना दिखाती यादें ।
हर मोड़ पर जीवन का मार्ग प्रशस्त करती प्रबल यादें ।

कुछ भूली सी, कुछ बिसरी सी जीवन संवारती यादें ।
जीवन मूल्य का अर्थ व तथ्य से अवगत कराती यादें ।
हर क्षण में किए गए कार्य को अर्थपूर्ण बनाती यादें ।
यादों का ऐसा मौसम चला कि विफर उठी नरेश की यादें ।
यादें, यादें, यादें बस यादें रह जाती है बन कर यादें ।

त्रिलोक चन्द शर्मा,
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
दुलहस्ती एनएचपीसी लिमिटेड, (जम्मू-कश्मीर)

संपर्क भाषा हिंदी का देश में स्थान

प्राचीन भारत में संपर्क भाषा के रूप में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था, किन्तु आधुनिक भारत में हिंदी ही संपर्क भाषा जानी जाती है। हिंदी की ग्राह्य क्षमता की सरलता ने ही उसे संपर्क भाषाा का रूप प्रदान किया। डॉ0 जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपने भाषा सर्वेक्षण में ठीक ही लिखा है, "हिंदी का विकास अन्त: भाषा के रूप में हुआ है।" हिंदी बोलने समझने वालों की दृष्टि से यह विश्व की भाषाओं में तीसरे स्थान पर आती है । विश्व में सर्वाधिक संख्या अंग्रेजी बोलने वालों की है और उसके बाद चीनी भाषियों के तद्नन्तर हिंदी भाषा बोलनै वाले ही माने जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का जैसे-जैसे विकास हुआ हिंदी का भी प्रचार-प्रसार बढ़ता गया। वर्तमान समय में विश्व के सभी प्रसिद्धविश्वविद्यालयों मे हिंदी पढ़ाई जाती है। प्राय: सभी भाषाविदों का मत है कि भारत की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है, क्योंकि सभी भारतीय आधुनिक भाषाएँ जैसे बंगला तथा मराठी भाषाओं का उदय साहित्य के रूप में लगभग एक हजार ईसवीं पूर्व से माना जाता है। आधुनिक भारत की प्राय: सभी भाषाओं के साहित्य में लोक जागरण का स्वर प्रमुख है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिक भारतीय भाषाओं का अभ्युदय भी भारतीय संस्कृति के इतिहास की युगान्तकारी घटना है। विद्वानों का मानना है कि दक्षिण भारत की भाषाओं में संस्कृत की शब्दावली को ग्रहण किया गया है।

1803 ईसवीं में कलकता के फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदी तथा उर्दू के अध्यापक जॉन गिल क्राइस्ट ने हिंदी और उर्दू भाषा में गद्य की पुस्तकें तैयार करवाई। आधुनिक हिंदी के आदि गद्य रचयिता लल्लू लाल और सदलमिश्रा इसी विद्यालय के पंडित थे। लल्लू लाल ने खड़ी बोली गद्य में ''प्रेमसागर" और सदल मिश्रा ने ''नासिकेतोपाख्यान" लिखा । इसके दो वर्ष पूर्व मुंशी सदासुखलाल ने ''ज्ञानोपदेश" की एक पुस्तक, उर्दू के कवि इंशा अल्ला खाँ ने "रानी केतकी की कहानी" नामक पुस्तक लिखी। गद्य के विकास में हिंदी आध्यात्मिक संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है, जैसे ईसाई मिशनरियों, ब्रह्म समाज, आर्य समाज तथा नवजागरण का मंत्र फूंकने वाली पत्र पत्रिकाओं ने हिंदी गद्य के विकास में उल्लेखनीय प्रयास किया ।

यह सर्वाधिक आश्चर्य की बात है कि हिंदी के विकास के लिए अहिंदी भाषी विद्वानों का योगदान सर्वाधिक रहा। इन विद्वानों में राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, बंकिमचन्द्र चटर्जी, स्वामी विवेकानन्द, सुब्रह्मण्यम अय्यर कस्तूरी रंगा, बाल गंगाधर तिलक आदि विद्वान् जो कोई भी हिंदी भाषी नहीं थे उन्होंने हिंदी की व्यापकता एवं सरलता के कारण इसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग करने पर बल दिया। वे चाहते थे कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाये और सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी हो। इस बात का समर्थन सर्वाधिक जिन लोगों ने किया उनमें दो नाम विशेष उल्लेखनीय हैं -एक तमिलभाषी जस्टिस कृष्ण स्वामी अय्यर तथा दूसरा बंगलाभाषी शारदाचरण मित्र ।

भाषा किसी की बपौती नहीं होती बल्कि जो लोग इसका सर्वाधिक प्रयोग एवं अध्ययन करते हैं सिर्फ उन्हें ही भाषा के प्रसार एवं प्रचारक के रूप में जाना जाता है, जो निम्न तथ्यों से सिद्ध किया जा सकता है:-

- 1771 में चार्ल्स मिलिकन ने देवानगरी टाईपराईटर का निर्माण किया था। 1830 में हिंदी शब्द कोश का निर्माण सबसे पहले पादरी एम.टी. एड्म ने किया था। 19 वीं सदी में सबसे पहले हिंदी का व्याकरण अंग्रेजी में गिल क्राईस्ट ने बनाया।
- 1836 से 1896 के बीच फैड्रिक पिन कार्ड (Fedric Pin Card) भारतेन्दु हरीश्चन्द्र जी को हिंदी कविता में पत्र लिखते थे।
- सर विलियम जॉर्ज ने मनुस्मृति का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद किया था जो कलकत्ता में तत्कालीन अंग्रेजों के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश थे।
- मैक्समूलर ने हमारे प्रसिद्ध अष्टाध्यायी ग्रंथ (व्याकरण) का अध्ययन करके कहा था कि विश्व के 10,000 वैज्ञानिक 10,000 वर्ष तक भी ऐसा व्याकरण नहीं बना सकते।
- हमारी भाषा ध्वनि प्रधान (Phonetic) वैज्ञानिक भाषा है, जबकि अंग्रेजी के बारे में सरविलियम जोर्ज ने कहा था कि अंग्रेजी अत्यधिक फूहड़, अपूर्ण, अवैज्ञानिक भाषा है। (English is the most disgraceful, imperfect and unscientific language) 1331 में जब अंग्रेजी अस्तित्व में आई थी तब वहाँ के लोर्डस एवं वायसराय इसे अनपढ़ एवं जाहिलों की भाषा मानते थे। इंगलैंड में पहले लैटिन, अंग्रेजी एवं फ्रेंच थी।
- आज भी अंग्रेजी केवल 11 राष्ट्रों की राजकीय भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है जो कि अंग्रेजी हुकुमत के गुलाम रहे हैं। वे मुख्यत: भारत, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड, वेस्टइंडीज, पाकिस्तान, बांगलादेश, आयरलैड, स्काटलैड आदि।
- बेलजियम के भाषाविद् कामलबुल्के द्वारा हिंदी शब्दकोश का निर्माण किया जो कि आज के युग में लोकप्रिय एवं व्यापक कोश के रूप में प्रयुक्त होता है।

1857 ईसवी का स्वतंत्रता संग्राम जो विफल हो गया तो उसे फिर से प्रारंभ करने के लिए हिंदी को ही उस समय राष्ट्रभाषा के रूप में चुना गया, क्योंकि हिंदी बोलने व समझने वालों की संख्या भारत में सर्वाधिक थी। यही कारण है जैसे-जैसे स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला प्रज्ज्वलित होती गई, वैसे-वैसे हिंदी गद्य की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ती गई। साथ ही हिंदी गद्य में कई विधाओं का विकास हुआ। इस प्रकार हिंदी गद्य बहुमुखी प्रतिभा के साथ निरन्तर आगे बढ़ती रही। छापेखाने में भी इस समय हिंदी भाषा का ही प्रयोग होता था। पत्रिकाओं में तथा पुस्तकों में हिंदी का प्रचलन एवं प्रकाशान निरन्तर बढ़ने लगा था। साथ ही पाठकों की संख्या भी आशा से अधिक बढ़ती गई। यह आश्चर्य की बात है कि जब अंग्रेज यहाँ शासक थे तब अंग्रेजी का इतना प्रचलन इस देश में नहीं था जितना अंग्रेजों के चले जाने के बाद बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजों के जाते ही अंग्रेजी द्वारा परोसी गई भरी थाली खाने को मिल गई और सब भूखे लोग उस थाली पर टूट पड़े। आधुनिक युग में राष्ट्रीय स्तर पर प्रांचीन भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना की प्रमुख वाहिका हिंदी ही रही है। भारत की अन्य भाषाओं में भी उच्चकोटि का साहित्य निरन्तर लिखा जा रहा है । इसका अनुवाद हिंदी में अवश्य होता है। यह दायित्व हिंदी पर है कि सभी भारतीय हिंदी के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं का साहित्य पढ़ पाएँ। हिंदी भाषा का क्षेत्र अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक विशाल है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, गढ़वाल एवं कुमाऊँ, इनके साथ ही केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली एवं अंडमान निकोवार द्वीप समूह की भाषा भी हिंदी है। दिल्ली तो भारत का हृदय है। इसीलिए हिन्दी में भी हृदय की वह उदारता एवं विशालता सर्वदा परिलक्षित होती रही है। हिंदी का विकास भक्तिकाल में उत्तर से दक्षिण तक सर्वाधिक हुआ। भक्ति के प्रमुख आचार्य रामानन्द एवं वल्लभाचार्य, आदि सभी दक्षिण भारत से आए थे। उनके अतिरिक्त जो भक्ति काव्य लिखा गया वह हिंदी में ही लिखा गया आज भी भारत के किसी भी कोने का कोई साधु है तो वह हिंदी का ही प्रयोग करता है। इसलिए इन साधु-संन्यासियों के माध्यम से भी हिंदी का प्रचार प्रसार बढ़ा। वर्तमान समय में हिंदी सिनेमा का बड़ा योगदान है। विदेशों में तो हिंदुस्तान की भाषा हिंदी ही मानी जाती है। आज भी सुबह-सुबह रेडियो अथवा दूरदर्शन से भक्ति गीतों का कार्यक्रम हिंदी में ही प्रसारित होता है। हिंदी लेखकों एवं कवियों ने अंग्रेजों के अनाचार एवं अत्याचार को समस्त भारतीयों के सामने प्रस्तुत किया। इस लिए हिंदी की आत्मा में आज तक राष्ट्रीय भावना का स्वर विद्यमान है और सर्वदा रहेगा। ''जब तक सूरज चाँद रहेगा हिन्दी का सम्मान रहेगा''।

आरम्भ से ही हिंदी साहित्य का चरित्र राष्ट्रीय रहा है और इससे समय पर होने वाली राष्ट्रीय हलचलों की गूँज सुनाई देती रहती है। दूरदर्शन पर हिंदी समाचार के चैनल अधिक लोकप्रिय हैं। अंग्रेजी जानने वाले भी अधिकांशत: लोग हिंदी चैनलो पर ही समाचार सुनना पसन्द करते हैं, क्योंकि अपनी भाषा, देश की भाषा अन्तर्रात्मा का स्पर्श करती है। वह बात दूसरी है कि किसी हीन भावना के कारण दिखावे के लिए लोग अंग्रेजी चैनलों पर समाचार सुनें और उन्हें अधिक पसन्द करने का दिखावा करते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि अपनी भाषा में जो संवेदन शीलता है वह दूसरी भाषा में कदापि नहीं हो सकती।

हिंदी का कथा साहित्य चाहे वे कहानी हो या उपन्यास, नयी ऊँचाईयों पर है। उस समय जबकि हिंदी गद्य का प्रचलन प्रारम्भ ही हुआ था। बाबू देवकी नन्दन खत्री ने हिंदी में चन्द्रकान्ता सन्तति एवं भूतनाथ आदि उपन्यास लिखकर हिंदी का एक विशाल पाठक वर्ग तैयार किया था। यह सभी उपन्यास चाहे साहित्य की दृष्टि से अपनी जगह न बनायें किन्तु लोकप्रियता की दृष्टि से काफी लोकप्रिय थे। इन उपन्यासों में तिलस्मी एवं अय्यारी को अत्यन्त चमत्कारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हिंदी उपन्यासों की श्रृंखला में जब मुंशी प्रेमचन्द ने प्रवेश किया तो जैसे युग ही बदल गया। मुंशी प्रेमचन्द ने समाज के निम्न एवं मध्यम वर्गो को अपनी रचनाओं के मध्य बिंदु में रखा। भारत के किसानों, पूँजीपतियों एवं सरकारी नौकरी करने वाले विवश भारतीयों की वस्तु स्थिति को यथार्थ रूप से चित्रित करके भारतीय समाज को उन्होंने गहनता से व्यक्त किया। उनके प्रसिद्ध उपन्यास है- 'गोदान, 'रंगभूमि', प्रेमाश्रम' सेवासदन आदि। 'मानसरोवर' में उनकी 300 कहानियों का संग्रह है। इसी समय महाकवि जयशंकर प्रसाद ने भवनाप्रधान एवं एतिहासिक कहानियाँ लिखी। यह युग था प्रेमचन्द एवं प्रसाद के कथा साहित्य का। प्रसाद की कहानियों में भाषा की दृष्टि से तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक होता था जबकि प्रेमचन्द की रचनाओं में उर्दू भाषा एवं मुहावरों का प्रयोग बहुतायत से दृष्टिगत होता है। प्रसाद के एतिहासिक नाटकों में चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी आदि में बीसवीं सदी की समस्याओं का निराकरण प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता एवं समकालीन समस्याओं का खुलकर प्रयोग हुआ है।

जब गद्य के विकास का जिक्र होता है तो भारतेन्दु युग का स्थान सर्वप्रथम है। भारतेन्दु युग में गद्य का विकास हुआ और स्वयं भारतेन्दु ने सामाजिक समस्याओं से संबंधित कई नाटक लिखें । उन्हीं के द्वारा अनुदित नाटक सत्यवादी हरिश्चन्द्र, आज तक लोकप्रिय बना हुआ है। यह नाटक तब से लेकर अब तक मंच पर खेला जाता है। इसी युग में पंडित प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट आदि ने भी नाटक एवं उपन्यास लिखे। हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'बाणभट्ट' की आत्मकथा साहित्य की एक अमूल्य निधि है। हिंदी के गद्य लेखको की एक लंबी सूची। हरिकृष्ण 'प्रेमी', उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, प्रभाकर, राहूल सांकृत्यायन, हरिवंश राय बच्चन, महादेवी वर्मा आदि ने निबंध, उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण एवं रेखाचित्रों के

माध्यम से गद्य साहित्य को उजागर किया एवं देश की सामाजिक एवं राजनितिक परिस्थिति से अवगत कराया।

यों तो आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य बहुआवामी और विविधंतापूर्ण है, किंतु जैसा कि पहले कहा गया है कि उसका मुख्य चरित्र राष्ट्रीय है और राष्ट्रीयता की भावना होने के कारण भारत की बहुसंख्यक जनता की पीड़ा एवं वेदना तथा सुखी जीवन प्राप्त करने की छटपटाहट आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए निरन्तर प्रयास हिंदी गद्य की प्रधान विषय वस्तु रहा है। हिंदी भाषा एवं साहित्य समृद्ध है, इसके संवर्धन की पर्याप्त संभावनाएँ दिखाई देती है। हिंदी भाषा का भविष्य निश्चय ही अत्यन्त उज्जवल है। आज समूचे विश्व में भाषा की दृष्टि से जब हिंदी का तीसरा स्थान है तो भला हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में महत्व देना या स्वीकार करना क्यों नहीं संभव है। आज भारत में अंग्रेजी के निरर्थक और आवश्यकता से अधिक प्रचलन ने न केवल हिंदी को अपितु अन्य भारतीय भाषाओं को भी बहुत हानि पहुँचायी है, जबकि आश्यर्च की बात यह है कि दुनियां के किसी भी कोने में होने वाला आन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो, या खेलकूद दो ही भाषाओं के रूप में दिया जाता है- अंग्रेजी और हिंदी। स्पष्ट है कि सारे विश्व में हिंदुस्तान की भाषा हिंदी ही मान्य है। फिर भला भारत में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपेक्षित एवं उचित सम्मान क्यों नही मिल पाता। जैसे यह देखने में आता है कि भारत का वास्तविक रूप से उच्चकोटि का बुद्धिजीवी चाहे वो किसी भी प्रांत का हो, जब वह परस्पर बातचीत करता है तो उसकी भाषा हिंदी ही होती है, किंतु एक विशिष्ट अभिजात वर्ग ऐसा है जिसमें हिंदी बोलना शान के खिलाफ और पिछड़ापन माना जाता है।

आज भी हमारे देश में आम जनता को राष्ट्रीय संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए हिंदी भाषा ही सक्षम है न कि अंग्रेजी। दिनांक 21/09/2012 को तृणमूल कांग्रेस द्वारा सरकार से समर्थन वापस लेने पर प्रधानमंत्री महोदय ने देश के लोगों को खुदरा क्षेत्र में विदेशी निवेश, डीजल की कीमतों में वृद्धि एवं रसोई गैस पर सबसिडि हटाने के कारणों को देश के प्रत्येक अंतिम आदमी को समझाने के लिए आपना राष्ट्र के नाम संबोधन केवल हिंदी में ही दिया। अन्यथा हमारे प्रधानमंत्री आमतौर पर अन्य अवसरों पर अंग्रेजी में ही अपना भाषण देते हैं। इससे सिद्ध होता है कि हमारे देश में केवल हिंदी ही संपर्क भाषा के रूप में विद्यमान है।

हिंदूस्तान में हिंदी का स्थान

सबसे अधिक हैरानी और दु:ख तब होता है जब पूरे देश में 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। कार्यालयों में, विद्यालयों में तथा विभिन्न संस्थानों में विभिन्न प्रकार के हिंदी से संबंधित आयोजन होते हैं। अंग्रेजी विद्यालयों का चलन विदेशों की ओर गमन और अंग्रेजी का नमन भारत को किस कगार पर ले जा रहा है। विद्यालयों में बोर्ड परीक्षा के परिणाम आने पर गणित, विज्ञान और अंग्रेजी का परिणाम ही महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। जबकि हिंदी के शत-प्रतिशत की ओर कोई ध्यान भी नहीं देता। हिंदी की दुर्दशा की इंतहा तो यह है कि अनेक विद्यालयों में हिंदी के शिक्षकों को वेतन भी दूसरें से कम दिया जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिंदी शिक्षक, हिंदी लेखन, हिंदी भाषी स्वयं को हीन समझता है। इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात और क्या होगी कि आजादी के 57 वर्ष बाद भी भारत की कोई राष्ट्रभाषा नही है। औपचारिक या अनौपचारिक रूप से लोग हिंदी को राष्ट्रभाषा कह देते है, किंतु संविधान के अनुसार हिंदी राजभाषा ही है। यह हमारी हीन भावना का ही परिणाम है कि देश में हिंदी की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। इस तथ्य को निम्न तरह से और भी स्पष्टता पूर्वक व्यक्त कर सकते हैं।

गद्दी वाले ही नहीं रद्दी वाले भी हिंदी को कम महत्व देते है।

इसीलिए तो अंग्रेजी अखबार की तुलना में हिंदी अखबार को कम दाम में लेते है।

अंग्रेजों के देश छोड़ने से पहले ही लालची प्रकृति के भारतीय अंग्रेजों के रीति रिवाज़ एवं उनके रहन सहन पर लट्टू हाने लगे थे। वे भारतीय अमरबेल की जड़ थे, उन्हीं के वंशज अमरबेल की भाँति भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के वृक्षों पर फैलते जा रहे है और धीरे धीरे उन वृक्षों की जड़ों को खोखला कर रहे है। अंग्रेजो ने अपने शासन काल में धनी वर्ग के भारतीयों के लिये अंग्रेजी विद्यालय खोले। उन विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे आधे अंग्रेज तो हो जाते थे। आजादी की लड़ाई मे यद्यपि उन आधे अंग्रेजों में से भी बहुत लोग शामिल थे मगर संविधान बनते समय जब राष्ट्रभाषा का मुद्दा सामने आया तो हिंदी की खिलाफत सहनी पड़ी, उसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के लिए अक्षम बताया गया। अत: फैसला इस बात पर हुआ कि पहले हिंदी को सक्षम बनाया जाए फिर उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाए। वह दिन आज तक नहीं आया क्योंकि उच्च पदों पर आसीन, लन्दन से डिग्रियाँ लेकर आये भारतीय हिंदी के घोर विरोधी थे। हिंदी विरोधियों की हमेशा यही दलील रही कि विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करने के लिए संसार में अपना स्थान बनाने के लिये अंग्रेजी में महारत हासिल करना आवश्यक है। इसलिए इस तर्क को मान भी लिया जाए तो उसके लिए भारत के हर बच्चे को वैज्ञानिक बनाने की महत्त्वकांक्षा क्यों है ? वैज्ञानिक बनने के लिये बच्चों में भी तो अभिरूचि होना आवश्यक है। भाषाएँ सभी अच्छी है, अधिकाधिक ज्ञान का स्रोत है, किंतु किसी एक भाषा के पीछे हीनभावना के कारण भागना हमारी नयी पीढ़ियों और हमारी संस्कृति पर अत्यचार है। हम अंग्रेजी भाषा में कभी भी अग्रगामी नहीं बन सकते इसीलिए आज हम केवल अनुगामी बनकर ही रह गए है।

हिंदी भारत की ऐसी भाषा है जिसे काम चलाने लायक सभी भारतीय समझते हैं और मज़े की बात तो यह है कि सारी दुनिया हिंदी

को ही हिन्दूस्तान की भाषा मानती है। दुनिया के किसी कोने चाहे क्रिकेट का मैच हो रहा हो चाहे फुटबाल, का चाहे हॉकी का कमेंट्री, हिंदी या अंग्रेजी में ही आएगी। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सोवियत रूस बनने के बाद रूसी उनकी राष्ट्रभाषा थी, क्या वे वैज्ञानिक प्रगति के क्षेत्र में पीछे रहे ?चीन, जापान अन्य यूरोपीय देश जिन्हें विकसित देशों की श्रेणी में माना जाता है उनकी अपनी भाषा ही राष्ट्रभाषा रही है और उसी के माध्यम से उन्होंने प्रगति भी की है। राष्ट्रभाषा पूरे राष्ट्र की आत्मा को शक्ति सम्पन्न बनाती है। संविधान निर्माण के समय कुछ लोग ऐसे थे, जो अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाए रखना चाहते थे। हिंदी के राष्ट्रभाषा बनने पर हर प्रकार से उनकी हानि थी। वे उच्च पदों पर आसीन थे, अंग्रेजी के पंडित थे। हिंदी उन्हें बिल्कुल नहीं आती थी। अत: कुछ लोगों की स्वार्थपरता, अंग्रेजी परस्ती ने हिंदी को राष्ट्रभाषा का सम्मान नहीं मिलने दिया ।

भाषा को लेकर भाँति-भाँति के वाद-विवाद होते होते रहे। तय यह हुआ कि सन् 1965 तक राजकाज अंग्रेजी में चलता रहे और इस बीच हिंदी को समर्थ बनाया जाए। शिक्षा मंत्रालय की ओर से हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली बनाई गई। शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी अनिवार्य विषय बना दिया गया। मन से ओर बेमन से शासन और जनता ने हिंदी का अपेक्षित स्थान दिलाने का भरसक प्रयास किया। दूसरी और बरसाती मेंढकों की तरह अंग्रेजी माध्यम विद्यालय अलग टर्र-टर्र करने लगे। लाभ कुछ नहीं हुआ हिंदी केवल पाठ्यक्रम तक सीमित होकर रह गई। कॉन्वेंट्स और पब्लिक स्कूलों ने अपनी अंग्रेजी की चकाचौध से हिंदी को बराबर पीछे ढकेला है। शायद इसीलिए वर्ष में एक बार 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। आजादी की लड़ाई जिस भाषा में हुई वह हिंदी थी। हिन्दीत्तर भाषियों ने फिर भी हिंदी भाषा को सम्मान दिया, उसकी अहमियत को समझा पर, अफसोस सबसे ज्यादा दुर्दशा हिंदी की हिंदी भाषियों ने की। हिंदी के शिक्षक भी विद्यार्थियो के मन में हिंदी के प्रति सम्मान जाग्रत नही कर पाते। हिंदी एक उपेक्षित विषय बन कर रह गई है ।

कुछ लोगों का विचार है कि हिंदी के प्रभाव से धीरे-धीरे प्रादेशिक भाषाएँ समाप्त हो जायेंगी। कोई भी प्रदेशावासी अपनी भाषा को छोड़ना कभी पसन्द नहीं कर सकता, परन्तु उनकी यह धारणा भी भ्रान्तिमूलक है। केन्द्रीय सरकार ने राज्य सरकारों को यह सुविधा प्रदान की है कि अपने राज्य का कार्य प्रादेशिक भाषाओं में कर सकते हैं। बंगाल में बंगला, पंजाब में पंजाबी मद्रास में तमिल राजभाषा घोषित की जा चुकी हैं। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी प्रांतीय भाषाओं को राजभाषा बना दिया गया है। हिंदी, हिंदी भाषी प्रदेशों के अतिरिक्त केन्द्र सरकार की राजभाषा होगी। इतने निर्णय लेने के पश्चात् भी अंग्रेजी दीवार पर छिपकली की तरह हिन्दी से चिपकी हुई है। जब तक हिंदी भाषी या हिंदी के साहित्यकार स्वस्थ दृष्टिकोण लेकर एवं हीन भावना से मुक्त होकर हिंदी के लिये ठोस कार्य नहीं करेंगे तब तक हिंदी अपना खोया हुआ सम्मान वापस नहीं पा सकेगी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पंक्तियों को भी नहीं भूला जा सकता -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।।"

अपनी भाषा की विशेषता यह है कि यह समझी एवं महसूस की जा सकती है। इसकी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है। व्यक्ति अपनी भाषा में ही सपने देखता है। भला-बुरा, लाभ-हानि, सफलता-असफलता का अहसास व्यक्ति अपनी ही भाषा में करता है। जबकि मातृभाषा से अलग भाषा यानि अंग्रेजी को हम सीख सकते हैं लेकिन महसूस या अहसास नहीं कर सकते, केवल रट सकते हैं। क्योंकि मातृभाषा की संस्कृति, संस्कार दूसरी भाषा से भिन्न होते हैं। अपने व्यवसाय अथवा व्यापार हेतु सीखना ठीक है लेकिन मातृ भाषा को उपेक्षित करके नहीं। हिंदी हमारी माता एवं अंग्रेजी केवल हमारी बीबी। माँ से हमारा खून का संबंध है और अंग्रेजी से दिल का । माँ का स्थान हमेशा ऊँचा होता है।

अपनी भाषा के महत्त्व को समझना अत्यन्त आवश्यक है। नन्हें नन्हें बच्चे जब अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में आते हैं तब अपनी भाषा के एक लाख से भी अधिक सीखे हुए शब्द उनके लिए व्यर्थ हो जाते हैं। विदेशी भाषा की उंगली पकड़ कर नये सिर से चलना सीखते हैं। न भाषा समझ पाते हैं न विषय। अधिकांश बच्चे ढेर सारी फीस देकर भी सम्मान से सिर नहीं उठा पाते। बार-बार असफलता ही उनके हाथ लगती है, उनकी अपनी प्रतिभा मनोबल सबका हनन हो जाता है। हम यह नहीं कहते कि अंग्रेजी न पढ़ाई जाए, जरूर पढ़ाई जाए किंतु कक्षा पाँच तक माध्यम मातृभाषा हो, साथ में हिंदी भी पढ़ाई जाए। प्राथमिक कक्षाओं में अंग्रेजी को मौखिक रूप में अधिक पढ़ाया जाए। इस प्रकार शिक्षा का स्तर भी बढ़ेगा और भारत में फिर प्रेमचन्द, प्रसाद, कबीर, निराला, सूर, तुलसी और पन्त जन्म ले सकेंगे ।

कैलाश चन्द्र मठपाल
निरीक्षक (अनुवादक)
फ्रंटियर मुख्यालय सीमा सुरक्षा बल, जम्मू

जिरेनियम - एक सौन्दर्यवर्धक पौधे की सफल कृषिकरण

परिचय:-

हमारा देश अपनी भौगोलिक एवं जलवायु की विविधताओं के कारण उपयोगी सभी प्रकार के औषधी एवं सगंध पौधों से भरपूर भंडार वाला राष्ट्र है। स्वस्थ शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व की ललक, अतीत काल से ही मानव मात्र की प्राथमिकता रही है जिसे साकार करने हेतु वनस्पतियों का मुख्य योगदान रहा है। आज के सन्दर्भ में सगंध पौधों की मांग न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी दिनोंदिन बड़ी तेजी से बढ़ रही है। पिछले एक दशक से विश्व भर में सगंध पौधों का उपयोग, मांग एवं व्यापार बहुत अधिक व निरन्तर बढ़ रहा है। परन्तु भारत का विश्व व्यापार में योगदान नाम मात्र का है। अत: यह आवश्यक है कि भारत में भी हमारे किसान सगंध पौधों की ऐसी फसलें तैयार करे जोकि गुणवत्ता से परिपूर्ण हो जिससे कि वे अपने तथा राष्ट्र के लिए बहुमूल्य सम्पदा अर्जित कर सके। इनमें जिरेनियम एक उच्च मांग व उपयोगी वाला सगंध पौधा है। जिरेनियम की उपयोगिता तेल के रूप में उसकी पत्तियों में पायी जाती है जिसका प्रयोग सौंदर्य प्रसाधन एवं सुगंधशाला में किया जाता है। जिरेनियम का जन्म स्थान दक्षिण अफ्रीका है जहां पर यह प्राकृतिक अवस्था में पाया जाता है। विश्वभर में इसकी व्यवसायिक खेती फ्रांस, चीन, मिश्र, मैड़ागास्कर, मोरक्को, रीयूनियन प्रायद्वीप, स्पेन, कांगों, बेल्जियम तथा अन्य यूरोपियन विदेशों में की जाती है। भारतवर्ष में इसकी खेती का आरम्भ सर्वप्रथम 20वीं शताब्दी में तमिल नाड़ों के यारकांड़ जिले में शुरू किया गया है। भारत में इसकी खेती कर्नाटक, चेन्नई व केरल में की जाती है। अब धीरे-धीरे इसकी खेती उत्तर प्रदेश के लखनऊ खंड में भी की जाने लगी है। इस समय भारतवर्ष जिरेनियम तेल का एक बहुत बड़ा आयातक एवं उपयोग करने वाला देश है। जिसका सकल घरेलू उत्पाद 15 टन प्रतिवर्ष में अधिक नहीं है। इस फसल को बढ़ावा देने हेतु नये क्षेत्रों जैसे उत्तरांचल, सिक्किम, आसाम, अरूणांचल, हिमाचल प्रदेश के मैदानी भागों एवं पहाड़ियों पर एक अच्छी शुरूआत की जा चुकी है और भविष्य में यह एक आदर्श फसल सिद्ध होगी। इसकी व्यापक मांग को देखते हुए भारतीय समवेत औषध संस्थान (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद) ने पहली बार जिरेनियम की खेती विस्तारपूर्वक जम्मू में आरम्भ की है। सुगन्ध एवं चबाने वाली तम्बाकू उद्योगों में इस तेल की अधिकाधिक खपत के कारण भारतवर्ष में इसका आयात 100 टन से भी अधिक मात्रा में हो रहा है। पूरे विश्वभर में जिरेनियम तेल का उत्पादन लगभग 1500 टन प्रतिवर्ष है जबकि हमारे देश में घरेलू उत्पाद 15 टन से अधिक नहीं है। इसलिए इस समय हज़ारों किसानों को जिरेनियम की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है और भविष्य में यह एक आदर्श फसल सिद्ध होगी।

वनस्पतिक विवरण:-

जिरेनियम जिरेनियेसी कुल का सदस्य है जिसका वानस्पतिक नाम पिलरगोनियम् है। यह पौधा शाकीय, बहुवर्षीय, झाड़ीदार, हरा तथा बहुशाखीय है, जो 100-120 से.मी. तक ऊंचाई अर्जित करता है। पत्ते हरे रंग के होते हैं तथा शाखायें जमीन पर फैलती है। पत्तियों के आसवन करने पर सुगन्धित तेल निकलता है। जड़े मज़बूत तथा शाखादार होती है। फूल छोटे-छोटे गुलाबी रंग के होते हैं। पौध में बीज धारण करने की क्षमता नहीं है। अत: इसकी खेती कलमों द्वारा की जाती है।

किस्में:- अल्जेरियन या ट्युनिसियन, रीयूनियन या बोरबोन, के.के.एल.1, सेल-8, हेमन्ती, बिपुली, कुन्ती।

ल्जेरियन तथा रीयूनियन किस्में भारी और कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्में हैं।

भूमि तथा जलवायु:-

इस फसल के लिए सुहाना मौसम, गरम-सर्द और कम आर्द्रता वाला मौसम उपयुक्त है जिसमें वार्षिक वर्षा 100 से 150 से.मी. के बीच हो। 25-35° तापमान तथा कम आर्द्रता वाले क्षेत्रों में खेती करने से अच्छी उपज होती है। इसे 1000 से 2100 मी. ऊंचाई वाले क्षेत्र में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। 4 घंटे की रोज़ाना धूप अच्छी बढ़वार के लिए उपयोगी है। यद्यपि इस पौधे को विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है, परन्तु हल्की से दोमट मिट्टी वाली भूमि जिसमें जीवांश की मात्रा अधिक हो तथा जल निकास का उत्तम प्रबंध हो जिरेनियम की खेती के लिए उपयुक्त है। यह पौधा क्षारीय, लवणीय व बाढ़ग्रस्त भूमियों पर नहीं उगाना चाहिए। सिचिंत भूमि में ही इसकी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। कोहरे से पौधे की ऊपरी मुलायम भागों को हानि पहुंचती है जोकि बसन्त आने पर स्वस्थ हो जाते है। जिरेनियम एक सुव्यवस्थित जल निकास वाली मृदा में अच्छी तरह उगता है। वर्षा ऋतु में जल निकास हेतु नालियों का निर्माण करना अनिवार्य है। समतल एवं ढलानयुक्त भूमि का चयन करें।

कृषि तकनीक:-

खेत की तैयरी:-

जिरेनियम की खेती करने के लिए ज़मीन में 5-8 टन प्रति एकड़ अच्छी गली-सड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिए। इसके बाद 3-4 बार अच्छी तरह से जुताई करें जिससे खेत की मिट्टी बारीक बन जाए। खेत अच्छी तरह से समतल हो ताकि पानी ज्यादा समय तक खड़ा न रहे।

कलमें तैयार करना:-

जिरेनियम पौधे में बीज धारण करने की क्षमता नहीं है। अत: इसकी खेती कलमों द्वारा की जाती है। तने तथा जड़ों की कलमों द्वारा इस पौधे का उद्‌भिज्ज संचरण किया जाता है। पौध संचरण के लिए नर्सरी क्यारियां 15-20 फुट ऊंची छायादार जगह में बनानी चाहिए तथा क्यारियों में जीवांश की मात्रा अधिक हो। कटिंग बनाने के लिए पौधों का सही चयन एक बहुत बड़ा आवश्यक कार्य है। मातृ पौध के बुनियादी लक्षण इस प्रकार होने चाहिए:-

1. उच्च गुणवत्ता वाले पौधे ।
2. स्वस्थ तथा कीटों एवं रोगों से मुक्त पौधे ।
3. कलम काटने से पहले पौधे पूरी तरह से परिपक्क हो ।

पौध संचयन के लिए 15 से 20 से.मी. लम्बाई वाली टर्मिनल कटिंग ली जाती है जिसमें लगभग 6-8 आँखें हो। तेजधार वाले चाकू से एक तिरछा कट 6 या 7वीं नोड़ के नीचे लगाया जाता है। कलमों को छाया में संग्रह करें तथा ऊपरी 3-4 पत्तियों को छोड़कर शेष पत्तों को तोड़े। कलमों को सेरेड़ेक्स-बी से उपचारित करें। रोपण के तत्पश्चात जल्दी से हाथ से पानी दें। क्यारियों के 3-4 दिन में दो बार पानी दें और तत्पश्चात दिन में एक बार हल्का पानी दें। नर्सरी क्यारियों के ऊपर उचित छत होनी चाहिए ताकि कलमों को तेज धूप, हवा तथा बारीश से हानि न पहुंचे। प्राय: 18 दिनों के अन्दर कलमें जड़े पकड़ती है। मातृ पौध के ऊपरी हिस्से से लिए कलमों का अनुकरण मध्यम तथा निचली भागों से लिए हुए कलमों के मुकाबले ज्यादा होता है। जम्मू में नर्सरी उगाने के लिए अक्टूबर तथा नवम्बर के महीने सबसे उपयुक्त है। ग्रीन हाउस में कलमें वर्ष के किसी भी समय तैयार की जा सकती है। इन्डोल एसीटिक एसड़ और इन्डोल ब्योटेरिक एसड़ (500 पी.पी.एम.) से उपचारित कलमें जल्दी ही जड़े पकड़ती है और जड़ों की मात्रा भी अधिक होती है। कलमों से पौधे लगभग दो माह में तैयार हो जाते है।

रोपाई:-

कलमों से भलीभाँति विकसित पौधों को सावधानी से नर्सरी से निकाले और इन्हें 0.1: बावस्टिन के घोल में भिगोकर तुरन्त रोपित करें। रोपण के तुरन्त बाद पानी लगायें। 50-50 से.मी. के अन्तराल पर 40,000 पौधे प्रति एकड़ लगेंगे। नर्सरी में 10-15 प्रतिशत पौधों को छोड़ दें। रोपण के 20-25 दिन उपरान्त पौधों के ऊपरी 2-4 पत्तियों को तोड़े जिस से शाख संख्या में वृद्धि होगी। 15-20 दिन के बाद खेत में मृत पौधों के स्थान पर बचे हुए पौधों को पुन: लगा दें। उचित स्थापना के लिए खेत को 3-4 दिन तक दिन में एक बार सिंचाई की जाए। जिरेनियम प्राय: एक बार लगा देने के बाद इससे तीन साल तक सफलतापूर्वक फसल की कटाई ली जा सकती है।

सिंचाई:-

पौधे की अच्छी बढ़त एवं पैदावार के लिए गर्मियों में सप्ताह में एक बार तथा सर्दियों में माह में एक बार हल्की सिंचाई करें ताकि नमी बनी रहे। प्रत्येक कटाई के तुरन्त बाद पानी लगायें। कटाई लेने से 10 दिन पहले पानी लगाना बन्द करें। आवश्यकता पड़ने पर ग्रीष्मकाल में मिट्टी के बढ़ते तापमान को सिंचाई द्वारा नियंत्रित करें। वर्षा ऋतु में जल निकासी के लिए नालियों का निर्माण करें ताकि पौधों में सड़न न हो।

निराई व गुड़ाई:-

आरम्भ में खरपतवार निकालने के लिए 2-3 गुड़ाई जल्दी-जल्दी करें। मानसून पूर्व वर्षा से बनी पपड़ी को गुड़ाई द्वारा तोड़े। अच्छे एवं लम्बे समय तक उपज प्राप्त करने के लिए जिरेनियम को मेड़ों पर रोपाई करें। प्रत्येक कटाई के बाद गुड़ाई अच्छी प्रकार करें।

प्रमुख रोग व कीट तथा पौधे सुरक्षा :- प्रमुख कीट : दीमक

प्रमुख रोग : मुरझाना/उकठा विल्ट

उकठा विल्ट:-

यह रोग राइजोकटोनियां तथा फ्यूज़ेरियम नामक फफूंदी द्वारा होता है। शुरू में रोग का आक्रमण होने पर पत्तियां मुरझाने लगती है। फिर शाखा मुरझाती है और धीरे-धीरे पूरा पौधा सूख जाता है। इस रोग का प्रकोप पानी जमा होने वाली भूमि में अधिक होता है।

नियंत्रण:-

(क) दीमक नियंत्रण के लिए 25 कि.ग्रा. हैप्टाक्लोर प्रति हैक्टेयर मिट्टी में मिलाएं और पूरे क्षेत्र को सिंचाई दे।

(ख) न्यूनतम सिंचाई और उचित गुड़ाई से स्वस्थ वृद्धि सुनिश्चित होगी।

(ग) तेज धार वाली कुदाली से पौधों की कटाई करें ताकि झटके और खिंचवा से पौधे को नुकसान न हों और फफूंदी संक्रमण न फैले। फफूंदनाशक एक प्रतिशत बावस्टिन का छिड़काव कटाई के बाद करें।

उर्वरक:-

अच्छी उपज के लिए 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा 45 कि.ग्रा. पोटैशियम एवं फास्फोरस का प्रयोग करें जिससे पत्तियों की संख्या तथा तेल की गुणवत्ता बढ़ेगी। 20 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर मूलभूत खुराक के रूप में देने से फसल की अच्छी बढ़वार होगी।

कटाई:-

प्रतिरोपण के बाद प्रथम कटाई लगभग 4 माह बाद तथा बाद की कटाईयां 2-3 माह के अन्तराल पर की जानी चाहिए। जब पत्ते हल्के रंग के होने लगते है और इनमें पीलापन बढ़ने लगता है और गुलाब जैसी महक आने लगती है तब इसकी कटाई की जाए। फसल की कटाई भूमि सतह से लगभग 20-25 से.मी. ऊपर से करें। हरी पत्ती वाली प्ररोह को तेज धार वाली कुदाली से काटे और 10-15 प्रतिशत पत्तियां प्रकाश संश्लेषण के लिए पौधे पर छोड़े। तेज धूप में कटाई न करें। अत: प्रात: या सायंकाल में ही कटाई करें। कटाई के तुरन्त बाद फसल को आसवन के लिए भेजें। यह फसल बारहमासी है और इसकी लगभग 3-4 वर्ष तक अच्छी कटाई ली जा सकती है। एक वर्ष में कुल तीन कटाई प्राप्त की जा सकती है।

प्रसंस्करण और उपज:-

ताजे वज़न के अनुसार पौधों में 0.08-0.1 प्रतिशत तेल होता है। ताज़ा पत्तियों से आसवन विधि द्वारा सगंध तेल निकाला जाता है तथा इस प्रक्रिया में 2-3 घंटों का समय लगता है। आसवन द्वारा प्राप्त तेल में कुछ पानी की मात्रा रह जाती है। इसके लिए तेल में थोड़ा निर्जल सोडियम सल्फेट डालकर 3-4 घंटे तक रख दें। इस प्रकार तेल से नमी दूर हो जायेगी। तेल का भंडारण काँच की शीशी में करें और पूरा भर कर रखें क्योंकि तेल के घटक हवा में मौजूद अक्सीजन के सम्पर्क में आने से दूसरे रासायनिक घटकों में परिवर्तित हो सकते है बर्तनों को धूप या ज़्यादा रोशनी वाले स्थानों पर संग्रहित न करें।

सभी तीन कटाईयों से ताजे पत्तियों की प्रति हेक्टेयर प्रतिवर्ष पैदावार लगभग 20-25 टन होगी जिसमें आसवन करने पर तेल की लगभग 18-20 कि.ग्रा. पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

तेल की उपयोगिता:-

शुद्ध जिरेनियम तेल खुद में ही एक सुगंध तेल है तथा दूसरे परफ्यूम तेलों के साथ आसानी से मिलाया जाता है। तेल का मुख्य घटक जिरेनियोल और स्टिरोनियोल है। यह तेल सशक्त गुलाबी जैसी सुगंध के कारण काफी अधिक मूल्यवान है। इस तेल से गंध द्रव्य एवं कई सगंध रसायन तैयार किये जाते हैं जिनका प्रयोग उच्चकोटि के इत्रों के निर्माण एवं सौन्दर्य प्रसाधनों, सौन्दर्य सामग्रियों के निर्माण में लिया जाता है। कान्तिवर्धक औषधि, साबुन, तम्बाकू एवं सुगंध उद्योगों में यह तेल अधिकाधिक उपयोगी है। कीटनाशक और चिकित्सा सम्बन्धी पदार्थो में भी इस तेल का प्रयोग होता है। जिरेनियम फूलों तथा गुलाब फूलों में बहुत सारे घटक एक समान है, जोकि मधुमक्खी पालन में एक अहम् भूमिका निभा सकती है। रोड़िनल जिरेनियम तेल में पाया जाता है। रोडिनल को तेल से अलग कर के उच्च श्रेणी के परफ्यूम निर्माण में प्रयोग किया जाता है। चबाने वाले तम्बाकू उद्योग में भी इस तेल की अधिकाधिक खपत होती है। इस तेल के प्रयोग से सकारात्मक विचार, लय अवस्था, तनावमुक्त तथा मन की स्थिरता उपलब्ध होती है।

कान्ति रेखा (2011). पचौली की खेती और उपयोग। ज्ञानवार्ता, द्वितीय संस्करण, अंक:2, वर्ष 2011, पृष्ठ : 47-49.

डॉ. कान्ति रेखा
वनस्पति विज्ञान
आई.आई.आई.एम., जम्मू

हिन्दी भाषा

हमारी जन्म भूमि है हिन्दी, हमारी कर्म भूमि है हिन्दी।
हमारी राष्ट्रभाषा है हिन्दी गौरव की अभिलाषा है हिन्दी।।
भारतवासी के रोम-रोम व कण-कण में बसती है हिन्दी।
हिन्दुस्तान का गौरव व एकता का प्रतीक है हिन्दी ।।
हमें भारतीय होने का एहसास कराती है हिन्दी ।
भारत की स्वर्गमयी धरती पर खुशियाँ बिखेरती है हिन्दी।।
लगता है भविष्य काल में दफन हो जायेगी हिन्दी।
दिल में उठती लहरों को सीने में रख जायेगी हिन्दी।।
आधुनिक विज्ञान जिसे त्याग रहा है वह दुखियारी भाषा है हिन्दी।
शताब्दीयों से चली आ रही प्रसिद्ध भाषा है हिन्दी।।
मिलकर कोशिश करनी होगी यदि बचाना है हिन्दी।
लोगों के तन और मन में हमें बसाना है हिन्दी।।
अन्यथा लय टुट जायेगी बिखर जायेगी मोती समान हिन्दी।
तब राष्ट्रभाषा होगी अंग्रेजी और दूर चली जायेगी हिन्दी।।
नेताओं ने जान पर खेलकर हमें सौप गये है हिन्दी।
फर्ज़ यही रहा हमारा बनाये रखें भाषा को हिन्दी।।
फिर भी मानव पथ भटक रहा है क्योंकि छोड़ गया है हिन्दी।
सभी घरों में कलह मची है क्योंकि दूर गयी है हिन्दी।।
न सम्मान घटाती है न अपमानित करती है हिन्दी।
फिर क्यों लोग भूल रहे है जबकि राष्ट्रभाषा है हिन्दी।।
भारतीय संस्कृति के चरणों से गुजरती है हिन्दी।
भारतीय सभ्यता के सुहाने दृश्य का अनुभव कराती है हिन्दी।।
विदेशों में भारतीय जाकर जब बोलता है हिन्दी।
ऐसा लगता है मानो धन्य हो गयी है हिन्दी।।
मधुर, सुशील, सरल, स्वछन्द संगीतमय भाषा है हिन्दी।
हमारी राष्ट्रभाषा है हिन्दी गौरव की अभिलाषा है हिन्दी।।
हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान यही पाठ दोहराती है हिन्दी ।
अनुपम, अनुकरणीय, सम्मानित बन्दनीय भाषा है हिन्दी।।

अनूप कुमार मौर्य,
भैषज्य विभाग,
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

अर्थ-अनर्थ लगा मत लेना!

जीवन खुली किताब है, मेरा, पढ़ना तो आसान बहुत है,
किन्तु समझ पाओगे क्या तुम, अर्थ-अनर्थ लगा मत लेना।
प्यार मधुर सावन सा मेरा, बरसे तो मधुमय कर डाले,
किन्तु अभिय के धोके में, तुम विष का घूँट चढ़ा मत लेना।
द्वार हृदय का सदा खुला है, सोच समझ कर फिर भी आना,
आना तो आसान यहां पर, किन्तु कठिन है वापस जाना।
कोमल कच्चे धागों की जंजीर, मगर मजबूत बहुत है,
अपने मन में व्यर्थ शक्ति का दंभ, कहीं तुम बढ़ा न लेना।
मेरे मन के निर्मल आंगन में, भावों की खिलती क्यारी,
सुखद छांव ममता की इसमें, और नेह की धूप है प्यारी।
अपने और परायों में कुछ भेद समझती प्रीत न मेरी,
अपने मन में शंकाओं की फांस कहीं तुम गड़ा न लेना।
मेरे जीवन का दर्शन है, एक अनेकों में मिलता है,
माटी, पानी, हवा, धूप सब मिलें सुमन तब ही खिलता है।
भेद भले में बुरे में मात्र विचारों का होता है,
अपने मन का अड़ियल घोड़ा तंग ज़गह पर अड़ा न लेना

डॉ. मधु चतुर्वेदी
गजरौला (उ.प्र.)

उतनी दूर मत ब्याहना बाबा

बाबा!
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने खतिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज्यादा
ईश्वर बसते हों
जंगल नदी पहाड़ नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन
वहाँ तो कतई नहीं
जहाँ की सड़कों पर
मन से भी ज्यादा तेज
दौड़ती हों मोटरगाड़ियाँ
और दुकानें हों बड़ी-बड़ी
उस घर से मत जोड़ना मेरा रिश्ता
जिस घर में बड़ा सा खुला आँगन न हो
मुर्गे की बाँग पर होती नहीं हो जहाँ सुबह
और शाम पिछवाड़े से जहाँ
पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे
मत चुनना ऐसा वर
जो चुनना और हड़िया में डूबा रहता हो
काहिल-निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लडकियाँ उड़ा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी खातिर
कोई थारी-लौटा तो नहीं
कि बाद में जब चाहूँगी बदल लूँगी
अच्छा-खराब होने पर
जो बात-बात में
बात करे लाठी-डंडों की
निकाले तीर-धनुष कुल्हाड़ी
जब चाहे चला जाए बंगाल,
असम या कश्मीर
ऐसा वर नहीं चाहिए मुझे
उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथों ने
कभी कोई पेड़ नहीं लगाया
फसलें नहीं उगाई जिन हाथों ने
जिन हाथों ने दिया नहीं कभी
किसी का साथ
किसी का बोझ नहीं उठाया
और तो और !
जो हाथ लिखना नहीं जानता हो
'ह' से हाथ
उसके हाथ मत देना कभी मेरा हाथ!
ब्याहाना तो वहाँ ब्याहना
जहाँ सुबह जाकर
शाम तक लौट सको पैदल
मै जो कभी दुःख में रोऊँ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करूण विलाप
महुआ की लट और
खजूर का गुड़ बनाकर
भेज सकूँ संदेश तुम्हारी खातिर
उधर से आते-जाते किसी के हाथ
भेज सकूँ कद्दू-कोहड़ा, खेखरा, बरबट्टी
समय-समय पर गोगो के लिए भी
मेला हाट बाजार आते-जाते
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर-गाँव का हाल-चाल
चितबरी गैया के बियाने की खबर
दे सके जो कोई उधर से गुजरते
ऐसी जगह ब्याहना मुझे
उस देश में ब्याहना
जहाँ ईश्वर कम आदमी ज्यादा रहते हों
बकरी और शेर
एक घाट पर पानी पीते हों जहाँ
वहाँ ब्याहना मुझे!
उसके संग ब्याहना जो
कबूतर के जोड़े और पंडुक पक्षी की तरह
रहे हरदम साथ
घर-बाहर खेतों में काम करने से लेकर
रात सुख-दुःख बाँटने तक
चुनना वर ऐसा
जो बजाता हो बाँसुरी सुरीली
ढोल-माँदल बजाने में हो पारंगत
वंसत के दिनों में ला सके जो रोज
मेरे जूड़े की खातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे ।।

सुन्दर सहनी
सहायक हिन्दी श्रेणी-।,
दुलहस्ती पावर स्टेशन, किश्तवाड़ (जम्मू व कश्मीर)

हिन्दी के महान साहित्यकार - उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द

भारतीय नवजागरण काल के जिन महान साहित्यकारों ने राष्ट्रीय संचेतना को जगाने में अतुलनीय योगदान किया उनमें में मुंशी प्रेमचन्द का नाम अग्रगण्य है। वे राष्ट्रीय पुनर्जागरण काल के प्रतिनिधि कथाकार थे। उनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस से चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम धनपत राय था। उनके पितामह पटवारी तथा पिता अजायब लाल डाक मुंशी थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। जीवन संघर्षो में बीता। मुंशी प्रेमचन्द ने अपने संघर्षमय जीवन का परिचय 'जीवन सार' नामक अपने ग्रंथ में दिया है। बड़ी कठिनाई से शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें 18 रुपये की मास्टरी मिल गयी थी। बाद में वे शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए। प्रेमचन्द आरंभ में उर्दू में नवाब राय के छद्म नाम से लिखते थे। उर्दू में लिखी उनकी पहली कृति 'सोजे वतन' अंग्रेजों ने जब्त कर ली थी। सन् 1920 में जब स्वतंत्रता संग्राम की आंधी चल रही थी उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और अपना पूरा समय साहित्य सृजन में लगाया। उर्दू का संस्कार लेकर वे हिन्दी में लिखने लगे। उनकी प्रमुख कृतियों में (उपन्यास)- इसरारे मुहब्बत, प्रताप चन्द, श्यामा, प्रेमा, कृष्णा, वरदान, सेवा सदन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा, सेवा सदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, गोदान, मंगलसूत्र, कहानियाँ - सोजे वतन, सप्त सरोज, नवनिधि हिन्दी, प्रेम पूर्णिमा तथा जीवनियों में महात्मा शेख सादी, दुर्गादास, बाल साहित्य में कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानियां, रामचर्चा आदि हैं। इसके अलावा उन्होंने तालस्ताय की कहानियों, सुखदास, अहंकार, न्याय, हड़ताल, आजांद कथा आदि का अनुवाद किया। वे उस समय भारत के श्रेष्ठ लेखकों में परिगणित किये जाते थे। प्रेमचंद प्रमुख रूप से एक कथाकार थे। उन्हें भारतीय समाज का गहरा अनुभव था तथा वे युगीन सांस्कृतिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय नवजागरण के संवाहक थे। वे किसानों, मजदूरों, सर्वहारा वर्ग के मसीहा थे। उनके उपन्यासों, कथाओं में तद्कालीन भारतीय समाज का रहन-सहन, आचार-विचार, बोलचाल, संघर्ष एवं दुख दर्द के यथार्थ परिदृश्य दिखाई देते हैं। यदि आप उस युग की सामाजिक परिस्थितियों का सच्चा दृश्य देखना चाहते हैं तो प्रेमचन्द का साहित्य एक आइने का काम करेगा। जमींदारों का शोषण, बाल विहार, विधवा विवाह, धार्मिक अंधविश्वास, कुरुतियाँ, पंडे पुरोहितों का शोषण, छुआछूत, शिक्षा एवं समानता के अधिकार से वंचित भारतीय नारी आदि विषय प्रेमचन्द के साहित्य में प्रमुखता से आए हैं। कलम के महान सिपाही एवं कृषकों एवं कृषक संस्कृति के सबसे बड़े हमदर्द तथा उनकी संपूर्ण कथा साहित्य में उस युग के राष्ट्रीय नव जागरण के स्वर जितने प्रखरता एवं गहनता से मुखरित हुए हैं वह अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने साहित्य को कोरी कल्पना से निकाल कर उसे समाज के आम मसायल एवं सच्चे सरोकारों के आलोक से भर दिया। हिन्दी के इस महान कथाकार ने हिन्दी को आम हिन्दुस्तानी की भाषा में हिन्दी को खुलापन प्रदान किया तथा कहानी एवं उपन्यास दोनों में युगांतकारी परिवर्तन किए और कथा साहित्य को तिलस्मी, ऐयारी एवं जासूसी के सतही मनोरंजन से निकाल कर उसे सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम का जामा पहनाया। साहित्य के संबंध में उनकी मान्यता थी ''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो-जो हममें गति, संघर्ष और उल्लास पैदा करे, जगाए, सुलाए नहीं। साहित्य की सार्थकता के संबंध में उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था- ''साहितस्य का आधार जीवन है, इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है, जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जगे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति पैदा न हो, वह साहित्य हमारे लिए बेकार है'' वस्तुत: कथा और कहानी में साहित्य भाव साहित्यम् का भाव जगाने वाले, देश की संस्कृति के मूल्यों की संस्थापना करने वाले, यथार्थ से कथाओं का प्लाट गढने वाले वे पहले साहित्यकार हैं। उनकी मान्यता थी। 'ऐसी कहानी, जिसमें जीवन के किसी अंग पर प्रकाश न पड़ता हो, जो सामाजिक रुढियों की तीव्र आलोचना न करती हो, जो मनुष्य में सद्भाव को दृढ़ न करती हो तथा जो कुतूहल के भाव न जगाती हो, वह कहानी नहीं है''। श्रेष्ठ कहानी के संबंध में वे कहते हैं - हम कहानी ऐसी चाहते हैं कि वह थोड़े से थोडे शब्दों में कही जाए, उसका पहला ही वाक्य मन को आकर्षित कर ले और अंत तक उसे मुग्ध किये रहे, उसमें कुछ चटपटापन हो, कुछ ताजगी हो, कुछ विकास हो, इसके साथ कुछ तत्त्व भी हो। मन में सुन्दर भावों को जागृत करने के लिए उसमें कुछ न कुछ अवश्य हो''। प्रेमचन्द कृषक संस्कृति के पक्षधर हैं। जिस देश में 80 प्रतिशत किसान रहते हों, उसके साहित्य में ग्राम्य जीवन ही स्वाभाविक रुप से चित्रित होना चाहिए। वे कृषि संस्कृति के कुशल चित्रकार हैं। किसानों की दशा उनसे अधिक कोई नहीं जानता। 'सवा सेर गेहूँ' में वे बताते हैं कि किस प्रकार एक बार सवा सेर गेहूँ उधार लेकर किसान महाजन का पुश्त-दर-पुश्त गुलाम हो गया। 'पूस की रात' में वे एक गरीब किसान का चित्र खींचते हैं, जो सर्दी की रात में ठिठुर रहा है और किस प्रकार पत्तियाँ जला-जलाकर रात काट रहा है। उनका वर्णन उत्यन्त सजीव एवं प्रेरक होता है। प्रेमचन्द ने सैकड़ों कहानियाँ किसान के जीवन पर लिखी। मुंशी प्रेमचन्द महर्षि दयानन्द सरस्वती के समाज सुधार, महात्मा गांधी के जीवन दर्शन एवं स्वदेशी के विचारों से प्रभावित थे तथा भारतीय नवजागरण की आभा को लिए हुए उसे साहित्यिक रुप प्रदान कर रहे थे। वस्तुत: वे राष्ट्रीय पुनर्जागरण के प्रखर प्रवक्ता एवं सांस्कृतिक संचेतना के अग्रदूत थे। उनका साहित्य तद-कालीन युग का जीता जागता कोश है। वे मानवता वादी एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे उस युग के सच्चे व्यंग्यकार थे। सामाजिक अन्याय, छुआछूत, अन्धविश्वास, शोषण और उत्पीडन के विरुद्ध मुखर स्वर थे। उनके साहित्य में सुधार वादी राजाराममोहन राय, स्वामी दयानंद, तिलक महात्मा गांधी, टैगोर, भागतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद के अलावा वाल्टेयर, रुसो और मार्क्स के भी स्वर गुंजित होते दिखाई पड़ते हैं। वस्तुत: वे लोक जीवन एवं लोक चेतना के समन्वित भावभूमि को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करना चाहते थे। हिन्दी साहित्य के इस महान कथाकार का जीवन दर्शन आदर्शवाद एवं यथार्थवाद के समन्वय से अनुप्राणित था। उन्होंने हिन्दी वाड्मय को अपने प्रभूत कथा साहित्य से आपूरित किया तथा भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय-चेतना एवं नवजागरण की लहरें तरंगित की। हिन्दी कहानीकार के रुप में प्रेमचन्द का नाम हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

शिवकरण दूबे वेदराही
'वैदिक वक्ता एवं कवि'
सोनभद्र (उ.प्र.)

गीत

हँसना देखा, रोना देखा
अनहोनी का होना देखा।
उजला-उजला चेहरा देखा
उसमें कोई ठहरा देखा
उसका रूप निहारा ज्यों ही-
सागर से भी गहरा देखा।
सबके साथ खेलने वाला,
सबसे बड़ा खिलौना देखा।
मीठी-मीठी बातें देखीं
कमजोरी वे रातें देखीं
जिन्हें भुलाना चाहा, उनकी-
सपनों में बाराते देखीं।
सुख ने केवल आँगन देखा,
दुःख ने कोना-कोना देखा।
मुख पर खिलता उपवन देखा
स्वर्ग चूमता चुम्बन देखा।
किन्तु सभी को पीने बाला-
बड़ा निठुर परिवर्तन देखा।
पल पहले जो रूप मधुर था,
पल के बाद घिनौना देखा।
देखीं अभिनय की वे घड़ियाँ
बुझी-बुझी दीखी फुलझड़ियाँ
दुःख भी रोटी लगा माँगने-
जब देखीं भूखी आंतड़ियाँ।
करबट अलग-अलग देखे,
पर, सबका एक बिछौना देखा।

श्रीमती दिव्या सिंह,
सुल्तानपुर-दिल्ली

मैं नदी हूँ, नदी

"मैं नदी हूँ, अपने आवेग में,
बह रही हूँ मुझे, छेड़ना छोड़ दो।
बंधन पाउंगी में, बांधकर देख लो,
धार को अब मेरी, मोड़ना छोड़ दो।"

"मनचल हूँ जिधर से गुजर जाउंगी,
हर तरफ सावनी रंग भर जाउंगी।
जितने मायूस गडढे मिलेंगे मुझे,
खुद गिरूँगी मगर उनको भर जाउंगी।
गर उफन जाउंगी डूब जाओगे तुम,
मेरी औकात को नापना छोड़ दो।"

"मरने वालों को भी, जीने वालों को भी,
पार हम तो लगाते रहे है सदा ।
धरती आकाश जब भी तड़पते मिले,
प्यास उनकी बूझाते रहे है सदा ।
कद तुम्हारा है कम, पांव छोटा है अभी,
मेरे सीने को तुम लाँघना छोड़ दो।"

"हद नहीं है मेरी एक विस्तार हूँ,
दो किनारों के दिल में हूँ मझधार हूँ।
जिन्दगी चाहिये जिन्दगी के लिये,
एक समुन्दर की मैं भी तलबगार हूँ।
सो रही है लहर जग न जाये कहीं,
आंख से आंख का सामना छोड़ दो।"

"लग न जाये कहीं मौसमों की नजर,
मैं बनाती रहीं अपना पानी में घर।
है जमीं से मेरा आसमां का सफर,
बस्तियों में मुझे अब तो लगता डर।
सच निगाहों में मेरी मिलेगा तुम्हें,
अब खुदा के लिये आइना छोड़ दो।"

डॉ. रचना तिवारी
अखिल भारतीय कवयित्री (गीतकार)

सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है।
-डॉ. लोकमान्य तिलक

राजभाषा हिन्दी की स्थिति

अंग्रेजी को ऐसा अपनाया कि, हिन्दी में पिछड़ गये,
क्रिकेट को ऐसा अपनाया कि, फुटबाल/हाकी में पिछड़ गये।
एक बार छिड़ गयी बहस, हिंदी हाकी फुटबाल में,
किसकी ज्यादा मान्यता है, इस एक अरब के देश में।

हिन्दी बोली में बड़ी हूँ, मै एक राष्ट्रीय भाषा हूँ,
संविधान में दी है मुझे मान्यता, मै बड़ी बलशाली हूँ।
हिन्दी बोली फुटबाल भैया, यहां तेरा बुरा हाल है,
देखने वाले करोड़ों है पर खिलाड़ियों का अकाल है।

फुटबाल विश्वकप के दौरान, बड़ी-बड़ी बातें करते है,
अपने देश को नजरअंदाज कर, दूसरों के गुण गाते है।
यह सुनकर फुटबाल गुस्से से, हो गया लालो-लाल,
कहा सुनो बहन राजभाषा यहां, तेरा हाल भी है बेहाल।

तेरा ही वार्षिक कार्यक्रम, यह चिल्ला-चिल्लाकर बोल रहा है,

बेशक तेरा प्रयोग बढ़ा है किन्तु, बहुत सा काम अंग्रेजी में हो रहा है।

कहने को तो राजभाषा है पर, शक इसमें कुछ होता है,
बोलने वाले करोड़ों है मगर, कोई कामकाज नहीं करता है।

बहन तेरे प्रचार-प्रसार में, करोड़ों का व्यापार होता है,
तथापि समूचा सकारी तंत्र, हिन्दी में काम करने में रोता है।
अंग्रेजी के आगे तेरा, कोई नहीं वजूद है,
यहां तक कि क्षेत्रीय भाषाएं, तुमसे आगे मौजूद है।

हिन्दी बोली यह गलत है, मै कुछ बेतर स्थिति में हूँ,
बावजूद दुर्दशा के मै, विश्व भाषा बनने में प्रयासरत हूँ।
भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश में, मै बोली जाती हूँ,
फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम में, भी मै जानी जाती हूँ।

अमरिका ने भी अब तो, मेरी महत्ता को पहचाना है,
बच्चा क्लास में मुझे पढ़ाने की बना डाली योजना है।
राष्ट्र संघ में मैंने अपने, अधिकार की दस्तक दे दी है,
रहूँगी मै इसे हासिल कर, प्रतिबद्धता मैंने जता दी है।

मै धन्य हूँ मीडिया की जिसने, मुझे अपने गले लगाया है,
प्रदेश-देश-विदेश में सभी को, गीत हिन्दी में सुनाया है।
देख भैया फूटबाल अगर मुझे, अफसर का सहारा मिलता,
दफ़्त की सारी फाइलों पर, मेरा ही फूल चमकता।

देश की एकता आड़े न आती, मेरी भी जयकार गूँजती,
कतिपय तुच्छ राजनैतिक कारणों से, आज मेरी यह दशा न होती।
''विजुअल मीडिया'' ने मुझे, नई गरिमा स्थान दिलाया है,
संचार पर्यटन उद्योग ने मुझे, आम आदमी के करीब लाया है।

आम आदमी की रोजी-रोटी से अब, मैंने जुड़ना शुरू किया है,

अपने बल पर अंग्रेजी के आगे, अब दौड़ना शुरू किया है।

मुझे उम्मीद है सभी भारतीय सहर्ष मुझे अपनाएंगे,
हिन्दी में काम करने में अब हिचक नहीं दिखलाएंगे।

देश-प्रेम और एकता का जज्बा, लिए मै चलना चाहती हूँ,
प्रोत्साहन की बैशाखियो के सहारे, अब मै नहीं चलना चाहती हूँ।
हिन्दी और फुटबाल की व्यथा सुनकर, हाकी भी बाल पड़ी,
मेरा हाल भी तुम सा है इसलिए, मै क्रिकेट से दूर खड़ी।

नहीं पूछता मुझको कोई, क्रिकेट के इस शोर में,
भूल रहे है मुझे खेलना, क्रिकेट की इस होड़ में।
अंत में तीनों ने मिलकर अपनी, प्रगति पर विचार किया,
अंग्रेजी और क्रिकेट की मानसिकता को, बदलने का प्रण किया।

नहीं बदलेगी जब तक यह, यहां कुछ नहीं होने वाला है,
इन तीनों की दुर्दशा का फिर, भगवान ही रखवाला है।
हिन्दी बोली ''प्रेरणा-प्रोत्साहन'' कार्यान्वयन नीति का आधार है,

दृढ़तापूर्वक आदेश अनुपालन की सबों से दरकार है,
जानबूझकर राजभाषा आदेशों की, जो अवहेलना करेगा,
तो अनुशासनात्मक कार्रवाई पर, विभाग विचार करेगा।
उठो जागो और प्रण करो, मुझे हिन्दी में काम करना है,
राजभाषा की विराट संस्कृति को, नये शिखर तक ले जाना है।

इस प्रण की पूर्ति में अब कोई, नहीं बहाना चलेगा,
होगा दृढ़ इरादा तो, हमारा रूप अवश्य निखरेगा।
विश्वकप फुटबाल में फिर तो, भारत का नाम भी होगा,
विश्वकप हाकी में अब तो, तिरंगा भी लहरेगा।
विश्वस्तरीय भाषाओं में अब तो, हिन्दी का नाम भी होगा,
दूर नहीं दिन सीना हमारा, गर्व से ऊँचा होगा।

आखिर में ''एस.पी.'' की सभी से है यही अभिलाषा,
घर के काम में मातृभाषा, दफ़्तर में राजभाषा ।

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह
निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक)
ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, जम्मू

भाषायी सोच

क्या व्यक्ति से स्वतंत्र विचार की कोई सत्ता है? हम जानते है कि बाह्य परिस्थितियों का हमारी चेतना पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अकस्मात बिजली के कौंधने की तरह एक समाधान, यह कैसे हुआ है? क्या किसी दिव्य शक्ति ने वह संसाधन हमें भेज दिया? यह किस तरह ? क्या किसी दिव्य शक्ति ने यह संसाधन हमें भेजा है? क्या यह अन्तर्ज्ञान (इंट्यूशन है? इस अन्तर्ज्ञान का संबंध भी मनुष्य की चेतना से है। या किसी पहल से अर्थात विचार कहाँ से आता है? यह मानना होगा कि विचार की उत्पत्ति के लिए एक स्थूल आश्रय की अपेक्षा है। मानव मस्तिष्क में ही उसका धारण और पोषण संभव है, असम्भव है कि आश्रय स्थान में अंकुरित होने से पहले विचार की बीज रूप में क्या स्थिति है? क्या बीज रूप में वह सूक्ष्म कुछ है? नये हवा में मंडराता है। हर अनुभूति वह किसी विचार को जन्म दे या न दे किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति अवश्य होती है। यदि वह शब्दों में अभिव्यक्ति न हो तो, संस्कृत निष्ठ हिन्दी, उर्दू मिश्रित हिन्दी, प्रादेशिक शब्द युक्त हिन्दी अथवा कोई अन्य रूप पर कोई विचार न किया जाए। हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उसका स्वरूप जो हमने स्वीकार किया वह संविधान प्रदत्त है। इस संघर्ष की एक पृष्ठभूमि है। सम्पूर्ण भारत में एक संस्कृति रही है, सभ्यता रही और वह सभ्यता और संस्कृति संसार की सभी प्राचीन सभ्यताओं में सर्वोच्च स्थान रखती है। कोई यह नहीं कह सकता कि भारत का जन्म अफ्रीका के नीग्रो के समकक्ष है। 5000 ई. वर्षो तक का हमारा इतिहास स्पष्ट होता है। धर्म ग्रन्थों के अनुसार यह इतिहास और भी पुराना है। जब जन समाज आदान-प्रदान करता है तो किसी भाषा के द्वारा ही करता है। सबसे प्राचीन सम्पर्क की भाषा अपने देश में मिलती है, इसका स्वरूप देव वाणी संस्कृत में मिलता है। कटक से अटक तक हिमालय से कन्याकुमारी तक संस्कृति हमारी राष्ट्रभाषा थीं। एक जमाने की पाली भी राष्ट्रभाषा रही होगी। अशोक के शिला लेख की भाषा पढ़ेंगे तो प्रतीत होगा कि अन्तर है और यह पाली के समकक्ष रही होगी स्वदेश की भाषा थी और यह भी सम्बन्ध ही भारत का आदमी दूसरे देशों में न गया हो, हमारे संबंध देश में ही नहीं थे बल्कि विदेशों से भी थे।

हिन्दी राष्ट्रभाषा है। वह देवनागरी में लिखी जाएगी जब कोई सामग्री न मिलेगी तो संस्कृत का सहारा लिया जाए और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द ग्रहण किये जाएं। किसी भाषा को बढ़ावा देना हो तो उसे भाषा बना दिया जाए इसका विकास सम्भव है। एक जमाने में जब अंग्रेजी राजभाषा बनी तो उसे श्रेय मिला उत्तर भारत में फारसी थी, उर्दू आई तो राजभाषा के रूप में वह कचहरियों में प्रयोग हुई, दफ्तरों में चली परन्तु मानवीय जिन्होंने देवनागरी लिपि को बढ़ावा देने के विषय में और हिन्दी चाहने लगे, भाषा बनती है साहित्य से जब गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू-भाषी हिन्दी लिखने लगेंगे तब साहित्य का निर्माण होगा, मातृभाषा पर स्वभाविक प्रभाव पड़ता है। इससे उसकी शब्दावली, उच्चारण, शैली वैज्ञानिक स्वरूप को कोई, इन्हें रोक नहीं सकता है जब एक अवधी-भाषी स्टैंडर्ड हिन्दी में लिखने का प्रयत्न करेगा, तो उसकी रचना पर अवधी का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। अगर घर पर हम भोजपुरी बोलते है और हिन्दी लिखते हैं भोजपुरी का प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार तमिल और तेलगु तथा अन्य भाषा भाषी हिन्दी में लिखने लगेंगे तो उनकी रचनाओं का प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता । इसी प्रकार मंत्रालय में एक सचिव महोदय हिन्दी में लिखेंगे तो उपसचिव या संयुक्त सचिव, हिन्दी में लिखेंगे। संबंधित संगठन के कार्यालय अध्यक्ष पुन: अधीनस्थ अधिकारी को हिन्दी में लिखने का अनुभाग अधिकारी/सहायक, निम्न श्रेणी लिपिक आदि हिन्दी में लिखेंगे। जब एक तमिल, तेलगु भाषा-भाषी सचिव हिन्दी में लिखेंगे तो संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों को प्रेरणा मिलेगी और निम्न श्रेणी लिपिक आदि सभी हिन्दी में ड्राफ्टिंग करेंगे और एक या दो शब्द लिखने से अवश्य राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रगति होगी। अगर अन्य भाषा-भाषी सचिव एक या दो शब्द गलत लिखते हैं तो उनकी यह कहने की मजाल नहीं कि यह गलत है। अन्तत: हिन्दी पर ये सारे प्रभाव पड़ेंगे। क्योंकि यही राजभाषा नियम में संविधान की मूल भावना है।

जब आप साहित्य सर्जन करेंगे चाहे लेखक हो या रचनाधर्मिता तब उस भाषा पर प्रभाव पड़ेगा। जब एक अरब बीस करोड़ भाषा-भाषी प्रयोग करेंगे तो भाषा का ज्ञान प्रसारित होगा। भाषा का एक रूप होता है जिसे कोई बदल नहीं सकता। देवनागरी प्रान्तीय भाषाओं के प्रभाव में सभी चीजें हिन्दी में हैं। अरबी और फारसी भी ऐसी ध्वनियां हैं जो संस्कृत के तत्सम शब्दों से मिलती-जुलती हैं। उन्हें स्वीकार करने के सिवाय हमारे पास कोई बिकल्प नहीं है। यही बात अंग्रेजी के साथ आधुनिक वैज्ञानिक लेखन में है जो संयुक्त लेखन की ओर बढ़ावा देती है। उर्दू को देवनारी में लिखा जाए हिन्दी वाले अरबी-फारसी के शब्दों को अपनायें। हिन्दी अब स्थिर है, इसके भविष्य को कोई भूला नहीं सकता। इस पर सभी भाषाओं के प्रभाव पड़ेंगे। वैज्ञानिक शब्दावली में हजारों शब्द अंग्रेजी के ले रहे हैं और सार्वदेशिक हिन्दी और प्रादेशिक हिन्दी में कोई अन्तर नहीं है।

शकुन्तला रानी
आइ.आइ.आइ.एम. कॉलोनी, जम्मू

कल्पवृक्ष

भारतीय शब्द-समूह में अनेक शब्द ऐसे है जो न मालूम कब से अपनी महत्ता के साथ प्रचलन में है, किन्तु ये शब्द है अपनी व्यंजना में, अपनी रूपकात्मक शैली में यथा-पारस पत्थर, कामधेनु और कल्पवृक्ष। तीनों शब्दों का हिन्दी साहित्य में, चाहे गद्य हो अथवा पद्य हो, भरपूर प्रयोग देखने को मिलता है। लोक जीवन में मन की ऊपरी परिधि पर तो रूढ़िगत इन पर विश्वास भी अंकित है। उदाहरणार्थ उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद में एक सुप्रसिद्ध मंदिर है लोधेश्वर भगवान की इसी मंदिर के आगे चलकर एक कल्पवृक्ष है। जो वन विभाग के संरक्षण में है। यहाँ लाखों श्रद्धालुजन आते हैं और इस वृक्ष को मस्तक झुकाकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। वहाँ के भक्तजन बताते है कि यह वृक्ष एक हजार वर्ष से जस का तस खड़ा है। इसी तरह का एक कल्पवृक्ष माउन्ट आबू (राज.) में जैनियों के प्रसिद्ध कलात्मक मन्दिर दिलगढ़ के पास है दोनों ही कथाकथित कल्पवृक्ष, मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखे हैं- दोनों के एक से पिण्ड और एक जैसी पत्तियाँ। फूल-फल तो मैंने नहीं देखे। पर श्रद्धा इन वृक्षों के प्रति अपार है-यह मैंने देखा है।

इसी तरह 'पारस पत्थर' की भी खूब महिमा गायी गई। गोस्वामी तृलसीदास ने भी ''पारस परस कुधात सुहाई'' लिखकर पारस को सम्मान दिया। किन्तु सच्चाई ये है कि सदियाँ बीत गई, पर पारस पत्थर न नेपाल में मिला नबिहार में। इसका सही अर्थ-अपने ही चिन्तन-मनन में मिल सकता है। पारस शब्द अपभ्रंश है स्पर्श का। सच्चाई यही है कि जिस तरह पारस के छूने से लोहा सोना हो जाता है, उसी प्रकार सत्संगति को पाकर दुर्भाग्य भी सौभाग्य में परिवर्तित हो जाता है। यही गोस्वामी जी की उक्त चौपाई की भाव-सम्पदा है। भाव शब्द का प्राण है, शब्दों में छिपा हुआ रूपक-सौन्दर्य और भी स्पष्ट हो जायेगा।

मुस्कानों का रस पाकर के, पत्थर पारस मणी हो गये,
देने वाले हाथ स्वयं, लेने वालों के ऋणी हो गये।

काश! पारस पत्थर मिल गया होता तो विश्व का सबसे बड़ा रेलवे निगम जो भारत का है, उसकी रेल पटरियाँ सोने की हो गई होती और भारत विश्व का स्वर्ण मुकुट हो गया होता। पर सत्य को इसी भाव से स्वीकारना पड़ेगा। कि ''पारस'' का रस आन्तरिक है, भावनात्मक है, कल्पनात्मक है ब्राह्य में मात्र एक चली आ रही रूढ़ि है, श्रेष्ठ संगति की अभिव्यक्ति की ओर मात्र एक संकेत है।

दूसरा शब्द हम ''कामधेनु'' लेते हैं। इसका बाह्य अर्थ है कि वह गाय जो हमारी कामनाओं की पूर्ति करती है। यह कामधेनु शब्द इतना व्यापक बन चुका है कि इस शब्द में शास्त्रों की भरपूर सुरभि अर्न्तनिहित है। महाकवि सूरदास ने भी अपनी अन्धी आँखों से इस कामधेनु के उस महाअर्थ को अवश्य अनुभूत कर लिया होगा जो उन्हें लिखना पड़ा कि सूरदास प्रभु कामधेनु तजिछेरी कौन कहते हैं कि मैं पशुओं में गाय हूँ। स्पष्ट है कि जिस गाय से भगवान का बचपन से सम्बन्ध है। गायों के साथ रहना, चुगाना, उनकी सेवा करना उनका गोबर बटोरना, उनके समूह में आनन्द की बंशी बजाना कि बहुना फिर उनका दूध और मक्खन पीना-खाना किस कामना की पूर्ति नहीं करेगा?फिर भी आगे चलकर योगीराज के रूप में यह कह देना कि मैं स्वयं गाय हूँ। भले वह गाय फिर क्यों कामधेनु की महिमा से मंडित न हो जायेगी। यही कारण है कि हमारी वेदों की वेदना में इस गाय को चारों दिशाओं में सभी देवताओं ने जीवन की धात्री कहा है। व्यावहारिक जीवन में भी गाय के दैहिक कण-कण में जो पवित्रता और पुष्टता भरी है-वह तो आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिकता का मापदंड है ही किन्तु जिस स्थान पर गाय रहती है - वह स्थान किसी देव भूमि से कम नहीं यही कामधेनु शब्द खुला रहस्य है। भोले शंकर का नन्दी और बलराम के 'हल-बैल' गाय की महिमा को भारतीय संस्कृति की उस पवित्र चादर से ढक देते हैं यहाँ गाय स्वयंमेव 'कामधेनु' के रूप में भारतीय जीवन की प्रतिविहान वन्दनीय बन जाती है।

अब हम इस निबन्ध के शीर्षक 'कल्पवृक्ष' के विश्लेषण की ओर आते है। कल्पवृक्ष के विश्लेषण के लिये मात्र हमने 'पारस पत्थर' और 'कामधेनु' शब्दों का सहारा लिया, ऐसे न मालूम और भी कितने शब्द है- जो अपने मूल अंत:करण को प्रकट करने के लिए भीतर ही भीतर व्याकुल होंगे। पर उनका भाव पक्ष भी भावज्ञों से छिपा नहीं होगा।

कल्पवृक्ष में दो शब्द-कल्प और वृक्ष। वृक्ष कल्प का रूपक है जिसमें अनंत शाखाऐं है, अनंत पत्तियाँ है, अनंत फूल है, अनंत फल है- जिसकी जड़े बहुत गहरी है, जो अंधकार से भी प्रकाश ले रही है और भीतर के रस से बाहर को आनंद का माधुर्य दे रही है। पर ध्यान रहे ये वृक्ष किसी परम का पिण्ड है जो अपने में अखण्ड है। किन्तु यह वृक्ष 'कल्प' के बिना अधूरा है। कल्प का भी यदि विश्लेषण करें तो इसमें 'कल' और इसके साथ 'प' जुड़ा है। कल कहते है 'सुन्दर' को। यथा - प्रात: पक्षियों का कलरव, जल की कल-कल ध्वनि, कल हंस का जोड़ा आदि। आज कल में जो आज के साथ कल जुड़ा है। वह भी हमारी भारतीय संस्कृति का 'सुन्दर' आदर्श है। इतना ही नहीं कली का प्रस्फुटन इसी कल से हुआ है। कवि रसखान लिखते हैं कि कल धातु के धाम करील के कुँजन ऊपर बारौं।'' कल धातु (सुन्दर धातु अर्थात् सोना) इस तरह कल सर्वत्र सुन्दर का बाचक है। अब जब इसके साथ 'प' जुड़ जाता है, तो यह कल्प परम हो जाता है। अत: कल्प का अर्थ हो जाता है कि जो सुन्दर है और परम से जुड़ा हुआ है- वह है कल्प। कल्पना इसी कल्प की देन है। जैसे भाव से भावना, काम से कामना, साध से साधना वैसे ही कल्प से कल्पना। साधारण जन शेख चिल्ली की उड़ानों को

कल्पना मान लेते हैं। मुँगेरीलाल के हॅसीन सपने मात्र मनोरंजन तो हो सकत है किन्तु कल्पना नहीं। कला भी हो और वैज्ञानिकता भी, तभी वह कल्पना है। 'जीवन कला है-कला ही जीवन है।'' यह सूक्ति इसी कल (सुन्दर) पर आधारित है। पूर्व राष्ट्रपति कलाम जी ने कल्पना को, सपनों को बहुत व्यावहारिक रूप में लिया है। उन्होंने कल्पना की उड़ानों पर खूब बल दिया है। उनकी कल्पना का अर्थ सर्वत्र इसी कल्प की कल्पन है।

हम कहते है केश-कल्प, काया कल्प अर्थात् काया का सुधार हो, केष सुन्दर हों। आयुर्वेद की अधिकांश औषधियाँ कल्प से जुड़ी रहती हैं। भाव यही है कि कल्प में सुधारवादी परम का दृष्टिकोण अन्तर्निहित है। किसी कवि की कल्पना यदि निष्प्राण है, कोरी भावुकता है, विज्ञान रहित है-तो निस:देह कल्प से उत्पन्न कल्पना नहीं-निरर्थक शब्द विलास है क्योंकि कवि का अर्थ ही है-'क' से कला और 'वि' से विज्ञान अर्थात् कला और विज्ञान के आदर्श और यथार्थ के, संगम पर जो कविता में जीता है, वही कवि है। अब इस कल्प को दूसरे तरह से देखें जहाँ ये कल्प दो उपसर्गों से जुड़ा है। 'स' और 'वि' से। 'सं' से जुड़कर संकल्प हो जाता है और 'वि' से जुड़कर विकल्प हो जाता है। 'स' से जुड़ते है इस कल्प के साथ समान रूप से अन्य गुण भी जुड़ जाते हैं - तब हमारा कल्प संकल्प हो जाता है- और जब गुणों का विखण्डन होने लगता है तब यह विकल्प हो जाता है। इस तरह मन में अनेकानेक संकल्प विकल्प उठते और गिरते रहते हैं। संकल्प वह है जो अडिग है, अखण्ड है अत: संकल्पशीलता, वह है, जो हमें लक्ष्य तक पहुँचाती है, राह में छोड़ नहीं सकती। दूर दृष्टि और पक्का इरादा इन नारों के भूल में यही संकल्प है।

इस तरह जो हमारे मानवीय गुण है, उनका जो सम्यक पुँज है या यौं कहैं कि हमारी जो सात्विक सम्पदा है- वही हमारे स्वयं के जीवन का 'कल्पवृक्ष' है। ऐसे वृक्ष की छाया में हम लेटेंगे तो निश्चित हमें विनम्रता की शीलत छाया की अनुभूति होगी। इस वृक्ष के पुष्प हमें वह गंध देंगे; जिससे हमारा आत्म पारिष्करण होगा और वृक्ष से हमें जो प्रत्यक्ष या परोक्ष फल मिलेंगे, वह नि:संदेह हमारी ऐतिहासिक धरोहर बनेगी।

आज विश्व के सृजन का जो रंग-बिरंग हमें रूप दीख रहा है और उसमें से जो मंगलमयी रूप है, वह इसी कल्पना का कल्पवृक्ष है। यही कल्पवृक्ष हमारी मनोकामना का दैवीय रूप है। जहाँ शुभ चेतना कल्पना का वरण कर लेती है - वहाँ मन: संकल्प एक कल्पवृक्ष के रूप में स्वत: खड़ा हो जाता है। अत: हमें बहिर्मुखी बाहर के कल्पवृक्ष की पूजा अर्चना त्यागनी होगी और अन्तर्मुखी होकर अपनी ही कल्पना से सत्य का वह अंकुर अपने ही भीतर विकसित करना होगा जो कि उत्तरोत्तर कल्पवृक्ष बन सकें। इस कल्पवृक्ष के पैदा होते ही अंधकार स्वयं प्रकाश हो जायेगा। आत्मा के ऊपर अज्ञान और मोह के चढ़े हुये लेप नष्ट हो जायेंगे। प्रज्ञा स्थिर हो जायेगी स्मृति बोध हो जायेगा। तब स्पष्ट दीखेगा कि कल्पवृक्ष कोई और नहीं हमारी आत्मा है। कल्पवृक्ष आत्मा का नित्य शुभ श्रंगार है। आओं इस सत्य ही हम कल्पना अवश्य करें। यदि कर सकें तो अवश्य विदित हो जायेगा कि हम यथार्थ में कौन है और इतना ही नहीं, जो अब तक एक धारणा चली आ रही है कि चारों युगों को मिलाकर एक 'कल्प' बनता है, वह धारण भी, इसी कल्पवृक्ष में समाहित हो जायेगी और तब हमारा ये कल्पवृक्ष स्वयं जीवन का मंगल-कलश बन जायेगा। कलश..... सुन्दर और शाश्वत रस (आनन्द) से परिपूर्ण पात्र। कल (सुन्दर) से बना यही कलश तो मंगल है, जिसके ऊपर सर्वत्र कल्पवृक्ष की छाया है। जीवन का मंगल कलश बस, रस ही रस ....।

डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

हिन्दी ही कंठहार बने

संतो की अमर वाणी ये गुरुओं का ज्ञान है
हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है ।।
संस्कृत का इसमें ओज-तेज और है गठन
भाषा समष्टि रुप है, कवियों की कथा
रस छंदों की रंगोली ये गीतों की खान है
हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है।
मीरा की ये वीणा बनी, खुसरो का राग भी
कबिरा की ये सखी बनी, भूषण की आग भी
वीरों का शंखनाद ये कोयल की तान है।
हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है।।

माता का ये सुहाग है, माथे की है रोली
हिन्दू नहीं, मुस्लिम नहीं, सबकी है ये बोली
जीवन की मधुर रागिनी, विप्लव का गान है।
हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है।
भारत में भारती का अमर कीर्ति-गान हो
नवजाण की ज्योति जले नवविहान हो
हिन्दी ही कंठहार बने, ये संविधान है।
हिन्दी हमारे देश की भाषा महान है।।

शिवकरण दूबे वेदराही
सोनभद्र (उ.प्र.)

यूनीकोड का विस्तृत परिचय
विंडोज एक्सपी एवं विंडोज विस्ता, विंडोज विस्ता 7 एवं 8 ऑपरेटिंग सिस्टम्स में यूनीकोड को सक्रिय करने की विस्तृत जानकारी

राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए यदि कोई केन्द्र सरकार के कार्यालय/बैंक/उपक्रम/ सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों/कर्मचारियों को कम्प्यूटर पर हिन्दी में एवं भारतीय भाषाओं में काम करने की इच्छा रखते है तो आसानी से अपने कंप्यूटर या लेपटॉप पर राजभाषा हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में आसानी से काम कर सकते है। इसके लिए आपको अपने कंप्यूटर में एक छोटी सी सैटिंग करनी होगी जिसका विस्तृत विवरण मैंने इस लेख में देने की कोशिश की है।

यूनिकोड में विंडोज एक्सपी/विस्टा ऑपरेटिंग सिस्टम मे काम करने के संबंध में कई लोगों को पूरी जानकारी नहीं है कि कंप्यूटर में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएं इनबिल्ट है। जानकारी के अभाव में हम अभी भी यूनीकोड में काम नहीं कर पा रहे है। जबकि भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा पूरे देश में हिन्दी में यूनीकोड फोंट का प्रयोग करने के संबंध में, सरकारी कामकाज में एकरूपता जाले के लिए सभी कंप्यूटरों में इनबिल्ट यूनीकोड का इस्तेमाल अनिवार्य कर दिया गया है।

यूनीकोड में काम करने के संबंध में माननीय सचिव/संयुक्त सचिव भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर सरकारी विभागों के लिए एक दिशा-निर्देश जारी किए गए है। यह उल्लेखनीय है कि विंडोज **XP**, विंडोज **Vista**, विंडोज 7 और विंडोज 8 में तथा लिनिक्स, यूनिक्य आदि सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में हिन्दी एवं ज्यादातर भारतीय भाषाएं इनबिल्ट है। हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में काम करने लिये इतनी सारी सुविधाएं होने के बाद भी हम इस पर ध्यान दे रहे है और हिन्दी एवं ज्यादातर भारतीय भाषाएं इनबिल्ट है। हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में काम करने के लिये इतनी सारी सुविधाएं होने के बाद भी हम इस पर ध्यान नहीं दे रहे है और हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में काम करने के लिये सॉफ्टवेयर/फोंट आदि की कमी बताकर काम नहीं कर पा रहे है ।

यदि अपने कार्यालय के या घर के कंप्यूटरों/लेपटॉप्स में यूनीकोड को सक्रिय कर दिया जाए तो बहुत आसानी से, सुचारू रूप हिन्दी में और अपनी मातृभाषा में कामकाज कर सकते है । इसी सुविधा के माध्यम से हम हिन्दी में ई-मेल, चैट आदि भी कर सकते है। इसलिए अब हम सभी को यूनीकोड समर्थित सुविधा का प्रयोग शुरू कर देना चाहिए ताकि पूरी दुनियां में हिन्दी कामकाज में एकरूपता लाई जा सके और एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में, एक शहर से दूसरे शहर में एवं दुनिया के किसी भी कोने में हमारी हिन्दी की फाइल खुल जाए । सॉफ्टवेयर/फोंट आदि की समस्या न हो इसलिए एकरूपता लाने के लिये यूनीकोड में काम करने की आवश्यकता है क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय मानक व ओपन टाइप है ।

यदि आपके पास पुराना कोई भी सॉफ्टवेयर है तो उस सॉफ्टवेयर में बनी फाइलों को आसानी से यूनीकोड में कन्वर्ट कर सकते है पुरानी फाइल को कुछ भी नुकसान नहीं होगा। आपके कार्यालय में जो सॉफ्टवेयर उपलब्ध है उसमें आप काम करने में सक्षम है लेकिन सोचिए क्या आपके कार्यालय में या घर का सॉफ्टवेयर यूनीकोड समर्थित है ?क्या आप ओपन टाइप फोंट में काम कर रहे है ? इन सब बातों पर विचार करें और मेरा आपसे अनुरोध है कि भविष्य में आप पूरे विश्व हिंदी में या अपनी मातृभाषा में काम करने के संबंध में एकरुपता लाने के लिए यूनीकोड का ही प्रयोग करें। यूनीकोड में काम करने के लिए कई प्रकार के की-बोर्ड उपलब्ध है जो व्यक्ति पहले से ही किसी भी की-बोर्ड में काम करते है उन्हें यूनीकोड में काम करने के लिए की-बोर्ड बदलने की आवश्यकता नहीं है। इसमें टाइपराइटर, फोनेटिक, इनस्क्रिप्ट, एंग्लोनागरी आदि कई प्रकार के की-बोर्ड्स के द्वारा आसानी से टाइप करना सीख सकते है ।

विंडोज एक्सपी ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनीकोड सक्रिय करने की विस्तृत जानकारी इस प्रकार है :-

1. कंप्यूटर शुरू करने के बाद **Start** में क्लिक करें ।
2. **Start** के बाद **Settings** (सेटिंग) में क्लिक करें ।
3. **Settings** के बाद **Control Panel** में क्लिक करें ।
4. **Control Panel** में क्लिक करने के बाद **Regional & Languages Options** पर क्लिक करें।
5. **Regional & Languages Options** पर क्लिक करने के बाद **Languages** ऑप्शन पर क्लिक करें ।
6. ***Languages*** में क्लिक करने के बाद ***Install files for complex script and right of left languages (including Thai)*** पर सही का निशान लगाकर ***Apply*** पर क्लिक करें ।

यदि आपके कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं से संबंधित फाइलें पहले से लोड नहीं है तो अब आपका कंप्यूटर आपसे **Windows XP Professional** की सी.डी. **CD ROM Drive** में **Insert** करने के लिए पूछेगा। सी.डी. ड्राइव में **Windows XP Professional**

की सी.डी. को डालते ही संबंधित आवश्यक फाइलों को कंप्यूटर स्वत: कॉपी कर लेगा । यदि अपने आप फाइलें कॉपी नहीं होती है तो आप ब्राउज करने के बाद विंडोज एक्सपी की सीडी में **I386 file** का **PATH** दिखा दें । आवश्यक फाइलें लोड होने के बाद कंप्यूटर री-बूट के लिए पूछेगा, कृपया कंप्यूटर को री-बूट करें । ऊपर बताई गई सैटिंग्स आपको पहली और आखिरी बार अपने कंप्यूटर में करनी है । बार-बार सैटिंग करने की आवश्यकता नहीं है.। अब आपका कंप्यूटर भारतीय भाषाओं में काम करने के लिए सक्रिय हो गया है । अब अगला कदम अपनी चुनिंदा भाषा शामिल करने के लिए नीचे दिया गया है ।

कंप्यूटर के री-बूट हो जाने के उपरांत भारतीय भाषाओं में काम करने के लिए अब आपकों उपर्युक्त प्रक्रिया यानी स्टेप 1 से 5 तक को पुन: दोहरानी पड़ेगी । इसके लिए स्टेप 6 ***Details*** विकल्प पर क्लिक करें ।

Details विकल्प का चयन करते ही ***Text Services and Input Languages*** की विंडो खुलेगी जिसमें आप भाषाएं शामिल करने के लिए ***Add....*** बटन पर क्लिक करें। स्टेप 7 के रुप में आप ***Add Input Languages*** की सूची में से ***Hindi*** या जिस भाषा में आप काम करना चाहते हैं, का चयन करें ।

स्टेप 8 के रूप में अब आप ***OK*** व ***Apply*** पर क्लिप करते हुए विंडो से बाहर ***Desktop*** पर आ जाएं । आप पाएंगे कि टास्क बार पर दायीं ओर **EN** अंकित है । इस संकेत से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि आप कंप्यूटर किस मोड में है । आप इस पर क्लिक करते हुए दूसरी भाषा का सीधा चयन कर सकते हैं । यदि आप एक साथ ***Alt*** और ***Shift*** दबाते है तो आपके द्वारा चुनाव की गई भाषा परिवर्तित हो जाएगी । जैसाकि आपने दूसरे सॉफ्टवेयरों में देखा होगा कि **Caps Lock, Num Lock** या **Scroll Lock** को दबाते ही भाषा परिवर्तित हो जाती है। ***Alt*** और ***Shift*** यही काम करता है ।

विंडोज विस्टा, विंडोज-7 और विंडोज-8 ऑपरेटिंग सिस्टम्स में तो पहले से सारी भाषाएं इनबिल्ट हैं। इन तीनों सिस्टम्स में यूनीकोड सक्रिय करने के लिए सी.डी. की भी आपको आवश्यकता नहीं होगी। कंप्यूटर भी सी.डी. की मांग नहीं करता है और न ही री-स्टार्ट करना पड़ता है। ऊपर बताई गई विंडोज एक्सपी की विधि को अपनाकर चेंज की-बोर्ड में जाकर अपनी मनपसंद भाषा का चुनाव कर सकते हैं। इन तीनों सिस्टम्स को भाषाओं में काम करने के लिए सक्रिय कर सकते हैं ।

यदि आपने या माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल्स की फाइल डाउनलोड की है तो आप 9 की-बोर्डों में काम कर सकते हैं । **IME1** या **IME2** के द्वारा आपको 9 की-बोर्डों में काम करने की सुविधा प्राप्त हो जाती है। हम ऐसा नहीं कह सकते कि मै कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं में काम नहीं कर सकता ।

यदि आपने **ildc-in** से यूनीकोड समर्थित की-बोर्ड ड्राइवर डाउनलोड किया है तो आप फोनेटिक इंग्लिश, टाइपराइटर एवं इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड में काम कर सकते हैं । इसमें तीन की-बोर्डो मे काम करने की सुविधा प्राप्त हो जाती है ।

उपरोक्त दोनों वेबसाइटों से आप अपनी इच्छानुसार अपनी पसंद का की-बोर्ड चुनकर अपनी भाषा में काम कर सकते है और की-बोर्ड को डेस्कटॉप पर रख कर माउस की सहायता से क्लिक करके टाइप भी कर सकते हैं ।

– राजेन्द्र प्रसाद वर्मा, सहायक निदेशक
हिंदी शिक्षण योजना, पुणे

शेष अगले अंक में मढ़ें .....

भाषाओं में न्यारी

हिन्दी हमको प्यारी है।
भाषाओं में न्यारी है।।..
सब भाषाओं से अनूठी
लिपि इसकी श्रेष्ठ है,
व्याकरण इसका सीधा-सादा
सबको ही लुभाता है।
हिन्दी हमको प्यारी है।
भाषाओं में न्यारी है।।
अंग्रेजी व्याकरण के जैसे
न पुट-बट का चक्कर है,
सरल है हिन्दी पढ़ना-लिखना
भाषा यह जन-जन की है।
हिन्दी हमको प्यारी है।
भाषाओं में न्यारी है।।
हिन्दी हिन्दुस्तान की आत्मा
हिन्द की यह शान है,
गर्व से अपनाओ हिन्दी भाषा
संपूर्ण देश की यह पुकार है।
हिन्दी हमको प्यारी है।
भाषाओं में न्यारी है।।

राजेन्द्र कुमार च्रोंगू
कार्यालय महालेखाकार, जम्मू

आधुनिक शिक्षा पद्धति में सुधारों की आवश्यकता

"Where is wisdom, we are lost in knowledge;
Where is knowledge, we are lost in information"

शिक्षा में सुधार होना चाहिए लेकिन हमें अपनी पुरातन समय से चली आ रही शिक्षा पद्धति के अच्छे तत्वों को नहीं त्यागना चाहिए और समय की माँग के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करना चाहिए।

सच्ची शिक्षा की पहचान है कि वह मनुष्य के अन्दर विनम्रता लाती है, अहम नहीं, जो आज की शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी कमी है। सच्ची शिक्षा की दूसरी पहचान है- मनुष्य का ज्ञानी होना। आज का शिक्षित, ज्ञानी नहीं विद्वान है और अपनी विद्दता का प्रदर्शन कर-कर के अहम् को बढ़ाता चला जा रहा है जिससे सामाजिक हानि हो रही है। सच्ची शिक्षा की तीसरी पहचान है - समाजिक विकास। अनेकों प्रयास के बावजूद हमारी शिक्षा पद्धति सामाजिक असन्तुलन को दूर करने में असफल रही है। हमारा समाज जाति, वर्ग, भाषा आदि के नाम पर अभी भी बँटा हुआ है। हमारे राजनेता अभी भी इन भावनाओं को भड़का कर चुनावी राजनीति करते है।

सच्ची शिक्षा की चौथी पहचान है - आर्थिक विकास। अभी भी हमारे देश में 70 प्रतिशत लोग गरीब व 30 प्रतिशत लोग अमीर है। गरीबों और अमीरों में बहुत बड़ी खाई है। सरकार की उदारीकरण नीति ने इस खाई को और गहरा किया है।

उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि हमारी शिक्षा पद्धति में सुधार की आवश्यकता है। हम अमेरीका की त्यागी गयी नीतियों की नकल करते हैं चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या अनुसंधान का। क्या आज की शिक्षा हमारे अन्दर विनम्रता का गुण पैदा करने में सक्षम है ?जवाब आयेगा - नहीं ।

तो किस प्रकार का सुधार होना चाहिए ?हमें गुरूकुल परम्परा के मूल गुणों को अपनाना होगा । हमें सच्चे गुरूकुल की स्थापना करनी होगी या आज के शिक्षा केन्द्रों को गुरूकुल में बदलना होगा। गुरू एवं शिष्य की परम्परा को लागू करना होगा। भारत को अपने विश्व गुरू के सम्मान को वापस लाना होगा। तक्षशिला एवं नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।

इसके लिए हमें चरित्र निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाना होगा। स्कूलों एवं कालेजों में प्रार्थना के स्थान पर ध्यान व योग की गुरूआत करनी होगी। यहाँ पर भगवान बुद्ध द्वारा खोजी गयी आनापान व विपश्यना की साधना अत्यन्त कारगर सिद्ध होगी।

→ क्या आज का शिक्षित ज्ञानी है ?

जवाब आयेगा - नहीं ?

आज की शिक्षा प्रणाली रटकर अच्छे अंक प्राप्त करने पर जोर देती है न कि कान्सेप्ट्स को समझने पर।

जब हम चीजों को समझेंगे ही नहीं तो अपने जीवन में लागू कैसे करेंगे ?

हमें ऐसी शिक्षा पर जोर देना होगा जो व्यक्ति को ज्ञानी बनाये न कि विद्वान ।

जीवन से जुड़ी समस्याओं को विषयों में लाना होगा और उन विषयों को सही ढंग से प्रस्तुत करना होगा वरना जो रंग चढ़ गया, उसे उतारना मुश्किल होगा।

→ क्या आज की शिक्षा से सामाजिक विकास हो रहा है ?

जवाब आयेगा - नहीं ?

हमारा सिर्फ एक सम्प्रदाय होना चाहिए - ''भारतीय ''

हमारी सिर्फ एक भाषा होनी चाहिए - ''हिन्दी''

तभी सामाजिक विकास होगा। सामाजिक विकास होगा तो समन्वित आर्थिक विकास होगा ही।

→ क्या आज की शिक्षा से सही आर्थिक विकास हो रहा है ?

जवाब आयेगा - नहीं ?

उदारीकरण के कारण सही एवं उचित आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा है । गरीब और गरीब, अमीर और अमीर होता जा रहा है। गरीब और अमीर के बीच की खाई को कम करना होगा।

यह सर्वविदित है कि टैलेन्ट, गरीब तबके से निकलक आता है ।

अन्त में,

''शिक्षा से मान बढ़े;
ऐसा प्रयास होना चाहिए।
शिक्षा से आन बढ़े;
ऐसी राह होनी चाहिए।।''

-राकेश 'मन्जर'
(स्व रचित नवनीत)
(तत्क्षण रचित 12.30/7.09.2009)

श्री राकेश सिंह बिसेन
पुस्तकालय अधिकारी,
आइ.आइ.आइ.एम., जम्मू

गीत

मैने एक सुमन माँगा था, तुम फूलों का हार दे गए।

मैने तो निर्झर माँगा था, तुम गंगा की घाट दे गए।।

स्वर्ग उतर आया धरती पर जिस दम कोमल हाथ बढ़ाए।

भर जो गए सिदूंर माँग में जीवन का श्रंगार दे गए।।

उठे गगन से ऊँचे सपने झिलमिल झिलमिल चमके तारे।

हिलमिल हिलमिल कर रहने का प्रेम भरा संसार दे गए।।

अरमानो के मुक्ताओं में मधुर प्रेम के तार पिरोए।

रोम-रोम को पुलकित करके मधुमय मस्त बहार दे गए।।

आशाओं के महल बनाकर प्यासे मन की प्यास बुझाई।

मैने कब इतना माँगा था जितना मुझको प्यार दे गए।।

देखूँ पथ में पलक पसारे आते होंगे प्रियतम प्यारे।

वरस मास सारे दिन बीते, इतना मुझे करार दे गए।।

मैने एक सुमन माँगा था, तुम फूलो का हार दे गए।

मैने तो निर्झर माँगा था, तुम गंगा की घाट दे गए।।

सुमन सोलंकी

जब तक देश का राज-काज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज्य है।

- मोरारजी देसाई

मानक हिन्दी ग़जल

1. मानक हिन्दी ग़जल (हिन्दी कवी और कविता)
संस्कारों से सजी शब्दावली हूँ, सत्य के सन्दर्भ की ग्रंथावली हूँ।
टिप्पणी, आलेख हस्ताक्षर मिलेंगे, मै समय के छंद की पत्रावली हूँ...
मुझमें जगनिक, मुझमें भूषन, मुझमें चन्द्रबरदाई बसे,
वीर गाथा काल की विरुदावली हूँ
नीति की मीमांसा, व्याख्या करूँगा, संत तुलसी दास की दोहावली हूँ.
बादशाहों ने झुकाए सर जहाँ पर, मै फकीरों की वही वंशावली हूँ
जो कबीरा, सूर की नगरी में रम रहा, मै उसी साहित्य का वाहिद अली हूँ..
2. नजीर है हिंदी, तीन छंद ....
बच्चन मन की मदिरा, महादेवी की अमृत धार है हिंदी.
पनूत की कोमल भावना है, कहीं संत निराला का प्यार है हिन्दी.
गुप्त, प्रसाद ने समजा जिसे वह टंडन जी का विचार है हिन्दी.
ध्यान से कान लगाओ सखे, इस देश की एक पुकार है हिन्दी.
जात का भेद नहीं करती वह पावन गंगा की नीर है हिन्दी.
नूरमोहम्मद, शेख-नबी और मंझ्हन की तहरीर है हिन्दी.
देश को प्रेम से बांध रही, वह एकता की जंजीर है हिन्दी.
वाहिद से यह छंद लिखा रही, आज भी एक नजीर है हिन्दी.
देश को जात में बाँट रहे, उनसे सद्भाव की आशा न होगी.
रसखान रहीम के वारिस हैं, हमसे कभी कोई निराशा न होगी,
भाषा के नाम पे देश बटे, इससे भी गिरी अभिलाषा न होगी,
स्वागत है सबका घर में, पर राष्ट्र की दूसरी भाषा न होगी ...
3. कविता तीन---मौला अली बजरंग बली
जग पूजा अंजान में भेद न हो, खिल जाती है भक्ति की प्रेम कली,
रहमान की, राम की एक सदा, घुलती मुख में मिस्री की डाली.
जब संत फकीरों की राह मिली, सब भूल गए पिछली-अगली.
मिया वाहिद बोलते मोला अली-बजरंगबली बजरंगबली.
जेठ की धूप में चैन मिले, बरसे जो मोहब्बत की बदली.
बदली बरसे जब राम गली, खुश हो के चलें रमजान अली,
रमजान अली नवरात्री जागें, अफ्तार कराते है राम बली.
तब वाहिद बोलते मौला अली बजरंग बली बजरंग बली ।

वाहिद अली वाहिद,
लखनऊ (उ.प्र.)

हिन्दी की सार्थकता एवं संभावनाएँ

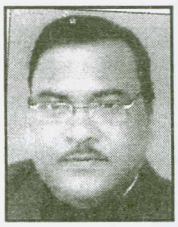

किसी भी देश की पहचान राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान एवं राष्ट्रभाषा से होती है। 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिलने के उपरान्त हमारे लोकनायकों ने संविधान बनाते समय इन्हीं तीन आवश्यकताओं का अनुभव क़िया। राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का निर्धारण हो गया तथा 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा घोषित की गयी और जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रान्तों में 14 प्रादेशिक भाषाएं स्थापित की गयीं। उस समय 15वीं भाषा के रूप में अंग्रेजी को रखने का प्रस्ताव आया, जिसे संविधान निर्माताओं ने अस्वीकार कर दिया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में चलते रहने की व्यवस्था की गयी तदनन्तर 26 जनवरी 1965 के पश्चात यह प्रस्ताव पारित किया गया कि- "हिन्दी सभी राजकीय प्रायोजनों के लिए प्रयुक्त होगी परन्तु इसके साथ-साथ अंग्रेजी भी सहराजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती रहेगी।" बिडम्बना है कि आजादी के 65 वर्ष व्यतीत होने के बाद भी हम यह निर्णय नहीं कर सके हैं कि हमारे देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा क्या है ? यदि गणतंत्र भारत का एक राष्ट्रगान, एक राष्ट्रध्वज है तो उसकी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं होनी चाहिए ?

संसार में किसी भी भाषा का जन्मदिन नहीं मनाया जाता किन्तु हमारे यहाँ 14 सितम्बर का दिन भाषा दिवस के रूप में सारा देश मनाता है। ये दिवस राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता को अनुभव करने एवं भाषायी न्याय प्राप्त करने का संकल्प दिवस है। जिन प्रान्तों में हिन्दी के विरोध की बात कही जाती थी, वह विरोध अब जनमानस में दिखाई नहीं देता। आज दक्षिण भारत में हिन्दी वहाँ हिन्दीभाषी क्षेत्रों में अंग्रेजी के प्रति व्यामोह बढ़ रहा है। हिन्दी का अस्तित्व अंग्रेजी या अन्य भाषाओं से नहीं है। अंग्रेजी भी अस्तित्व में रहे और विकास करे, अन्य भाषाएँ भी अस्तित्व में रहें और विकास करें लेकिन हिन्दी को स्वाभिमान के साथ राष्ट्रभाषा का स्थान और प्रतिष्ठा इस कारण मिलनी चाहिए कि हिन्दी एक समृद्ध और सशक्त भाषा है। इसकी अपनी शब्द सम्पदा, व्याकरण व लिपि है जिसमें समस्त भारतीय भाषाओं को आत्मसात किया जा सकता है। अंग्रेजी, फ्रेंच, उर्दू आदि अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की इसमें प्रवृत्ति है। वैज्ञानिक, इंजीनियरी, प्रौद्योगिकीय, नाभिकीय आदि को अभिव्यक्त करने की अपार क्षमता है। हिन्दी बोलने का एक वैज्ञानिक आधार है। इसमें जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी हिन्दी को सक्षम मानते हुए इसी धारणा को व्यक्त किया था -

हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा हो हिन्दी ही बन सकती है। क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को भी नहीं मिल सकता।"

आज हिन्दी, अंग्रेजी की तरह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। विश्व में 90 करोड़ से भी अधिक लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। अमेरिका में 25 लाख से अधिक जनसंख्या हिन्दी वालों की है। पाकिस्तान, बंगला देश, फिजी, मारीशस, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, नैपाल, भूटान, तिब्बत, वर्मा, अफ़गानिस्तान तथा मध्य एशिया के देशों में लाखों लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। सूचना और प्रौद्योगिकी में भी हिन्दी ने अपने को स्थापित कर लिया है। इण्टरनेट पर हिन्दी से सम्बन्धित लाखों बेवसाइटें हैं।

सत्यता यह है कि भले ही अपने देश में इसको राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिला किन्तु इसकी पहवाह किए बिना हिन्दी का रथ निरन्तर आगे बढ़ता चला जा रहा है। भूमण्डलीकरण, विश्व बाजार व्यवस्था और उदारीकरण के इस दौर में हिन्दी अपनी उदारता एवं सारग्राही प्रवृत्ति के काण विश्व बाजार की भाषा बनती जा रही है। हिन्दी का सहारा लेन को बहुराष्ट्रीय कम्पनियां बाध्य है क्योंकि उन्हें अपना माल बेचना है। विश्व बाजार ने हिन्दी की शक्ति को पहचाना है। प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, सिनेमा तथा सभी चैनल हिन्दी की ओर उन्मुख हुए हैं। मनोरंजन, उद्योग क्षेत्र, जनसंचार, अनुवाद, विज्ञापन, प्रबन्धन विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, खेल जगत, बैंकिंग, बीमा आदि क्षेत्रों में हिन्दी की अपार संभावनाएं हैं। आज हिन्दी को दुनिया के लोग गले लगा रहे हों, संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान मिलने वाला हो, सबके हृदय में स्थान बना चुकी हो, तो फिर हम भारतवासी कब इसकी सार्थकता, संभावना और शक्ति को समझ सकेंगे ।

डॉ. राकेश सक्सेना
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
जवाहर लाल नेहरू (पी.जी.) कालेज, एटा (उ.प्र.)

छोटी-छोटी बातें भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती हैं?

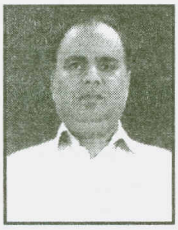

आज सम्पूर्ण मानव सभ्यता में भ्रष्टाचार रूपी असुर किसी न किसी रूप में समाज पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ रहा है। समाज से जुड़े वे लोग ही जो अपने को सर्वथा निर्मल और पवित्र मानते है वे भी अपने व्यवहार से हमारे समाज को भ्रष्टाचार के दलदल में छोड़ देते है भ्रष्टाचार का सीधा सा अर्थ भ्रष्ट आचारण से है चाहे वो आर्थिक आचरण हो या सामाजिक। ऐसे बहुत से उदाहरण हमारी दैनिक क्रियाओं में मिल जाते हैं जिन्हें यदि हम गहराई से देखते है तो वो भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही रखे जाते है इसे इस प्रकार समझा जा सकता है। जैसे कि एक व्यक्ति अपने कार्यालय में निर्धारित समय से न पहुंचकर औसत एक घंटा लेट और एक घंटा पहले ही कार्यालय छोड़कर चला जाता है सामान्य लोगों की दृष्टि में यह व्यवस्था का दोष ही माना जाता है परन्तु यदि हम उस कर्मचारी या अधिकारी के इस आचरण को भ्रष्टाचार की कसौटी पर नापने लगते है तो वह व्यक्ति भी भ्रष्टाचार की परिधि में ही आता है उदाहरण के लिए एक व्यक्ति का मासिक वेतन तीस हजार रूपये है उसे श्रम नियमों के अनुसार आठ घंटे के कार्य के लिए प्रतिदिन लगभग एक हजार रूपया मिलता है लेकिन वह व्यक्ति केवल छः घंटे कार्य करता है और दो घंटे कार्यालय में देर से आने व जल्दी जाने में व्यतीत करता है इस प्रकार उसे आठ घंटे की अवधि के लिए 125 रूपये प्रति घंटा वेतन मिलता है लेकिन वह प्रतिदिन 750 रूपये का ही कार्य करता है और दो घंटे का वेतन वह बिना काम किये ही प्राप्त करता है इस प्रकार यदि महीने में बीस कार्य दिवस हैं तो वह महीने में 5000 रूपये का भ्रष्टाचार करता है और वर्ष में 60 हजार रूपये का भ्रष्टाचार करता है यदि ऐसे किसी व्यक्ति ने तीस साल का सेवा कार्य किया है तो उसने अपने सेवाकाल के दौरान 18 लाख रूपये भ्रष्टाचार के माध्यम से कमाया है। जबकि वह अपने को बिल्कुल भ्रष्टाचार मुक्त मानता है लेकिन वास्तविकता से वह दुर है क्योंकि वह भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही रखा जायेगा।

और भी बहुत सारे उदाहरण हमारे समाज में है जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। जैसे एक अधिकारी जो किसी विभाग का प्रमुख है और उसे किसी विषय के ऊपर अन्तिम निर्णय अन्तिम तारीख तक लेना था परन्तु उसने आलसवस अथवा अज्ञान्ता के कारण सही समय पर निर्णय नही लिया जिससे उसकी इस अनिर्णय की स्थिति से उसके कार्यालय को दस लाख रूपये का नुक्सान हो जाता है। परन्तु किसी अन्य को इस स्थिति का ज्ञान नहीं होता है और वे उस अधिकारी को बहुत ही ईमानदार मानते हैं परन्तु उस व्यवहार ने उस कार्यालय को जो नुक्सान पहुँचाया है उसके लिए वह व्यक्ति ही जिम्मेवार है और वह भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है क्योंकि उसके निर्णय न लेने से कार्यालय को जो नुक्सान हुआ है उसका फायदा किसी अन्य को पहुँचा है इसलिए मेरे विचार में यह भी भ्रष्टाचार की कोटि में आता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रायः बहुत से कार्य जिन्हें सामान्य मानते है लेकिन वे धीरे-धीरे बहुत बड़े भ्रष्टाचार को जन्म देने वाले बन जाते है। इसलिए हमें इस बात पर भलीभाँति विचार करना चाहिए कि हम मन वाणी और कर्म से भ्रष्टाचार मुक्त हों। तभी हमारे व्यवहार को अच्छे आचार की श्रेणी में रखा जा सकता है।

अशोक कुमार दीक्षित
वरि. प्रबंधक
श्री गांधी सेवा सदन, जम्मू

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

- सुभाष चन्द्र बोस

चिंतन

मातृभाषां परित्यज्य, ये अन्य भाषामुपासते,
तत्र यान्ति हि ते देशाः यत्र सूर्यो न भासते।

अर्थात् जो अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य भाषा का आश्रय लेते हैं, ऐसे देश (राष्ट्र) का जीवन सदा के लिए अंधकारमय हो जाता है और वहां कभी स्वतंत्रता का, ज्ञान का सूर्य उदय नहीं होता है।

भाषा मनुष्य के संप्रेषण का प्रथम सोपान है। विश्व के सभी विकसित एवं उन्नत देश अपने देश की भाषा में ही वार्तालाप करते हैं एवं सभी कार्य भी अपनी ही भाषा में करते हैं। भारत की परम्परा आदि काल से ही मातृभूमि, मातृशक्ति तथा मातृभाषा की बंदना करती आ रही है। भारत की अस्मिता यहां की समर्पण की पवित्र भावना का ही प्रतीक है। मातृभूमि तथा मातृशक्ति के प्रति जो हमारी निष्ठा है, वही आदर हम अपनी मातृभाषा के प्रति भी हृदय में संजो कर रखते हैं।

भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा का मुद्दा आजादी के बाद से अत्यंत संवेदनशील रहा है। विभिन्न भाषाओं और बोलियों के देश में प्रत्येक समुदाय / प्रत्येक राज्य की यह प्रबल अभिलाषा रहती है कि उनकी भाषा को राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिले तथा भाषा के विकास के लिए सकारी अनुदान प्राप्त हो। अतः भाषा की प्रतिष्ठा का प्रश्न अब शनैः - शनैः अपनी भाषा को अपनी आठवीं अनुसूची में पहले 14 भाषाओं को मान्यता दी गई थी, जो धीरे-धीरे बढ़कर 22 भाषाएं हो चुकी हैं और अभी भी गृह मंत्रालय मे कई और भाषाओं को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के प्रस्ताव विचाराधीन हैं। यदि इस आलोक में संपूर्ण भारतीय राजनीतिक परिदृश्य का अवलोकन करें, तो पायेंगे कि भाषा को लेकर समूचे देश में कोई न कोई आंदोलन चल रहा है।

किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की आधार शिलाएं - कोई भी स्वतंत्र, स्वाधीन, गणतांत्रिक राष्ट्र को चार चीजों की अत्यंत आवश्यकता होती है। उसका अपना संविधान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान और उसकी अपनी राष्ट्रभाषा होती है। आज पूरे विश्व मे हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। हमारे विशाल देश में विभिन्न भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं। हमारी समस्त भाषाएं साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध हैं, लेकिन देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिंदी ही रही है। अतः 14 सितम्बर, 1949 को संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया गया था। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हमारा संबैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। हम सभी जानते हैं कि जिस देश में अपनी भाषा को अपने शासन, प्रशासन ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा बनाया, उस देश ने अपना तीव्र गति से विकास किया है। जापान, चीन, फ्रांस और जर्मनी आदि देश इसके उदाहरण हैं।

किसी भी देश की भाषा उसकी अस्मिता की पहचान होती है। भाषा ही परम्परा, सांस्कृतिक धरोहर और समाज में विचारों व ज्ञान-विज्ञान के संचार का साधन होती है। आज का युग संचार क्रांति और कंप्यूटर का युग है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब वैश्वीकरण का दौर पुरजोर है, भारत - जैसे बहुभाषी देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी की व्यापकता आवश्यक हो चली है। हिन्दी केवल राजभाषा या जनभाषा नहीं बल्कि विश्व बाजार की प्रमुख भाषा बन चुकी है। आज सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों की मानसिकता में एक सकारात्मक बदलाव लाना तथा उनके कामकाज मे हिन्दी का प्रयोग बढ़ाते हुए इसके देश व्यापी प्रसार की दिशा में गंभीर और ठोस कदम उठाना आवश्यक हो गया है। यह प्रयास तब सफल होगा जब उनको समय-समय पर पेरित और प्रोत्साहित किया जाता रहे।

राजभाषा हिन्दी के उन्नयन और प्रसार के इस अनुष्ठान में योगदान निश्चय ही राष्ट्रीय सौहार्द और अखंडता का परिचायक होगा। इस भाषा का उन्नयन और प्रसार तथा इसका अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना प्रत्येक भारतीय का नैतिक और संबैधानिक दायित्व है। संघ की राजभाषा हिन्दी को देश के कोने-कोने में फैलाने, जन-जन को इसका ज्ञान कराने एवं इसका अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करने की दिशा में सरकारी विभागों, संगठनों और संस्थानों द्वारा अनवरत प्रयास जारी है, ताकि शीघ्र ही हिन्दी इस देश की राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो सके और इसे विश्व पटल पर उचित सम्मान प्राप्त हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि इस दिशा में सरकारी और स्वैच्छिक संगठनों द्वारा किए जा रहे प्रयासों में एक समन्वय एवं विचारों का परस्पर आदान-प्रदान हो। इससे राजभाषा हिन्दी के उन्नयन तथा प्रचार-प्रसार के कार्य में संलग्न स्वैच्छिक संगठनों की विशिष्टताओं का लाभ उठाते हुए सरकारी संगठनों

और संस्थानों में कार्यरत अधिकारियों व कार्मिकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

हिन्दी हमरी सामासिक संस्कृति की वाहिका भी है। हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त भारत की सामासिक संस्कृति ने पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। हमारे देश की संस्कृति का प्रभाव आज अनेक देशों में स्पष्ट झलकता दिखाई देता है। अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में प्रचलित हिन्दी आज स्वयं ही भारत की सामासिक संस्कृति का एक हिस्सा सा बन गई है तथा विद्वानों, भाषाविदों व मनीषियों के साथ-साथ अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने इसे सहज ही अपना लिया है और वे इस भाषा में कार्य-व्यवहार के लिए अग्रसर हैं। आज हिन्दी भाषा ने विश्व पटल पर न केवल अपनी पहचान बनाई है, बल्कि देश को भी एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। इसलिए हम देशवासियों को चाहिए कि हिन्दी का सम्मान करते हुए इसके उन्नयन, संवर्द्धन और प्रसार में अपाना योगदान दें। संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने के कारण इस भाषा के प्रति हमारा दायित्व और भी बढ़ जाता है।

राजभाषा हिन्दी के उन्नयन और प्रचार-प्रसार की दिशा में अग्रसर रहते हुए संस्कृति और भाषा के परस्पर संबंध और महत्व की पृष्ठभूमि मे हिन्दी के विकास और प्रसार की संभावनाओं को तलाशने एवं इस दिशा में ठोस कदम बढ़ाने की प्रेरणा देने का प्रयास किया है। मातृभाषा का स्वरूप भारत में विभिन्न बोलियों, भाषाओं तथा सांस्कृतिक कारणों से अलग है, किन्तु यह भी शाश्वत सत्य है कि भारत की समस्त भाषाएं हमारी राजभाषा हिन्दी की ही शाखाएं हैं जो प्रेमवत तथा स्नेहवत सबको अपने आप में निहित किए हुए है।

यह चिंतन और विचारों के मंथन की बात है कि आज भी हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में हम कहाँ तक सफल हो पाए हैं। जब तक प्रत्येक कार्मिक अपने कार्यालयीन कार्यों में दिल से हिन्दी को नहीं अपनाते है, अपनी मानसिकता नहीं बदलते हैं, तब तक पूर्ण रूप से अपना कार्य हिन्दी में करने से असमर्थ रहेंगे और नियमों की व्यवस्था का पेट भरने के लिए हिन्दी विभाग पर निर्भर रहेंगे तब तक हिन्दी मात्र अनुवाद की भाषा ही बनी रहेगी और हिन्दी में कार्य मंद गति से होगा।

सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग हो, इसके लिए वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पहल की जानी एवं उचित वातावरण सृजित किए जाने की अत्यंत आवश्यकता है। कोई भी प्राणी सर्वप्रथम अपनी भाषा में ही सोचता है और उसके बाद अन्य भाषा में रूपांतण करता है। जितने अच्छे सुसंगत और सटीक विचार अपनी भाषा में उभर कर सामने आते है उतने सटीक और व्यावहारिक विचार दूसरी भाषाओं में नहीं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पदपर उचित स्थान दिलाने के लिए हमें अभी भी न जाने और क्या-क्या करना पड़ेगा। कितने और हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़े/हिन्दी कार्यशालाएं/हिन्दी सम्मेलन करने होंगे। हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए और कितना इंजलार करना होगा। भाषायी चिंतन तथा परस्परता की यह अविरल धारा निरंतर प्रवाहमान है, इसी प्रवाह की शीतल, पवित्रता तथा सुवासिता को एक बार पुन: संजोकर हम आपके सामने उपस्थित हैं। इस विशाल पावन यज्ञ में एक संक्षिप्त आहूति - एक छोटा सा प्रयास और इन प्रयासों में हम कहाँ तक सफल हुए हैं, इस पर आपके विचारों / भावनाओं की हमें उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी।

सुभाष चन्द शर्मा,
वरि. राजभाषा अधिकारी,
पावर ग्रिड, क्षे.मु., जम्मू

भारतीय संस्कृति

किसी भी देश की संस्कृति क्या है ?

किसी भी देश की संस्कृति का अर्थ उस देश की आत्मा से होता है। संस्कृति का संबंध उस देश के रीति-रिवाज़ , प्रथाएँ, परम्पराएं, रहन-सहन, चाल-चलन, भाषा-बोली, तीज-त्योहार, वेश-भूषा, आचार-व्यवहार, पूजा-पाठ के तौर तरीके, कला, साहित्य, धार्मिक कृत्य तथा चिन्तन-मनन से है। संस्कृति देश, काल, समाज, या व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्व या छवि की परिचायक होती है। मनुष्य के सम्पूर्ण कार्यकलाप - बाह्य एवं आभ्यंतर - उसकी संस्कृति से ही प्रभावित एवं नियंत्रित होते हैं। उसी ढंग से वह अपना सारा जीवन-यापन करता है। यद्यपि वर्तमान समय में सूचना के त्वरित आदान-प्रदान के कारण समूचा विश्व सिमट कर एक छोटी सी बस्ती के रूप में परिवर्तित हो गया है और इस कारण विश्व के अलग-अलग राष्ट्रों की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में भी खूब तालमेल हुआ है, परन्तु फिर भी मनुष्य के आचार-व्यवहार में कहीं न कहीं

उसके देश की संस्कृति का दिग्दर्शन हो ही जाता है। संस्कृति से उन सब संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे कोई भी देश अपने सामाजिक जीवन के आदर्शों का निर्माण करता है ।

संस्कृति और सभ्यता में भेद

साधारणत: लोग संस्कृति का प्रयोग सभ्यता के अर्थ में करते हैं। सभ्यता और संस्कृति सर्वथा असम्बद्ध न होते हुए भी एक दूसरे से भिन्न हैं। संस्कृति आभ्यांतर और सभ्यता बाह्य तत्त्व है। संस्कृति सभ्यता को जन्म देती है। एक सुसंस्कृत व्यक्ति ही सभ्य हो सकता है। संस्कृति को अपनाने में देर लगती है, परन्तु सभ्यता की तत्काल नकल की जा सकती है। कोई भी भारतीय कोट-पैंट पहन सकता है, अँग्रेजी बोल सकता है, यूरोपियन ढंग से बँगलों में रह सकता है और बर्थ-डे पार्टियों में केक काट सकता है, फिर भी उसका सांस्कृतिक स्तर अँग्रेजों जैसा हो जाए, यह आवश्यक नहीं है। धोती-कुर्ता पहन लेने, जमीन पर बैठकर दाल-रोटी खाने, घास-फूस की झोपड़ी में रहने और गंगा स्नान कर लेने से भारतीय संस्कृति का रंग नहीं चढ़ जाता। यद्यपि संस्कृति का सम्बन्ध धार्मिक विश्वासों से अवश्य होता है, तथापि यह जरूरी नहीं है कि ऐसे लोगों की संस्कृति एक ही हो। बंगलादेश के मुसलमानों की संस्कृति पाकिस्तान, ईरान, ईराक आदि अरब देशों की संस्कृति से भिन्न है। उनकी संस्कृति पश्चिम बंगाल के हिन्दुओं की संस्कृति से अधिक मेल खाती है। इसके विपरीत यूरोप में रहने वाले ईसाई, यहूदी, मुसलमान लोगों की संस्कृति प्राय: एक सी है, यद्यपि वे लोग भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायी हैं। अत: यह कहना उपयुक्त होगा कि संस्कृति समष्टिगत समान अनुभवों से उत्पन्न होती है। एक ही जलवायु और वातावरण तथा भौगोलिक स्थिति में पले-बढ़े लोगों के चित्तों का झुकाव प्राय:एक सा ही होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि सभ्यता की अपेक्षा संस्कृति का दायरा बहुत व्यापक होता है। सभ्यता संस्कृति का एक अंग हो सकती है।

भारतीय संस्कृति :

भारतीय संस्कृति ने अपने को धर्म, वाड़मय, चित्रकला और मूर्तिकला के रूप में व्यक्त किया है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार- ''आध्यात्मिक'' है। इस तथ्य को स्वामी विवेकानन्द ने इस तरह समझाया था - यदि पश्चिम के लोगों के सामने कोई नई योजना रखी जाती है तो उनका पहला प्रश्न यह होता है - ''क्या इससे मेरी आय में वृद्धि होगी'' ? भारतीय ऐसे अवसर पर यह पूछता है -''क्या यह जनकल्याण के लिए है'' या ''क्या इससे मोक्ष मिलेगा''। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यहाँ सब लोग विरक्त, तपस्वी और मुमुक्षु हैं। भाव केवल इतना ही है कि हमारी सामूहिक आत्मा का झुकाव आध्यात्मिकता की ओर है। हम समस्याओं/प्रश्नों को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति एक विशेष प्रकार का दृष्टिकोण है - "A Special type of Approach to Life" संसार इसे मानववाद - Humanism भी कहता है। विश्वबन्धुत्व की भावना इसी संस्कृति की देन है। ''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:'' की लोकोपकारी कामना इसी संस्कृति में निहित है। इसके प्रेरक तत्त्व हैं - सत्य, प्रेम, करुणा, परोपकार, क्षमा, अहिंसा, सहिष्णुता, त्याग और इन्द्रियनिग्रह है। इसका एकमात्र उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति है। भारतीय संस्कृति के आधार पर जो जीवन-प्रणाली निर्मित हुई है, उसी प्रगति आध्यात्मिकता की ओर, पूर्णत्व की ओर, ईश्वरत्व की ओर है। भारतीय जीवन का लक्ष्य होता है - ईश्वर को अपने कर्म समर्पित करते हुए मोक्ष (परमशान्ति) की प्राप्ति। भारतीय संस्कृति की उदारता और सहिष्णुता विलक्षण है। इसमें विश्व की सभी संस्कृतियों, धर्मों और सभ्यताओं को आदरपूर्वक अपने में समाहित कर लेने की अद्वितीय क्षमता है। यह सभी जड़-चेतन वस्तुओं में ईश्वर के रूप को देखती है और उसके प्रति, प्रेम, करुणा और मैत्रीता की भावना प्रदर्शित करती है। जियो और जीवन दो - इसका उद्घोष मंत्र है। भारतीय संस्कृति भोगपरक न होकर त्यागमूलक है।

भारतीय संस्कृति के तीन उदात्त पहलू हैं - अर्पण, तर्पण और समर्पण । समाज के प्रति अर्पण की भावना, पितरों के प्रति तर्पण की भावना तथा ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना इस संस्कृति की देन है। भारतीय एक शुद्ध वैज्ञानिक वृत्ति है। इस संस्कृति पर आधारित समाज-व्यवस्था में समाज के अन्तिम हित की भावना प्रधान थी। भारतीय संस्कृति केन्द्रोन्मुखी है। वह जगत में रहकर भी आदर्शोन्मुख है और बाहर रहकर भी अन्त:स्थ / आत्मस्थ है। इसी कारण भारतीय संस्कृति आचरण प्रधान हुई। उसमें समाज की प्रत्येक ईकाई से आत्मशुद्धि की आशा पहले की गई, उसमें व्यक्ति के जीवन को त्याग की ओर प्रेरित किया गया, क्योंकि त्याग तथा आत्मनियंत्रण के बिना समाज के घटकों में सच्चे समाज कल्याण की भावना और तंदनुंकूल आचरण का होना कठिन है।

हमारी संस्कृति की धारा है - तमसो मां ज्योतिर्गमय, असतो मां सदगमय और मृत्यो मां अमृतं गमय। जीवन की सार्थकता त्याग में, आत्मार्पण में, अपने को देने में है - यही भारतीय संस्कृति का संदेश है ।

उमेश गुप्ता
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

मानवमात्र के प्रति देशभक्ति, भ्रातृभाव से श्रेयस्कर है

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि मानव मात्र के प्रति भ्रातृभाव आवश्यक है किन्तु यह भ्रातृभाव कभी भी किसी भी रूप में देशभक्ति से श्रेयस्कर नहीं है। प्रत्येक प्राणी को अपने देश, आवास तथा जन्मस्थान से बहुत प्यार होता है। देश से ही मानव की पहचान होती है। उसकी संस्कृति, सभ्यता, उच्च आदर्श, नियम, सिद्धान्त का परिचायक उसका देश ही होता है।

राष्ट्र हमारी अमूल्य संपत्ति है। उसके प्रति श्रद्धा, भक्ति प्रकट करना तथा उसकी पूजा अर्चना करने के लिए ही मंदिर, धर्म ग्रंथ, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान आदि प्रतीक बना लेते हैं। इन सभी के प्रति आदर भाव रखने का अभिप्राय देश-प्रेम के भाव को पुष्ट एवं विकसित करना है। वंदे मातरम, जय हिंद आदि उद्घोष भी हमारे देश प्रेम की परिचायक है। जो मनुष्य अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सचेत नहीं रहता और उसके प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करता उसे मनुष्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता । राष्ट्र कवि मैथिलिशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।"

कुछ लोगो का मानना है कि मानवमात्र के प्रति भ्रातृप्रेम देशक्ति से श्रेयस्कर है मैं उनसे एक बात कहना चाहती हूँ कि मानव को मानवीय गुणों की पहचान उसे अपनी संस्कृति, सभ्यता, शास्त्रों, धार्मिक ग्रंथों और उत्कृष्ट साहित्य से होती है। अत: मानवमात्र के लिए भ्रातृभाव से देशभक्ति ज्यादा महत्व रखती हैं। मानव को अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों की पहचान संविधान से प्राप्त होती है और संविधान का सीधा संबंध देश या राष्ट्र से ही होता है।

देशभक्ति एक पवित्र भावना है। जिस धरती के अन्न, जल से यह शरीर बनता एवं पुष्ट होता है उसके प्रति भक्ति भावना रखना प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है। भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, रानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गांधी, जैसी अनेक विभूतियों ने देशभक्ति के कारण ही अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। मानवमात्र के कल्याण के लिए ही इन महान विभूतियों ने निजी स्वार्थो से ऊपर उठकर मानव के उच्च आदर्शो को प्रस्तुत किया।

देशभक्ति राष्ट्रीय ध्वज को प्रदर्शित करने, राष्ट्रगान गाने या जन-जन रैली में भाग लेने पर निर्भर नहीं करती अपितु सामाजिक समूह के प्रति वफादारी होती है। देशभक्ति समुदाय एवं मानवमात्र के प्रति प्यार पर निर्भर करती है।

श्री रामनरेश त्रिपाठी ने ठीक ही कहा है -

'विषुवत् रेखा का वासी जो, जीता है हांफ-हांफ कर। रखता है अनुराग अलौकिक वह भी अपनी मातृभूमि पर।। ध्रुव वासी जो हिम में, तम में, जी लेता है कांप-कांपकर। वह भी अपनी मातृभूमि पर कर देता है प्राण निछावर।।'

अत: हम भी यही कह सकते है कि मानवमात्र के प्रति भ्रातृभाव अपेक्षित तो है लेकिन देशभक्ति से श्रेयस्कर नहीं हो सकता।

कु0 दिव्या
बीएससी, पार्ट-।।
महिला डिग्री कॉलेज, गांधी नगर, जम्मू

भाषा का भौतिक विज्ञान और शैली

भाषा के अध्ययन का सबसे पहले प्रारम्भ भारत बाद में यूनान के प्रतिभाओं को मिला। चॉमस्की अपने नये सिद्धान्त को अभ्यान्तरवाद नाम देते हैं। उन्होंने भाषा को बायोलॉजिकल या जैविकी उत्पाद बताया है जिस प्रकार हम प्रत्येक प्रकृति विज्ञान का विश्लेषण करते है, उसी प्रकार हमें विज्ञान का भी अध्ययन करना चाहिए। चॉमस्की की इस प्रकृतिवादी स्थापना से ध्वनि यह निकलती है कि भाषा का भी विज्ञान ठीक वैसा ही है जैसे कि भौतिक विज्ञान। लेकिन यह नहीं चॉमस्की यह भी कहते हैं कि इस भौतिकी या भौतिकता को समझने के लिए आवश्यक है कि यात्रा मनोधर्मिता से की जाए। यहाँ उसका आभ्यन्तरवाद मनोविज्ञान का विषय बन जाता है। मन और शरीर को जिस प्रकार दर्शन के क्षेत्र में विशेष गम्भीरता से लिया जाता है। इसी प्रकार भाषा के विषय में भी यह प्रश्न उठता है कि मन शरीर को कैसे उद्वेलित करता है। शब्द उत्पन्न करने की चेष्टा मानसिक है, उसका उच्चारण शारीरिक अवयवों की सहायता से ही सम्भव हो पाता है। जन्म से ही एक भाषा लेकर सभी पैदा होते है पिल्ले और वत्स भी। यहाँ भाषा से अर्थ है ध्वनि या शब्द समूह। ध्वनि को ठोस माना जाए या वायवी काकु के संकोच और आघात से जो स्वर या ध्वनि बाहर आती है वही तो ऊर्जा की कणवाही तरंग ही, तब फिर वह कण भौतिकी का ही अंग हुआ ऐसी स्थिति में वह प्रकृति विज्ञान के अध्ययन का विषय हुई। पशु-पक्षी जगत से आगे मनुष्य की दुनिया में भाषा ही सामाजिकता, पूर्वोत्तर संबंधों आदि बल पर विकसित होती है। यही भाषा, वाचक की अन्त: धार्मिता के आधार पर कहीं राजनीतिक, कहीं दार्शनिक तो कहीं नितान्त वैयक्तिक-रूक्ष और संवेद्य दोनों हो जाती है। लेकिन इसके बाद जब हम भाषा के संज्ञानपरक पक्ष को उजागर करने की दिशा में सक्रिय होते हैं तो पाते है कि भाषा न्यूरॉलोजी के विद्युत तरंगीय प्रयोगों की तरह मस्तिष्क के अवयवों को भी प्रकासित करती है। एक्सप्लेनिंग लैंग्वेज यूज नामक अध्याय के अनुसार भाषा विज्ञानियों का मानना है, कि समाज में रहते हुए हम में से बहुत से एक-दूसरे को उसकी सिद्धान्तबद्धता के आधार पर या तो, दूसरे को अपने से मिलती-जुलती विचार धारा होने वाला, होने के कारण सरलता से समझ चुके होने का दावा करते हैं।

शुद्ध प्रकृतवाद और द्वन्द्ववाद का स्पष्टीकरण करते हुए चॉमस्की कहते है, कि माइण्ड शब्द से इलेक्ट्रिकल बना है। तात्पर्य यह है कि केमिकल, इलैक्ट्रिकल जैसे शब्द आकार और ध्वनि में है तो मेण्टल जैसे ही, मगर फिर भी केमिकल, इलेक्ट्रिक आदि शब्द अर्थ इकहरा ही देते है। जबकि दिमाग स्वयं में निहित वैचारिक, संवेद्य क्षमताओं के कारण जब मेण्टल रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ बहुआयामी हो जाता है।

यह शब्द तब कई अर्थ ध्वनित करने लगता है। अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए चॉमस्की ने उदाहरण दिए है, वे हिन्दी पाठकों में सम्भवत: सभी के लिए पूरी तरह बोधगम्य न होंगे। स्वयं लेखक का मानना है कि भाषा का चरित्रांकन हमारे भाषाई ज्ञान-कोश के आड़े आता है। गत पचास वर्षो की खोज के परिणामस्वरूप हम यह समझ पाएं है कि भाषा की उपज कुछ और उसका अवबोधन कुछ और है।

यही नहीं अपने-अपने सन्दर्भ में हर व्यक्ति एक ही वाक्य को सुनकर उसका अर्थ भी अपनी समझ की गहराई के अनुसार अलग-अलग लगा पाता है। लेकिन हम यहां निराकरण से उतनी ही दूर है, जितना रेने देकार्त ..... जिसने कहा था एक कलाकृति देखकर कोई अभिभावक यह क्यों कहता है कि यह कृति मुझे किसी कलाकार का स्मरण दिलाती है, वह तुलनात्मक शब्दावली क्यों बोलने लगता है, चुप क्यों नहीं रहता भाषा की समझ वंशनुगति है, जमाबद्ध है।

मनस्विदों और दार्शनिकों ने चॉमस्की की स्थापना का स्वागत किया था, हालाँकि यहाँ एक शंक से भी नहीं बचा जा सकता है कि एक बच्चा 'एनर्जी -एमसी स्क्रेट' जैसा सूत्र कैसे समझ लेगा जब तक कि न्यूटन की स्थापनाओं से भिन्न न हो। यही नहीं भाषाओं के साथ एक समस्या यह भी है कि वे मनमानी होती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी 'हैड फर्स्ट' भाषा है, जैसे 'मैं गिर गया' मै। 'मैं' पहले आता है, जबकि जपानी 'हेड लास्ट' भाषा है, जापानी भाषा में यही वाक्य 'गिर गया मैं कहा जाएगा। यही बजह है कि चॉमस्की का अल्पिकठवाद अभी पूर्ण तौर से स्थापित नहीं हो पाया। फिर भी अपेक्षा है कि वह ध्वनि और अर्थ के बीच की कड़ी अथवा 'योजक' का पता लगाएं।

चॉमस्की के अनुसार उनका अभ्यन्तरण 'आयी लेंग्वेज' का सिद्धान्त ध्वन्यात्मकता और उसके तार्किक स्वरूप पर बल देता है। उनका यह भी कथन है कि प्रकृत भाषाओं की आकारिकी और उनकी अनियमित क्रियाओं ''भाषा विशेष'' सीखने वाला एक विदेशी ठीक तरह समझ ही नहीं सकता फिर भी -एक्सप्लेनिंग लैंग्वेज' प्रकरण में वह अपनी पुरानी सिण्टैक्टिक (वाक्य-विन्यासी) स्थापना का सहारा लेता है और अभ्यान्तरिक भाषा के सूत्रों को (एपिस्टेमॉलजी) (ज्ञान मीमांसा तक ले जाता है। वे भाषा को सम्पूर्ण मानते है। चॉमस्की का मत है कि कोई भी वाक्य किस रूप में ग्रहण किया जाता है, यह ग्रहणकर्ता की मन:स्थिति, उसके सामाजिक सन्दर्भ -

यहां तक कि उसकी जातीय स्मृति पर निर्भर रहता है। गाँधी जी ने 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया था, आज की बदली परिस्थितियों में सम्भवत: इसका वही अर्थ न निकालें। लैंग्वेज एज ए नेचुरल आब्जेक्ट'' में चॉमस्की कहता है कि 'भाषा विज्ञान' प्रकृत विज्ञान है - सम्भवत: प्रथम विज्ञान, इसलिए कि अर्थ अन्तत: शब्द से ही नि:सृत होता है। शब्द को लेकर लम्बी बहस अपने यहां पहले हो चुकी है। नैयामिकों के अनुसार शब्द आकाश का गुण है अत: वह अनित्य है। लेकिन संख्यावादी कहते हैं कि भूतों के परस्पर आघात से शब्द की अभिव्यक्ति तो होती है मगर उसे अभिव्यक्ति की उत्पत्ति नहीं कहा जा सकता। शब्द के ग्रहण के लिए विभिन्न विद्वानों ने आठ साधन बताए हैं। व्याकरण, उपमान, कोश, निवृत्ति, व्यवहार, आप्तवाक्य, वाक्यशेष और सान्निध्य। इसी से शब्दविज्ञान जुड़ा है प्राचीन अर्थज्ञान जिसके उत्स को समझने की कोशिश में अयोद्धवाद का जन्म हुआ।

जहाँ तक शैली का प्रश्न है - भाषा विज्ञान, आलोचना एक व्यापक स्तर पर उसे ग्रहण करती है। शैली भाषा का अलंकरण नहीं है। यह बात ठीक है कि शैली, अभिव्यक्ति की एक प्रणाली है पर उसे यह कह कर कि वह साधन है, साध्य नहीं अथवा अर्थ के निकल जाने के बाद जो तत्व भाषा की सजावट के लिए शेष बचता है उस रूप में ग्रहण कर वस्तुत: हम शैली के मूल प्रयोजन से ही अलग हट जाते हैं। हम अलंकार को ही ले लें जो शैली का एक विशिष्ट अंग है। (ध्यान रहे स्वयं शैली नहीं) शुक्ल जी के अनुसार अलंकार चाहे अप्रस्तुत वस्तु-योजना के रूप में ही (जैसे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि में) चाहे वाक्य-वक्रता के रूप में (जैसे अप्रस्तुत प्रशंसा, परिसंख्या, व्याजस्तुति, विरोध आदि में) चाहे वर्ण विन्यास के रूप में (जैसे अनुप्रास में लग जाते हैं वे प्रस्तुत भाव या भावना के उत्कर्ष के साधन के लिए''। एक दूसरे के स्तर पर वे अपनी बात को और भी स्पष्ट करते हैं। वस्तुत: निर्देश अलंकार का नहीं, रस व्यवस्था का विषय है। अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अलंकार प्रस्तुत या वर्ण्य वस्तु नहीं, बल्कि वर्णन करने की भिन्न-भिन्न प्रणालियां हैं बात कहने के खास-खास तरीके हैं।

जब हम भाषा-शैली की चर्चा करते हैं तब यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हम भाषा की अभिव्यक्ति प्रणाली की ओर संकेत दे रहे हैं। जो शब्दों के माध्यम से क्या कहा जा रहा है। जो भाषा का संगठनात्मक स्तर पूर्ण रूप से गुंथा होता है। विम्सैर का कहना है कि भाषा-शैली का मुख्य क्षेत्र अर्थ ही है, शैली वस्तुत: अर्थ-विस्तार की सूक्ष्म मर्यादा का निर्माण करती है, वह टेक्सचर अथवा मुख्यार्थ के साथ एक गौण अर्थ का सृजन करती है। शैली का अध्ययन केवल अभिव्यक्ति के स्तर पर करना उचित नहीं है उसे अण्डरलेन की तरह प्रतिध्वनित द्वितीय अर्थ के रूप में कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कविता की शैली विद्या को ही ले लें। जहाँ अण्डरटोन का व्यापक प्रसार रहता है। आखिर कवि इस 'अण्डरटोन' की सृष्टि कैसे करता है?अथवा पाठक इसका पता कैसे पाता है ? निश्चय ही कविता में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप ठीक वैसा ही नहीं रहता जैसा भाषा के बोल-चाल सामान्य रूप में होता है। लेकिन कविता में भाषा के स्वरूप समझा कैसे जाए। हम यह मानते हैं कि कवि एक विशिष्ट भाषा शैली का प्रयोग करता है। तब इसकी 'विष्टिता' को किसी 'सामान्य' के अतिक्रम के रूप में नही समझा जा सकता है यहाँ 'विशिष्ट और सामान्य' सापेक्षिक प्रत्यय हैं और सामान्य का परिचय सहज-साध्य है। अत: विशिष्टता को सामान्य के सन्दर्भ में ही देखकर समझा जाना अपेक्षित है।

भाषा का सामान्य रूप बोलचाल की भाषा होती है। अत: कविता की भाषा-शैली की विशिष्टता को सामान्य बोच-चाल की भाषा के 'स्टक्चर' के अतिक्रम (डिविएशन) के रूप में ही देखना होगा। प्रश्न तो यह है कि कविता के बाह्य और आन्तरिक दोनों ही स्तर पर स्वीकार करते हैं। इस अतिक्रम को समझने की कोई भाषा वैज्ञानिक पद्धति भी है? कविता की विशिष्ट भाषा-शैली भाषा के सामान्य स्टक्चर में भली-भाँति बध नहीं पाती और वह एक अलग स्टक्चर का निर्माण करती है - तो उसे समझा कैसे जाए? अगर मान लें कि कविता की भाषा का अपना 'स्टक्चर' होता है जो सामान्य भाषा के व्याकरण की परिधि से बाहर है और यह मान लें कि व्याकरण का अतिक्रमण करने के लिए कवि को छूट है - तो वस्तुत: हर उत्तर फिर अपने लिए स्वयं प्रश्न बन जाता है। इस समस्या के समाधान करने की कोशिश चॉमस्की ने की उसने व्याकरणिकता के स्तर भेद की कल्पना को सामने रखा उदाहरण के लिए (ऊ) लड़का अंधेरे से डरता है । आ-अंधेरा लड़के से डरता है। पढ़ते ही स्पष्ट अनुभव होता है कि 1 और 2 का (अ) वाक्य, उसके (आ) की तुलना में अधिक व्याकरण सम्मत है।

डॉ. अमर सिंह
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं
सदस्य-सचिव, जम्मू

संसार में शायद ही कोई ऐसा विकसित साहित्य या भाषा हो, जो सरलता, मधुरता और अभिव्यक्ति की क्षमता में हिन्दी की बराबरी कर सके।

- फादर कामिल बुल्के

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारतीय समवेत औषध संस्थान
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)
नहर मार्ग, जम्मू तवी-180001

CSIR-IIIM

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
के तत्वावधान में
आयकर कार्यालय, जम्मू एवं सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू के
सौजन्य से
राजभाषा सम्मेलन/यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम 29-30 मार्च, 2012

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भारतीय समवेत औषध संस्थान जम्मू के तत्वावधान में आयकर कार्यालय, जम्मू एवं सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू सौजन्य से दिनांक 29-30 मार्च, 2012 को राजभाषा सम्मेलन/यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नराकास जम्मू के केन्द्रीय कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों तथा संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं राजभाषा से सबंद्ध पदाधिकारियों ने भाग लिया (1) राजभाषा के कार्यान्वयन में यूनिकोड की उपयोगिता (2) हिन्दी के कार्यान्वयन में यूनिकोड की समस्या एवं समाधान (3) राजभाषा कार्यान्वयन में भाषिक सम्प्रेषण एवं व्यावहारिक स्वरूप (4) राजभाषा नीति के परिप्रेक्ष्य में यूनिकोड की सार्थकता (5) संघ की राजभाषा और हमारा दायित्व (6) वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों में हिन्दी लेखन की भूमिका आदि विषयों पर आमंत्रित व्याख्याताओं ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 29 मार्च, 2012 को प्रातः 9.30 बजे आइ.आइ.आइ.एम., जम्मू के कान्फ्रेंस हॉल में कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. श्रीकृष्ण निर्मल, उपशिक्षा अधिकारी, नई दिल्ली द्वारा सरस्वती वंदना गायन से संस्थान के निदेशक डॉ. राम विश्वकर्मा ने दीप-प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् पुष्प-गुच्छ से जम्मू के आयकर आयुक्त श्री रवि सारंगल ने नराकास अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा का स्वागत किया। डॉ. अमर सिंह, वरि. हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू ने सभागार में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास जम्मू डॉ. राम विश्वकर्मा ने की। इस अवसर पर आयकर कार्यालय, जम्मू/श्रीनगर के आयुक्त श्री रवि सारंगल, सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू/श्रीनगर के आयुक्त श्री परमिन्दर सिंह सोडी तथा संस्थान के वरि. वैज्ञानिक डॉ. आर.के.रैणा भी उपस्थित थे।

जम्मू के आयकर आयुक्त, श्री रवि सारंगल ने सभागार में उपस्थित सज्जनों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यक्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू मंच के माध्यम से आयोजित किया जा रहा है इसके प्रेरणास्रोत संस्थान के निदेशक और नराकास के अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा जी को हार्दिक बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि उनके सहयोग से नगर जम्मू के सभी केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण इज़ाफा हुआ है। उनके दिशा-निर्देश महत्वपूर्ण है, चूंकि वे एक वैज्ञानिक होते हुए भी राजभाषा की प्रगति में उनके प्रयास उत्कृष्ट हैं। उन्होंन सभी प्रतियोगियों को प्रशिक्षण लेने और राजभाषा के कार्यो में योगदान करने के लिए आह्वान किया।

श्री परमिन्दर सिंह सोडी, आयुक्त सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, जम्मू/श्रीनगर ने अपने संबोधन में अध्यक्ष महोदय एवं उपस्थित सज्जनों का स्वागत करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण कम्प्यूटर से संबंधित है क्योंकि प्रत्येक केन्द्रीय कार्यालयों में कम्प्यूटर के

माध्यम से कार्य करने का वातावरण बना है और इस प्रशिक्षण के माध्यम से यूनिकोड की समस्या और उसके समाधान के लिए यह प्रशिक्षण उपयोगी है। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि जम्मू नराकास मंच के माध्यम से राजभाषा की उन्नति के लिए अच्छे कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। उन्होंने अध्यक्ष महोदय का आभार व्यक्त करते हुए सभी प्रतियोगियों को ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने से स्वयं उनकी कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होती है।

धन्यवाद प्रस्ताव संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आर.के.रैणा ने संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष नराकास जम्मू डॉ. राम विश्वकर्मा जी ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपना अमूल्य समय दिया और यह कार्यक्रम उन्हीं के मार्गदर्शन से सम्पन्न हुआ। मै उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। श्री रवि सारंगल आयकर आयुक्त, जम्मू ने इस कार्यक्रम में पधार कर तथा आर्थिक रूप से कार्यक्रम के आयोजन में अपना योगदान दिया हम उनके बहुत ही आभारी है श्री परमिन्दर सिंह सोड़ी, आयुक्त। इस प्रशिक्षण में संयुक्त रूप से आर्थिक सहयोग प्रदान किया और अपना उपयोगी समय दिया हम उनके विशेष आभारी है। उन्होंने ने प्रशिक्षण में उपस्थित वाह्य संकाय के रूप में आमंत्रित व्याख्यानकर्ताओं/प्रतिभागियों तथा इलैक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया के सभी संवाददाताओं का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमर सिंह, सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू जिन्होंने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में विशेष परिश्रम कर कार्यक्रम सफल बनाने में अपने दायित्वों का निर्वाह्न किया तथा हम अपने संस्थान के सभी सहयोगी बंधुओं का आभार व्यक्त करते है, जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह कार्यक्रम बेहतर ढंग से सम्पन्न हुआ।

कभी गर्मी कभी सर्दी ये तो कुदरत के नजारे हैं,
हम एस.एम.एस. केवल उन्हें करते हैं जो हमें जान से प्यारे हैं।

जमाने से कबके गुजर गये होते ,
ठोकर न लगी होती तो बच गये हाते,
बधे थे बस तेरी दोस्ती के धागे में,
बर्ना कबके बिखर गये होते।

न सच्चाई बड़ी है, ना खुदाई बड़ी है,
न भलाई बड़ी है, न ईमानदारी बड़ी है।
बड़ा वो है जिसके घर के बाहर मर्सडीज बेन खड़ी है।

मोहब्बत एक बार हो जाए तो अपनापन,
दो बार हो जाए तो भोलापन,
तीन बार हो जाए तो दीवानापन,
बार-बार हो तो कमीनापन ।

- अभिनव सिंह,
आर.आर.एल. स्कूल, जम्मू

प्रान्तीय ईर्षा द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं।

- सुभाष चन्द्र बोस

सत्यमेव जयते

CSIR-IIIM

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

के तत्वावधान में

पॉवर ग्रिड कारपोरेशन, क्षेत्र-।।, जम्मू एवं एनएचपीसी, क्षेत्र-।, जम्मू

सौजन्य से

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 30 मार्च, 2012 (शुक्रवार)

30 मार्च, 2012 को सायं 5.30 बजे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू के ऑडिटोरियम हॉल में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक एवं नराकास, अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा ने की। उपस्थिति श्रोताओं एवं राष्ट्रीय कवियों का स्वागत डॉ. अमर सिंह, वरि. हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव व संयोजक ने किया। जिसमें राष्ट्रीय स्तर के नौ कवियों को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष डॉ. राम विश्कर्मा ने माँ सरस्वती के स्वरूप पर माल्यार्पण कर परम्परागत दृष्टि से दीप- प्रज्ज्वलन कर कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय संत कवि डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी ने पुष्प-गुच्छ से कवि सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. विश्वकर्मा जी का स्वागत किया। श्री एस.के. बंसल, मुख्य प्रबंधक, पावर ग्रिड कारपोरेशन, जम्मू द्वारा अध्यक्ष महोदय को शॉल भेंट कर सम्मानित किया। तत्पश्चात् डॉ. राम ने कवि सम्मेलन के संचालन का कार्यभार राष्ट्रीय संत कवि डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी को सौपा। डॉ. निर्दोषी जी ने उपस्थित कवियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। अन्त में उपस्थित कवियों को संस्थान के निदेशक एवं सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा ने सभी को शॉल एवं स्मृति-चिन्ह भेंट किये। राष्ट्रीय संत कवि डॉ. निर्दोषी ने डॉ. विश्वकर्मा जी को स्मृति-चिन्ह भेंट किया।

संस्थान के निदेशक एवं कवि सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. राम विश्वकर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में उपस्थित राष्ट्रीय कवियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि ऐसे राष्ट्रीय स्तर के कवि सम्मेलन आप सबके लिए और हमारे लिए एक यादगार बनकर रहेंगे। उपस्थित कवियों की वाणी उनकी प्रस्तुति हमारे मन को तो प्रभावित किया ही है उनकी रचनाओं ने हमें एक दिशा दी। हम ध्यानमग्न होकर कवियों की रचनाओं को सुनते हैं और मनन करते हैं, विचारते है कि हमारे लिए करने योग्य उपदेशात्मक संदेश क्या है? क्योंकि हम वैज्ञानिक है और हमने कवियों के द्वारा प्रस्तुत उनकी सभी रसों से युक्त काव्य उक्तियों का रसास्वादन किया। उन्होंने आह्वान करते हुए मंच से घोषणा की कि यह कार्यक्रम अवसर आने पर पुनः आयोजित किया जायेगा।

अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव सदस्य-सचिव डॉ. अमर सिंह, संयोजक ने अध्यक्ष महोदय का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कवि सम्मेलन के मार्गदर्शन के लिए डॉ. राम ने अपना अमूल्य समय दिया हम उनका हृदय से आभार व्यक्त करते है, साथ ही सभी राष्ट्र कवियों एवं श्रोतागणों का आभार सहित धन्यवाद किया।

कन्या-भ्रूण हत्या

प्रसंग:-

कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है। अत: उक्त शीर्षक कविता में एक ऐसी महिला की कल्पना की गयी है जिसके पास एक पुत्र है तथा एक कन्या भ्रूण उसके गर्भ में पल रहा है। महिला कन्या भ्रूण की स्वप्न में हत्या करना चाहती है। इस प्रसंग में महिला तथा कन्या भ्रूण के वार्तालाप द्वारा समाज को इस जघन्य पापकर्म को रोकने के लिए दिशा-निर्देश दिया गया है। (एक दृष्टि)

भारतमाता की आँखों में लहराता है पानी।
क्योंकि भ्रूण हत्या की प्रतिदिन सुनती दु:खद कहानी।।
जेवन की प्रत्येक परीक्षा में जब नारी आगे ।
फिर क्यों कन्या भ्रूण नष्ट करते हैं नीच अभागे ।।
विसम हो रहा आज संतुलन देखो नर-नारी का।
नित बढ़ता अनुपात पुरुष का घटता है नारी का।।
इस अनुपात समानुपात के प्रश्नों का हल क्या है ?
''हल को ही तुम मिटा रहे हो जिससे चहल-पहल है''।
गर्भपात के लिए स्वप्न में एक तैयार हुई माँ।
देखो! प्रभु ने दिखलाया कैसा तत्काल करिश्मा।।
साहस करते हुए भ्रूण ने पूछ लिया यों माँ से।
कौन दोष के कारण जननी करती दूर जहाँ से।।
इसी तरह मेरी नानी यदि हत्यारी हो जाती।
तो कैसे तू मेरी हत्या का विचार कर पाती।।
फिर भी चिंता नहीं स्वयं की चिंता है भाई की।
प्यारे चाचा की चाची की ताऊ और ताई की ।।
रक्षाबंधन पर रोएगा मेरा प्यारा भाई।
कौन सजाएगा राखी से उसकी नरम कलाई?
दीवाली के बाद दौज पर टीका कौन करेगा?
कौन शरारतपूर्ण मिठाई हाथों से छीनेगा ?
जिस घर में कन्या के पीले हाथ नहीं होते हैं ।
उस घर के लोगों के जीवन सफल नहीं होते हैं।।
सुताभ्रूण के इन शब्दों को सुनकर माता बोली ।
हटा मोतियाबिन्दु आत्मजे तूने आँखें खोलीं ।।
''यथासमय प्यारी बेटी अब जन्म धरा पर लेगी।
और हमारे घर आँगन को खुशियों से भर देगी ।।
कभी हँसेगी और कभी मचलेगी मेरी राजदुलारी ।
सूना घर आबाद करेगी मार-मार किलकारी ।।
पोषण, संरक्षण, शिक्षण सें बेटी सफल बनेगी ।
कुल का और राष्ट्र का जग में रोशन नाम करेगी।।
इसीलिए यह नम्रनिवेदन मेरा बहनों मानो ।
खुद अपनी पहचान बनाकर अपने को पहचाने ।।
नारी का सम्मान जब तक नारी नहीं करेगी ।
फिर इसकी कामना पुरुष से कैसे स्वयं करेगी ।
भाई बहनों मिलकर नारी का अनुपात बढ़ाओ ।
खुद समझो समझाओ सबको 'कन्याभ्रूण' बचाओ''।।

श्री कृष्ण (निर्मल)
आखिल भारतीय कवि, दिल्ली

ये बज्म है उर्दू, मै हिन्दी का ज्याया हूँ।
जुबाने मुल्क की वहिनें, ये पैगाम लाया हूँ।
मुझे दुखनी मोहब्बत से सुनो, उर्दू जवां वालो,
मै अपनी माँ का बेटा हुँ।
घर मौसी के आया हूँ।

- कुमार विश्वास

विश्व-शान्ति

यह नाट इस लेखक द्वारा लिखित और निर्देशित लगभग डेढ़ दर्जन उन नाटकों में से एक है, जिनका प्रस्तुतीकरण लखनऊ में विभिन्न नाट्य मंचों पर 30-35 वर्ष पूर्व किया जा चुका है। इस नाटक को 16 बार मंच पर प्रस्तुत किया गया है।

(स्टेज पर पर्दा खुलने से पहले नेपथ्य से कमेन्ट्री का स्वर उभरता है)

आज जहाँ विश्व में करोड़ों लोग दिन भर में दो बार भी भेजन करने में असमर्थ हैं, वहीं हथियारों के निर्माण पर केवल एक मिनट में एक करोड़ रूपये से भी अधिक खर्च किये जा रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि यदि संसार के हथियार निर्माण के सभी कारखाने केवल एक मिनट के लिये भी बन्द कर दिये जाये तो उससे बचने वाले धन से 5 हजार टन गेहूँ या 4 हजार टन दूध खरीदा जा सकता है। एक मशीनगन बनाने में जितना धन खर्च होता है, उतने में एक ट्रेक्टर बनाया जा सकता है। एक लड़ाकू पनडुब्बी और एक बम वर्षक विमान बनाने में जितना धन खर्च किया जा रहा है उससे कई लाख भूखों को भोजन और बीमारों को जीवनरक्षक दवाइयाँ दी जा सकती हैं या रचनात्मक उद्योग धन्धे खोलकर बेरोजगारी कम की जा सकती है।

आज कोई भी मनुष्य अपने को सुरक्षित नहीं समझ रहा है। भीषण युद्ध की आशंका से सम्पूर्ण मानव जाति भयभीत है। कुछ देशों के आपसी मतभेद की एक छोटी सी चिंगारी से सारा संसार पल भर में श्मशान के रूप में परिवर्तित हो सकता है। दूसरों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की लालसा, या अन्य किसी कारण से यदि तीसरा विश्व युद्ध छिड़ गया तो बाकी बचे हुए देश चाहें या न चाहें, उन्हें इस युद्ध की चपेट में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में आना ही पड़ेगा। परिणाम क्या होगा - इसकी एक झलक दिखाता है यह नाटक -

(पर्दा खुलता है। हर देश के प्रतिनिधि विशेष मिलेट्री यूनीफार्म में एक-एक कर प्रवेश करते हैं)

देश 'अ' - (मद, अहंकार और क्रोध में ठहाका लगाकर हँसता है) ह,ह,ह,ह । मैं शक्तिशाली राष्ट्र 'अ' हूँ, 'अ' । मेरे पास इतने शक्तिशाली हथियार हैं कि यदि मैं चाहूँ तो क्षण भर में सारी दुनियाँ को तबाह कर दूँ। मेरे हाइड्रोजन, न्यूक्लीयर और न्यूट्रान बमों एवं विशाल जहाजी बेड़ों का मुकाकला कौन कर सकता है?ह,ह,ह,ह ।

देश 'ब' - ह,ह,ह,ह । मैं देश 'ब' हूँ, 'ब' । इस समय किसमें सामर्थ्य है, जो मेरा मुकाबला कर सके ? और यदि किसी ने हिम्मत भी की, तो मैं उसे मसल कर रख दूँगा। अभी मेरे प्रक्षेपास्त्रों की मार किसी ने देखी ही कहाँ है ?ह,ह,ह ।

देश 'स' - ह,ह,ह,ह । मैं देश 'स' हूँ, 'ब' । मेरी सेना के साहस और पराक्रम से सारी दुनियाँ थर्राती है। मेरी असीम शक्ति के सामने विश्व की कौन सी सेना है, जो पल भर के लिये भी टिक सके ?ह,ह,ह,ह।

देश 'द' - ह,ह,ह,ह । देश 'अ', 'ब', 'स' पता नहीं अपने को क्या समझते हैं। इन्हें यह नहीं मालूम कि हम कौन हैं। हम और सब की तरह गरजते नहीं, बरसते हैं। तीसरे विश्व युद्ध में दिखा देंगे कि हम क्या हैं। ह,ह,ह,ह ।

देश 'य' - ह,ह,ह,ह । मैं देश 'य' हूँ, 'य' । मैं सारे संसार का मुखिया हूँ, मुखिया। और सबके पास तो केवल हथियार ही हैं, लेकिन मेरे पास घातक हथियार और विशाल जनसंख्या दोनों हैं। दुनियाँ की सबसे बड़ी फोज यदि कहीं है, तो वह मेरे पास। मेरी यह अपार सेना दुनियाँ को कुचल कर रख देगी। ह,ह,ह,ह ।

(इस तरह एक-एक करके आकर पाँचों देश एक पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। ये सभी देश अपने-अपने चेहरों के ऊपर एक-एक बड़ा ग्लोब लगाए हुए हैं)

देश 'ब' - ऐ देश 'अ'। मुझे मालूम हुआ है कि तुम कुछ देशों को हथियारों की सप्लाई कर रहे हो। लेकिन याद रखो, यदि तुमने फिर कभी ऐसी हरकत की, तो मैं तुम्हारा सर्वनाश कर दूँगा। तुम्हें यह नहीं मालूम कि मैं अपनी राष्ट्रीय आय का 50 प्रतिशत से भी अधिक धन हथियारों के निर्माण और लड़ाई पर खर्च कर रहा हूँ।

देश 'अ' - तुम्हारे पास है ही क्या? जो तुम हथियारों और युद्ध पर खर्च करोगे। मेरी अपार सम्पत्ति का मुकाबला तुम क्या कर सकते हो। मैं भी अपनी सारी आय का अधिकांश भाग बड़े-बड़े हथियार बनाने और लड़ाई पर खर्च कर रहा हूँ। तुम तो क्या, दुनियाँ का कोई भी राष्ट्र मेरा मुकाबला नहीं कर सकता है।

देश 'द' - और मेरी सेना व शक्ति के बारे में तुम सबने समझ क्या रखा है?मैं तुम सबको मिट्टी मे मिला दूँगा ।

देश 'स' - और मेरी शक्ति का अन्दाजा तुम सबको नहीं है। मैं तुम सबका नामोनिशान तक मिटा दूँगा।

देश 'य' - अरे! तुम सब व्यर्थ में क्यों गाल बजा रहे हो?इधर देखो, इधर, मेरी तरफ। मैं तुम सबका नेता हूँ, नेता। अगर तुममें से किसी ने मुझे अपना नेता नहीं माना, तो मैं सबको जलाकर भस्म कर दूँगा।

देश 'अ' - क्या कहा? तुम जलाकर भस्म कर दोगे, और वह भी मुझे। अगर देखना ही चाहते हो तो मै अभी दिखाता हूँ कि मै क्या हूँ? -

(देश 'अ' - क्रोध में ताली बजाता है। मिलेट्री यूनीफार्म में उसके चार सेनापति एक बहुत ही बड़ा बम लाकर उसके सामने रख देते है और स्वयं अपने उस देश 'अ' के पीछे जा कर तन कर खड़े हो जाते है)

देश 'ब' - तो फिर मै भी दिखाता हूँ कि मेरे पास क्या है?

(वह ताली बजाता है। मिलेट्री यूनीफार्म में उसके भी चार सेनापति एक बहुत ही बड़ा सा बम लाकर उसके सामने रख देते है और सभी अपने उस देश 'ब' के पीछे जा कर खड़े हो जाते है)

देश 'स' - तो क्या तुम सब सोचते हो कि मै इतने दिनों तक चुपचाप बैठा रहा। मै भी अभी दिखाता हूँ अपनी शक्ति ।

(वह भी ताली बजाता है और एक विचित्र सा बम आ जाता है)

देश 'द' - तो फिर जब सब कोई अपनी-अपनी शक्ति दिखा रहे हो, तो जरा मेरा भी चमत्कार देखो।

(वह भी ताली बजाकर एक अनोखा बम मँगवाता है)

देश 'य' - तो क्या इन्हीं खिलौनों से तुम सब मुझे डराना चाह रहे हो, तो जरा मेरा भी चमत्कार देखो ।

(वह भी ताली बजाकर एक अनोखा बम मँगवाता है)

देश 'य' - तो क्या इन्हीं खिलौनों से तुम सब मुझे डराना चाह रहे थे। मै कहता नहीं, कर के दिखाता हूँ। अभी दिखाता हूँ कि मुझे नेता न मानने वालों के लिये मैंने क्या-क्या बना रखा है?

(वह भी ताली बजाकर बड़ा सा राकेट मँगवाता है)

(सभी राष्ट्र अपने-अपने सेनापतियों को संकेत देते है। कई बमों, राकेटों और मिसाइलों का विस्फोट होता है। भयंकर विस्फोटों और घने धुएं के बीच वे सभी देश, उनके सेनापति और कुछ लोग चीखते पुकारते हुए इधर-उधर भागते है। थोड़ी देर बाद शोर, चीख-पुकार और धुआं कुछ कम होता है। कराहते हुए घायल लोग जमीन पर तड़पते रहते है और अंग-भंग शवों के ऊपर गिरते पड़ते लोग दिल को दहला देने वाला विलाप करते है। बड़ा ही करूण दृश्य है। कुछ समय बाद वह 'शान्ति संगठन' उस स्टेज का एक चक्कर लगाता है। अत्यधिक घमण्ड में चूर इन देशों तथा साथ ही साथ अन्य देशों के लोगों की इस तरह की दुर्दशा और पूर्ण सर्वनाश को देखकर वह बहुत ही दुःखी होकर कहता है)

शान्ति संगठन- देख लिया न आप सबने अपनी-अपनी शक्ति। मै कब से कह रहा हँ कि इतने विनाशकारी हथियार मत बनाओ। युद्ध मत करो। यह सबका विनाश कर देगा। लेकिन मेरी बात सुनने की आप सबको जरूरत ही क्या थी। आप सब को तो बस एक ही धुन थी कि हम सबके नेता है, नेता। क्या विश्व के नेता केवल उसके विनाश के लिये ही बनना चाह रहे थे ? यदि विश्व संहार के लिये ही आप इनके नेता बनना चाहे रहे थे, तो फिर जाओ और इन मुर्दा लाशों और घायलों से चिल्ला-चिल्ला कर कहो कि मैंने तुम सबका वध किया है और अपंग बनाया है, इसलिये मै तुम्हारा नेता हूँ।

उफ, जब आप किसी को जीवन दे नहीं सकते, तो फिर आपको उसका जीवन लेने का क्या अधिकार है? जरा देखो तो सही, ये सभी लूले-लँगड़े और अंधे होकर घुट-घुटकर मर रहे है। इनके माता-पिता, भाई-बहन, यहाँ तब कि एक बूँद पानी देने वाला भी कोई नहीं रह गया है। कहाँ जाएं यह लोग, और क्या करें। अब तो इनका सब कुछ आप लोगों के कारण उजड़ चुका है। मानव विनाश का यह खेल अब बन्द करो। हमें नहीं चाहिए आपकी यह जानलेवा शक्ति। अगर थोड़ी सी भी आप सबके अन्दर मानवता है, तो फिर इन घायलों और अपाहिजों पर तरस खाओ और देखो, इनकी कराहें क्या कह रही है-

(घायल कराहते हुए स्टेज पर आगे बढ़ते है और पर्दे के पीछे से एक दर्द भरा गीत उभरता है)

(शोक गीत के बाद)

शान्ति संगठन-भाइयों, अभी समय है। यदि आप अपनी और सारी मानव जाति का कल्याण चाहते हैं, तो आपस के बैर छोड़कर एक हो जाइए। आज हमें विश्व युद्ध की नहीं, विश्व शान्ति की आवश्यकता है, विश्व शान्ति की। यह सारा संसार एक परिवार है। सभी एक ही परमात्मा की संतान हैं। इसलिये अपनों का ही वध करना छोड़कर शान्ति के पथ पर आगे बढ़ो ।

(शान्ति की प्रतीक बालाएं शान्ति नृत्य करती है। पर्दा गिरता है।)

डॉ. राजबहादर सिंह
उप निदेशक
सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क (लखनऊ)

आपके पत्र

कवि सम्मेलन की स्मारिका के लिए हार्दिक बधाई

आदरणीय डॉ. अमर सिंह जी
सम्पादक-स्मारिका
सादर हृदयाभिवादन

महोदय,

आपके संस्थान में आयोजित कवि सम्मेलन की स्मारिका प्राप्त हुई। नराकास के अध्यक्ष श्रद्धास्पद श्री राम विश्वकर्मा जी को इसका भरपूर श्रेय देते हुए मै तीक्ष्ण प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा हूँ-जिनके कि सुधी संरक्षण में आपको यह स्मरणीय कार्य करने का सुयोग मिला। नि:संदेह साहित्य जगत के लिए यह प्रयास और यह प्रयोग अनुकरणीय है।

स्मारिका में कवि-सम्मेलन से सम्बन्धित सभी बिन्दुओं को आपने भलीभाँति संजोया है। कवि-सम्मेलन में आमंत्रित सभी कवियों के गद्यांश और पद्यांश को सऔदार्य स्थान दिया है। इससे भविष्य के पटल पर निश्चित रूप से ही आने वाले काव्यकारों को इस दिशा में प्रेरणा मिलेगी और एक स्वस्थ परम्परा का निर्वहन होगा-ऐसा मेरा मन: विश्वास है।

आपकी प्रकाश्य 'ज्ञानवार्ता' पत्रिका का अग्रिम अंक भी हर पाठक की जिज्ञासा को तरल तृप्ति दे, यही मेरी आंतरिक शुभकामना है।

चिर शुभेच्छु-
डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी (उ. प्र.)

प्रिय डॉ. राम विश्वकर्मा,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू द्वारा आयोजित यूनिकोड प्रशिक्षण एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर विमोचित स्मारिका की एक प्रति भेजने के लिए धन्यवाद। आपके स्मारिका के विषय अधिक रूचिपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक हैं। आशा है कि आगे भी यही प्रयास जारी रहेगा।

सादर,

(नागेश आर.अय्यर)
निदेशक
सी.एस.आई.आर.-संरचनात्मक
अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र, चेन्नै

आपके द्वारा प्रेषित नराकास, जम्मू द्वारा 29-30 मार्च, 2012 को आयोजित यूनिकोड प्रशिक्षण एवं अखिल भारतीय स्तर पर कवि सम्मेलन के अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया, जिसकी एक प्रति प्राप्त हुई। स्मारिका भेजने के लिए धन्यवाद! संस्थान में कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिन्दी एवं सरकारी कामकाज के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु यह स्वागत योग्य प्रयास है। स्मारिका में रोचक विषयों का संकलन अवश्य ही आपके अपेक्षित दिशा में गति लायेगी।

आशा है कि, आप भविष्य में भी इस दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे तथा सम्बन्धित गतिविधियों से हमें भी अवगत कराते रहेंगे ।

सधन्यवाद!

एन.सत्यनारायण
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
सी.एस.आई.आर.-
केन्द्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी
अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर

आपके द्वारा प्रेषित स्मारिका का अंक प्राप्त हुआ। यह प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू ने यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का सफल आयोजन किया। स्मारिकों में राजभाषा एवं यूनिकोड तथा अन्य विषयों पर विद्वानों के लेख एवं कविताएं बहुत ही रोचक एवं विचारोत्तेजक है। अध्यात्म, समाज, साहित्य, देश तथा राजभाषा सहित अन्य विषयों को भी स्मारिका में स्थान मिलने से यह बहुत उपयोगी है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा के उन्नयन हेतु किए जा रहे प्रयासों की दिशा में इस स्मारिका का प्रकाशन एक प्रशंसनीय कदम है। इससे सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रूचि उत्पन्न होगी और वे अधिक उत्साह से हिन्दी कार्यों में अपना योगदान देंगे।

इतने सुन्दर प्रकाशन और संपादन के लिए मै आपको तथा इससे जुड़े सभी कर्मियों को बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

उमेश गुप्ता
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका स्मारिका 29-30 मार्च, 2012 प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी जानकारयाँ अमूल्य है। पत्रिका में यूनिकोड प्रशिक्षण लेख पढ़ा जिसको पढ़कर मुझे यूनिकोड क्या है और पीसी पर कैसे सक्रिय किया जाए व हिन्दी समर्थित की-बोर्ड का इंसटालेशन तथा हिन्दी समर्थित की-बोर्ड का प्रयोग कैसे करें इस बारे में पूर्ण जानकारी दी गयी है। यह लेख बहुत उपयोगी है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही उत्कृष्ट कोटि की है।

आशा है कि भविष्य में आप अपने संस्थान की राजभाषा पत्रिका एवं राजभाषा संबंधी क्रियाकलापों की जानकारी देते रहेंगे तथा इसी प्रकार संपर्क बनाए रखेंगे ।

पत्रिका के सभी लेखकगणों को साधुवाद।

जयेन्द्र कुमार जौहरी
वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

आपके संस्थान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू द्वारा 29-30 मार्च, 2012 को आयोजित यूनिकोड प्रशिक्षण एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित "स्मारिका" की प्राप्त हुई। पत्रिका का कलेवर उच्चकोटि का है तथा इसकी पाठ्य-सामग्री आमलोगों के लिए सहज है। प्रस्तुत पत्रिका में राजभाषा के कार्यान्वयन में यूनिकोड की महत्वपूर्ण उपयोगिता का समावेश है, जो जनसंपर्क के लिए अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरक है। पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को मै हार्दिक धन्यवाद सम्प्रेषित करता हूँ।

हम दिसम्बर, 2012 में प्रकाशित होने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की गृह पत्रिका "ज्ञानवार्ता" अंक तीन के सफल प्रकाशन की मंगल कामना है।

आशा है कि इसी तरह राजभाषा हिन्दी को आमजन तक पहुँचाने मे आपका संस्थान सफलता के नये क्षितिज को छूयेगा।

पत्रिका भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

(डॉ. पुरुषोत्तम कुमार)
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
एवं सदस्य-सचिव, नराकास
सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर

जांच बिन्दु के संबंध में जानकारी

जारी करना

कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में आवश्यक जांच बिन्दु स्थापित किए जाते है, जिनका कि प्रशासन/तकनीकी अनुभाग/प्रभागों से संबंधित अधिकारी एवं बनी समितियां इन्हें कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें। जो निम्नलिखित है:-

क्रमांक	जांच बिन्दु	अनुपालन का उत्तरदायित्व
1.	निम्नलिखित कागजात द्विभाषी किए जाने चाहिए: संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं, निविदा प्रारूप तथा संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात।	हस्ताक्षरकर्त्ता
2.	मैनुअल, कोड और अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य हिंदी और अंग्रेजी में मुद्रित कराये जाएं। प्रयोग किए जाएं।	निर्धारक / प्रयोगकर्त्ता
3.	फार्म और रजिस्टरों/रोस्टरों के शीर्ष हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में मुद्रित कराए जाएं/प्रयोग किए जाएं।	निर्धारक / प्रयोगकर्त्ता
4.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर निरपवाद रूप से हिन्दी में दिए जाएं ।	हस्ताक्षरकर्त्ता / प्राप्तकर्त्ता
5.	समस्त नाम पट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष, निमंत्रण पत्र, बैनर, आगंतुक कार्ड, लिफाफों एवं उत्पादों पर विवरण हिन्दी और अंग्रेजी में छपाए जाएं। पैकिंग पर्ची एवं दर सूची आदि द्विभाषी हों।	संबंधित अनुभाग/प्रभाग/एकक/ जो छपाने हेतु आदेश करते हैं
6.	सभी राष्ट्रीय विज्ञापन हिन्दी और अंग्रेजी में साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में उसी समय प्रकाशन हेतु संबंधित समाचार पत्रों में जारी किए जाएं ।	संबंधित अनुभाग/प्रभाग/एकक/ आदेशकर्त्ता/अधीनस्थ संस्थान
7.	यथासंभव सभी करार/पैम्पलेट/बुकलेट/प्रकाशन/पत्रिका/समाचार पत्र आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएं ।	संबंधित अनुभाग/प्रभाग/एकक/ क्षेत्रीय एवं अधीनस्थ कार्यालय
8.	हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारी / कर्मचारी अधिक से अधिक टिप्पण हिन्दी में करें ।	टिप्पण करने वाले अधिकारी / कर्मचारी
9.	चूंकि संस्थान राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत पहले से ही अधिसूचित है तो हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने हेतु व्यक्तिशः आदेश जारी किए	राजभाषा एकक, आदेश द्वारा संबंधित कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष के हस्ताक्षर से जारी

	गये है। वे अपना मूलकार्य हिन्दी में ही करें।	करना
10.	''क'' एवं ''ख'' क्षेत्रों को भेजे जाने वाले पत्रो के लिफाफों पर पते देवनागरी में ही लिखे जाएं ।	संबंधित अनुभाग/प्रभाग/एकक/ अधीनस्थ संस्थान तथा मुख्यत: प्रेषण अनुभाग के लिए
11.	सेवा पंजियों/निजी फाइलों में यथा संभव प्रविष्टियां हिन्दी में की जाएं ।	प्रविष्टिकर्त्ता एवं जांचकर्त्ता अधिकारी
12.	राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार जो पत्र, परिपत्र आदि हिन्दी में या हिन्दी और अंग्रेजी में जारी होने चाहिएं या जो प्रलेख हिन्दी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में तैयार किए गए हों, ये उसी रूप में जारी होते है, यह देखने की जिम्मदारी पत्र या प्रलेख पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। अत: हस्ताक्षर से पूर्व ऐसे अधिकारी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि ऐसे पत्र/परिपत्र/प्रलेख आदि हिन्दी में या द्विभाषी रूप में जारी किए जा रहे है। यदि नहीं तो अग्रसारित अधिकारी समीक्षा कर कार्रवाई करवाएं।	हस्ताक्षरकर्त्ता/अग्रसारित अधिकारी
13.	खरीद : पुस्तकों की, द्विभाषी इलेक्ट्रॉनिक उपकणों की, कम्प्यूटरों की यथादेश हो ।	पुस्तकालय एवं प्रलेख प्रभाग/ भंडार एवं क्रय अनुभाग/मांगकर्त्ता
14.	आयोजन : राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का, कार्यशालाओं का, हिन्दी दिवस / सप्ताह / पखवाड़े/माह का, राजभाषा सम्मेलन आदि ।	राजभाषा विभाग

संबंधित कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष
के हस्ताक्षर से जारी करना

प्रति:- .....

1.

2.

3.

संलग्नक ''क''

संबंधित कार्यालय का नाम .....

संख्या: ..... दिनांक: .....

कार्यालय आदेश

संबंधित कार्यालय_____ के 80 से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त होने कारण (संस्थान) को राजभाषा नियमावली 1976 के नियम 10(4) के अन्तर्गत पहले से ही अधिसूचित किया जा चुका है। चूंकि डॉ./श्री/सुश्री/श्रीमती_____को हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, अत: उन्हें उक्त नियमावली के नियम 8(4) के अनुसार अपना सरकारी कार्य हिन्दी में करने के लिए तत्काल प्रभाव से विनिर्दिष्ट किया जाता है, साथ ही आदेश दिया जाता है कि वे निम्नांकित कार्य केवल हिन्दी मे करें:-

1. ''क'' तथा ''ख'' क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों मे स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर-सरकारी व्यक्तियों को भेजे जाने वाले सभी पत्रादि (''ग'' क्षेत्र स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को 55 प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में)
2. हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों आदि के उत्तर
3. किसी कर्मचारी द्वारा हिन्दी में दिए गए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर
4. संबंधित पत्रावलियों पर टिप्पणियां ।

उल्लेखनीय है कि उक्त के अपालन एवं अवहेलना (Non-Compliance) को संसदीय राजभाषा समिति अत्यन्त गंभीरतापूर्वक लेती है।

कार्यालय अध्यक्ष के हस्ताक्षर

प्रति:-

सं0 11/12013/01/2011-रा0भा0(नीति/के0अनु0ब्यूरो)

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

*****

एनडीसीसी-।। भवन, जयसिंह रोड,

नई दिल्ली, दिनांक 30 अक्तूबर, 2012

कार्यालय ज्ञापन

विषय:- सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने तथा अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन राशि में वृद्धि ।

राजभाषा विभाग के दिनांक 16 फरवरी, 1988 के कार्यालय ज्ञापन सं0 ।।/12013/3/87- रा0भा0(क-2) के तहत सरकारी कामकाज में मूल हिंदी में आलेखन/टिप्पण के लिए पहले से चलाई जा रही प्रोत्साहन योजना पर वित मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति के आधार पर उक्त कार्यालय ज्ञापन में दर्शाई गयी नगद पुरस्कार राशि को राजभाषा विभाग के दिनांक 16 सितम्बर, 1998 के कार्यालय ज्ञापन सं0 11/12013/18/93-रा0भा0(नी02) के तहत पहले के मुकाबले दोगुना कर दिया गया था।

2. उपरोक्त योजना के अंतर्गत दी जाने वाली पुरस्कार राशि को बढ़ाने का प्रस्ताव सरकार के पुन: विचाराधीन था। वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति के आधार पर पुरस्कार राशि को पुन: दोगुना कर दिया है। बढ़ाई गई पुरस्कार राशि निम्न प्रकार है:-

(क) केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 2000/-
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 1200/-
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 600/-

(ख) केन्द्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से :

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 1600/-
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 800/-
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार)	:	प्रत्येक रू0 600/-

उक्त योजना के बारे में दिनांक 16 फरवरी, 1988 के कार्यालय ज्ञापन के तहत बनाए गए सभी नियम एवं शर्तें पूर्ववत रहेंगी । पुरस्कार की बढ़ी हुई राशि तत्काल प्रभाव से लागू मानी जाएगी।

3. ठीक इसी प्रकार इस विभाग के दिनांक 6 मार्च, 1989 के कार्यालय ज्ञापन सं0 11/12013/1/89-रा0भा0(क-2) के तहत अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत मार्गदर्शी सिद्धांत जारी किए गए थे। उक्त मार्गदर्शी सिद्धांतों में पुरस्कार राशि दिनांक 16 सितम्बर, 1998 के कार्यालय ज्ञापन सं0 11/12013/18/93-रा0भा0(नी02) में दिए गए निर्देशों द्वारा 1000/-रू0 कर दी गई थी। इस योजना में दी जाने वाली राशि अब 2000/-रू0 कर दी गई है जोकि तत्काल प्रभाव से लागू मानी जाएगी। उक्त मार्गदर्शी सिद्धांत में वर्णित सभी शर्तें पूर्ववत रहेंगी ।

4. यह कार्यालय ज्ञापन वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति से उनके दिनांक 09-11-2011 के यू0ओ0 सं0 1(18)/E.Coord./2011 के अनुसार जारी किया जा रहा है ।

(हरिन्द्र कुमार)

निदेशक (तकनीकी/नीति)

प्रति :-

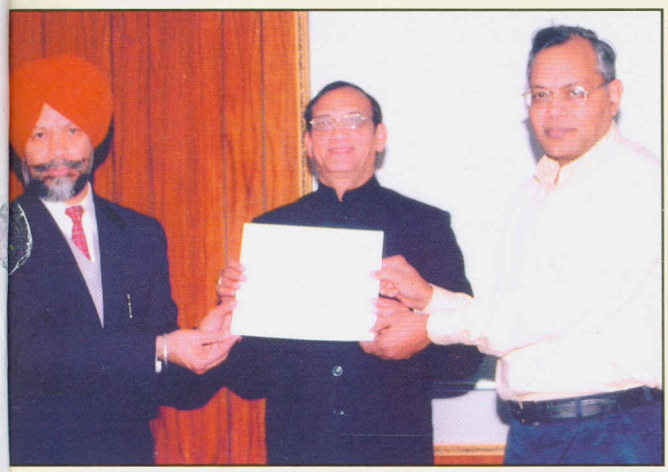

2010-2011 के लिए राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए अध्यक्ष, काकास, डॉ. राम विश्वकर्मा एवं आयुक्त, श्री परमिन्दर सिंह सोडी से ण-पत्र प्राप्त करते हुए डॉ. अमर सिंह।

नराकास, जम्मू की छमाही बैठक में यूनिकोड प्रशिक्षण एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन के करते हुए संस्थान के वरि. वैज्ञानिक डॉ. एस.सी.तनेजा एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति।

ाकास, जम्मू की छमाही बैठक में ज्ञानवार्ता की द्वितीय अंक का विमोचन रते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास डॉ. राम विश्वकर्मा एवं न्य कार्यालय अध्यक्ष।

नराकास, जम्मू की छमाही बैठक में आयकर आयुक्त, जम्मू/श्रीनगर, श्री ए. के.तथई से स्मृति-चिन्ह प्राप्त करती हुई श्रीमती रजनी कुमारी।

राकास, जम्मू की छमाही बैठक में यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम के अवसर र आयकर आयुक्त, जम्मू/श्रीनगर, श्री ए.के.तथई को स्मृति-चिन्ह प्रदान करते हुए वरि. वैज्ञानिक डॉ. एस.सी.तनेजा।

हिन्दी सप्ताह, 2012 के दौरान प्रतियोगिता में भाग लेते हुए संस्थान के स्टॉफ सदस्य ।

ISSN 2320 - 2998

भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू